

आर.एन.आई. नं. 7387/63
मुद्रण तिथि : 15-16 अगस्त 2022
डाक प्रेषण तिथि : 15-17 अगस्त 2022
ISSN : 2456-611X



वर्ष : 60 अंक : 09
मूल्य : 10/- पृष्ठ संख्या : 68
डाक पंजीयन संख्या BIKANER/022/2021-23
Office Posted At R.M.S., Bikaner

राम चमकते भानु समाना

श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन संघ का मुखपत्र

श्रमणापासक

धार्मिक पाक्षिक



Nation First - We Support

परम पूज्य आचार्य प्रवर
1008 श्री रामलालजी म.सा.

बिन्दु
से सिन्धु
तक

- बुद्धिमान अपनी गलतियों को देखता है, मूर्ख दूसरों की।
- पैसों से परमात्मा नहीं मिलते, वे तप-त्याग से मिल पाएंगे।
- बुद्धिमान शत्रु को भी सम्मान देता है, मूर्ख मित्र को भी मान नहीं दे पाता।
- किसी को तिरस्कृत नहीं करना मानवता है, दूसरे को सम्मानित करना देवत्व।
- सफलता अपने पैरों पर चलने से मिलती है, न कि अन्य के भरोसे से।
- सफलता का श्रेय जो दूसरों को देता है, वह विफल नहीं होता।
- निर्णायक क्षण ही तुम्हारी सफलता या विफलता का इतिहास लिखेगा।
- कार्य कैसा है यह मत देखो, यह देखो कि उसको करने का तरीका क्या है।
- ऊंची उड़ान भरने से पहले, नीचे की जमीन को कभी मत भूलना।
- संतान को धन की मशीन नहीं बनाएं, इंसान कैसे बने, यह सोचें।
- शिक्षा वह सार्थक है, जो मन को बल दे, मनोबल बढ़ाए।
- दुनिया में और कुछ सीखो या मत सीखो, धैर्यवान और सहिष्णु बनने का गुर अवश्य सीखना।
- तुमसे चाहे कितने भी अपराध हो जाएं, पर एक अपराध कभी नहीं करना, वह है सत्य का त्याग।
- रोग तो एक ही है पुद्गलासक्ति। वह छोटे तो जीव निरोगी हो जाएगा।
- राग रोग है और अनुराग संयोग। विराग योग है तो वीतराग निरोग है।
- अवसर किसी का इन्तजार नहीं करता। जो इन्तजार करता है, वह चूक जाता है।
- दुर्जन से दोस्ती तभी सार्थक है जब उसे सज्जन बना सको।
- दुर्जन से दोस्ती न कर सको तो दुत्कारना भी नहीं। सोचना वह भी चैतन्य रूप है।
- हीरों का संरक्षक, कंकरों को संग्रहित नहीं करता, क्योंकि कंकरों का संग्राहक जौहरी नहीं हो सकता। उसी प्रकार धर्मी, पाप का संग्रह नहीं करता, क्योंकि पाप संग्रहित करने वाला प्रयोजन सिद्ध नहीं कर पाता।

युगनिर्माता आचार्य श्री रामेश के मुखारविंद से उदयपुर में 3 जैन भागवती दीक्षाएं सम्पन्न

03 अगस्त 22, सेक्टर-4, उदयपुर। दीक्षा आत्मा से महात्मा और महात्मा से परमात्मा बनने का राजमार्ग है। जो जीव असिंधार से भी ज्यादा तीक्ष्ण इस कठिनतम मार्ग पर चलता है वह अवश्य मोक्षगामी बन जाता है। इसी कड़ी में युगनिर्माता, अनुपम दीक्षा प्रदाता **परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलालजी म.सा.** एवं बहुश्रुत, वाचनाचार्य **उपाध्याय प्रवर श्रद्धेय श्री राजेशमुनिजी म.सा.** के पावन सान्निध्य में मुमुक्षु बहिन श्रीमती विमलाजी स्वरूपचंदजी भंडारी-भंडारा (महा.), मुमुक्षु बहिन सुश्री सिद्धिजी किशोरचंदजी नाहर-धमतरी (छ.ग.) एवं मुमुक्षु बहिन सुश्री यशस्वीजी मांगीलालजी ढेलडिया-बालोद (छ.ग.) की जैन भागवती दीक्षा अपार जनमेदिनी की उपस्थिति में सानंद सम्पन्न हुई। नवीन नामकरण क्रमशः **नवदीक्षिता साध्वी श्री चिदानंदश्रीजी म.सा., साध्वी श्री सिद्धिश्रीजी म.सा., साध्वी श्री यतनाश्रीजी म.सा.** के नाम की घोषणा होते ही जय-जयकारों से सभा गूंज उठी। केशलुंचन का कार्य शासन दीपिका साध्वी श्री शांताकंवरजी म.सा. ने किया। इस अवसर पर विभिन्न त्याग-प्रत्याख्यान हुए। (विस्तृत समाचार अगले अंक में)



भगवती अहिंसा..... भीयाणं विव सरणं।

-प्रश्नव्याकरण (2/1)

जैसे भयान्कान्त के लिए शरण की प्राप्ति हितकर है, प्राणियों के लिए वैसे ही इससे भी विशिष्टतर भगवती अहिंसा हितकर है।

Goddess ahimsa is as or even more beneficial for the living as the protection is for the frightened.

**दयामूलो भवेद्धर्मो दया प्राण्यनुकम्पनम्।
दयायाः परिक्षार्थ गुणा शेषाः प्रकीर्तिता॥**

-आदिपुराण (5/21)

धर्म का मूल है दया। प्राणी पर अनुकम्पा करना दया है। दया की रक्षा के लिए ही सत्य, क्षमा आदि विशेष गुण बताए गए हैं।

The righteousness (faith) is based on kindness. Kindness is to be compassionate towards the livingbeings. Other qualities like truth, forgiveness etc. have been prescribed for preserving the quality of kindness only.

अहिंसा निउणा दिट्ठा सव्वभूएसु संजमो।

-दशवैकालिक (6/9)

सब प्राणियों के प्रति स्वयं को संयत रखना ही अहिंसा का पूर्ण दर्शन है।

The wise seers have seen that non-violence is nothing but restraint in dealing with the other livingbeings.

वेशाणुबद्धा नरयं उवेति।

-उत्तराध्ययन (4/2)

जो वैर की परम्परा को लम्बा किए रहते हैं, वे नरक को प्राप्त होते हैं।

Those who do not give up animosity, go to hell.

सायं गवेसमाणा परस्स दुक्खं उदीरंति।

-आचारांगनिर्युक्ति (94)

कुछ लोग अपने सुख की खोज में दूसरों को दुःख पहुंचा देते हैं।

Some torment others while in search of pleasure for themselves.

साभार- प्राकृत मुक्तावली





राम चमकते शानु समाना

अ

नु

क्र

म

णि

का

जीवनी / धर्म देशना



PERMISSION TO TAKE DEEKSHA	07
विहंगावलोकन	09
सामायिक का फल	13
सर्वत्र समभाव का जागरण	15
संवत्सरी	17

ज्ञान सार

ऐसी वाणी बोलिए	18
श्रीमद् भगवती सूत्र	21
श्रीमद् उत्तराध्ययन सूत्र	22



संस्कार सौरभ



मिती मे सत्वभूएसु	16
पर्युषण में आत्मरमण	25
हर कार्य में रखें समभाव	27
साधना का त्रिभुज सामायिक	28
श्रम की पुनर्प्रतिष्ठा	33
बालमन में उपजे ज्ञान	34
समभाव एक उच्च साधना	36
पुण्यकर्म बीमा	38
क्षमापर्व : जैन संस्कृति और विश्वप्रेम का महान दिवस	39
CANCER OF THE SOUL (ATMA)	45

तत्त्व ज्ञान

प्रश्नोत्तरी	24
--------------	----



भक्ति रस



आचार्य श्री रामेश का संयमी जीवन	26
समभाव : एक उत्कृष्ट साधना	30
क्यों लौट गए संत खाली हाथ ??	31
महत्तम महोत्सव के नौ आयाम	
पहुंचाए भव-भव पार	44

विविध

Good Box	42
उदयपुर समाचार	46

सुनहरी कलम से...

जय जिनेन्द्र!

जिनशासन का श्रावक होना किसी स्वर्गानुभूति से कम नहीं है। हमारे सभी पाठक इस बात से अनभिज्ञ नहीं है कि हम ऐसे महान विभूति के शासन का हिस्सा हैं, जिनका इस भरत क्षेत्र में और कोई विकल्प नहीं है। यह शासन हमें शाश्वत सुख की ओर ले जाकर स्थिर परमानंद का मार्ग दिखाता है। इसकी यात्रा भले ही थोड़ी कष्टप्रद हो, परंतु मंजिल अत्यंत सुखद होती है।

हम जिन जिनेश्वर देवों के मार्ग पर चलते हैं, उन्होंने 'क्षमा वीरस्य भूषणम्' का बहुत ही सरल सूत्र दिया है। यह जीवन परिवर्तनकारी सूत्र है। वर्तमान में हम राग, द्वेष, कषाय के मानसिक बोझ तले इतना गर्त में जा चुके हैं कि हमें अध्यात्म का उजाला नजर ही नहीं आता। परिणामस्वरूप हम उसी अंधकार में जीवन व्यतीत कर फिर से अंधकार की ही राह चुन लेते हैं।

संसार सागर से तिरने के लिए हमारे जिनेश्वर देवों ने क्षमा का मार्ग बताया है। करोड़पति, राष्ट्रपति, प्रजापति, उद्योगपति बनना आसान है, परन्तु क्षमापति बनना अत्यंत मुश्किल है। जिनेश्वर देवों ने इसका भी मार्ग बताया है। क्षमा तभी किया जा सकता है जब हम अपने मन को साध लें। क्षमा का सीधा संबंध अपेक्षा से होता है। अपेक्षित कार्य या व्यवहार न होने पर हमारा राग-द्वेष बढ़ना मानवीय प्रकृति के अनुसार स्वाभाविक है। सर्वप्रथम हमें अपेक्षा नहीं रखने की साधना करनी होगी। अपेक्षा नहीं होगी तो उपेक्षा का प्रश्न ही नहीं उठता और धीरे-धीरे हम क्षमापति बन जाएंगे।

भगवान महावीर के अनेकांतवाद के सिद्धांत को यदि गहराई से समझें तो एक शब्द के अंतर से काफी समस्याएं हल हो सकती हैं। वह शब्द है 'ही' के स्थान पर 'भी'। उदाहरणार्थ मैं भी सही हूँ और आपकी अपेक्षा से हो सकता है, आप भी सही हो, परन्तु मेरा ऐसा मानना है... इस तरह भावाभिव्यक्ति/संवाद में 'ही' की जगह 'भी' उपयोग में लाने से काफी टकराव भी टल जाते हैं और सकारात्मकता से समकक्ष पक्ष में स्वीकार्यता आने की सम्भावना भी बन जाती है।

उपरोक्त दोनों विकल्पों को अपनाकर यदि हम क्षमाप्रार्थी और क्षमादाता बनें तो निश्चय ही उसी पल से हम एक परम आनंद को प्राप्त करने लगेंगे। क्षमा मांगने और देने की जो अनुभूति है वह अंतर को हल्का कर उसमें जागृति, चेतना पैदा करती है। फलस्वरूप प्रत्येक क्षेत्र में हमारा मार्ग अवरुद्धता रहित हो जाता है और हम में ऐसी शक्ति का विकास होता है, जिसकी हम कल्पना भी नहीं कर सकते।

आप सभी सुधी पाठकों से निवेदन है कि अगस्त मास के अंतिम चरण में उपस्थित हो रहे 'पर्वाधिराज पयुषण पर्व' को तप-त्याग, धर्मारधना से मनाएं और शिखर दिवस 'संवत्सरी महापर्व' अर्थात् क्षमापना दिवस पर आंतरिक हृदय से क्षमायाचना के साथ नई शुरुआत करें।

खामेमि सव्वजीवे, सव्वे जीवा खमंतु मे। मित्ती मे सव्वभूएस्सु, वेरं मज्झं न केणई।।

इन्हीं शुभभावनाओं के साथ.....

सह-सम्पादिका

घड़ी का समभाव

-परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री नानालालजी म.सा.

यह घड़ी किसी का ध्यान नहीं रखती। कौन बोल रहा है, कौन नहीं बोल रहा है, कौन क्या कर रहा है और कौन क्या नहीं कर रहा है? वह तो अपनी गति से निराबाध चलती रहती है।

इस प्रकार इस घड़ी में समभाव की स्थिति परिलक्षित होती है। यह मानवों के क्रिया-कलापों से निरपेक्ष हो अपने ही लक्ष्य की ओर गतिशील रहती है। ठीक इसी प्रकार सभी मानवों में समभाव की स्थिति आ जाए तो जीवन की गति निरंतर बढ़ती रहेगी।

साभार- नानेशवाणी-45

चिन्तन पराग

मोक्ष का कोर्स

-परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलालजी म.सा.

मोक्ष की प्राप्ति के लिए गृहस्थ को भी प्रमाण-पत्र मिल सकता है। श्रावक भी एक भवावतारी हुए हैं व हो सकते हैं। यह बात निश्चित है कि सिद्ध बनने वाले को साधुता के द्वार तो खटखटाने ही पड़ेंगे। पर हाँ, श्रावक अवस्था में भी वह सिद्ध बनने की योग्यता प्राप्त कर सकता है। इसके लिए उसे मोक्ष का कोर्स करना होगा। उसके बिना प्रमाण-पत्र मिलना मुश्किल ही है। मोक्ष के कोर्स के नाम से यदि दूसरा-दूसरा अध्ययन होता रहा तो उससे सफलता मिलना कठिन है यानी उससे सफलता नहीं मिल सकती। जैसे कोई विद्यार्थी कॉलेज के समय में पूरे कालांशों में व घर पर भी अध्ययनरत रहता है, पर कॉलेज का कोर्स नहीं करके उपन्यास, जासूसी किताबें पढ़ता रहे तो क्या उत्तीर्ण हो सकता है? वैसे ही श्रावक या साधु जीवन में रहते हुए साधना तो करे, पर मोक्ष के कोर्स के रूप में न कर सके तो क्या वह यथेष्ट लाभ उठा सकता है? कभी नहीं।

मोक्ष का कोर्स है- सम-दम-खम-समभाव रखो। अनुकूल-प्रतिकूल कैसी भी परिस्थितियाँ हों उनमें एकरस रहना, समभाव रखना। उनसे हर्ष या विषाद पैदा नहीं होने देना। दमन करो- इन्द्रिय-विषयों के प्रति मन दौड़ता रहता है, इधर-उधर की चर्चाओं में रस लेता रहता है। परिणामस्वरूप वह अपने में कचरा भरता रहता है। उसका दमन करो यानी उसे पारदर्शी बनाओ। उसमें कचरा भरने मत दो। रिशतों के रस से वह प्रफुल्लित न हो एवं स्वार्थ के शिकंजे से वह संकीर्ण न बने। खम यानी क्षमापना अर्थात् अपने-पराये के भेद को समाप्त करना। प्रत्येक को आत्मीय भाव से देखो। सभी प्राणियों में सत्-चित् आनन्दघन रूप आत्मा के दर्शन करो। इस प्रकार के कोर्स का जब अध्ययन बराबर हो पाएगा तो उसका परिणाम स्वतः प्राप्त होगा। उससे यहीं पर मोक्ष का अनुभव होने लग सकता है।

15.09.2016, भाद्रपद शुक्ला 14, गुरुवार

साभार- प्रणव



(PUJYA HUKMESH)

PERMISSION TO TAKE DEEKSHA**Golden Glipmses of ACHARYA SHRI HUKMICHANDJI M.S.****Under the 'Achar Vishuddhi Mahotsav' the english translated series of 'Pujya Hukmesh' is presented below to make the readers aware about the life of****ACHARYA SHRI HUKMICHANDJI M.SA.****Continued from 15-16 July 2022-**

Dear children! After hearing these words from his parents, Hukmichand bowed his head at their feet and said – “O parents! Everything that you said is indeed true. After contemplating all these things deeply, I have taken a firm resolve to take Deeksha. Once again, I assure you that I will never show cowardice and will follow my vows wholeheartedly. No matter how many obstacles come in my way, I will tolerate them with courage and gallant laughter. Please oblige me by granting permission to take Deeksha.” Finally, on seeing Hukmichand’s determination, Honourable Ratanchand Ji and Motibai gave their signature on the consent letter (आज्ञापत्र).

As soon as relatives, villagers, and visiting guests came to know about this decision, they reached there in astonishment. They also started explaining to him in many ways. But all in vain. Nothing could beat his firm determination. The visitors thought about the hopes and dreams with which they had come, and how suddenly the entire atmosphere had changed. At last, speaking blessedly (धन्य), they all went back.

Then Honourable Ratanchand Ji, while discussing with his family members said- “Now that he has taken the determination to take Deeksha to make his

life meaningful, then we all should not discourage him. Let us choose an auspicious day and decide when and where to hold the Deeksha ceremony. Everyone agreed on this and sent a person to call a well-known astrologer of Today. That person went and told the matter to the astrologer. Hearing all this, the astrologer himself, was shocked and reached there as soon as possible with Panchang. At first, he asked many twisted questions to Hukmichand. Upon hearing his honest and perfect answers to all his questions, he too was stunned. At last, he saw the determination in Hukm, and finally made Hukmichand’s horoscope and came to the conclusion that the day of संवत् 1879 मिंगसर सुदी द्वितीया is the most auspicious day for his Deeksha ceremony. Along with that, upon seeing his horoscope, he asserted that Hukm will bring a magnificent revolution in the field of spirituality. Hearing this, a wave of surprise and joy spread in the family. Everyone had only one wish that the Deeksha ceremony should take place here in Today. But everyone decided that it would be preferable to finalize this after going to the service of Pujya Shri Lalchand Ji M.Sa. Later, they left for Boondi with Hukmichand. At the time, Pujya Shri Lalchand Ji M.Sa. was

staying in Boondi.

IN SERVICE OF PUJYA SHRI LALCHANDJI M.SA

Dear children! The head of the Chaplot family along with Hukmichand reached Boondi and worshiped the Pujyashri and said - "Lord! We have spent our entire life worshiping at your feet and listening to your discourses, yet we have not awakened the spirit of self-control, but our son was inspired just after listening to one of your discourses. We all were busy preparing for his engagement on his arrival. But when he told about his determined vow of celibacy that he took at your feet followed by his resolute decision to take Deeksha, then it was as if all of our dreams were blown away. We tried to explain to him in many ways, but he did not budge from his resolve. So we were compelled to give him permission and finalized the auspicious day of संवत् 1879 मिंगसर सुदी द्वितीया for his Deeksha ceremony to be held in Todai. Therefore, now we have a humble request at your feet that you please come to Todai and give him Deeksha on that auspicious day."

Hearing this, Pujya Shri said with joy

that -" When Hukm came here a few days ago and after the discourse when he took a firm vow from me to follow celibacy, then my conscience said that after taking Deeksha, he would bring a magnificent revolution in our society. Today, I am elated to know your sentiments, but considering my physical condition and the distance to Todai, it seems impossible for me to reach Todai by that date. That is why it will be better if this Deeksha will be completed here." On hearing this, the prominent Shravakas of Boondi sitting in the service of M.Sa. immediately got up and put their turbans in front of the Todai residents. They requested to give them the chance and benefit of conducting this Deeksha ceremony. Hence, following the instruction of Pujya Shri and accepting the request of well-known elders of Boondi, it was finalized to hold the Deeksha ceremony in Boondi itself. After that, everyone along with Hukm went back to Todai. The people of Boondi were delighted and excited to take full advantage and benefit from this rare opportunity.

Continued...



People have varied opinions on the subject of freedom. Some are heard blaming the capitalists for suppressing their independence while some talk about technology imposing its dominance. As many men as many minds. But freedom is something tangible that could be snatched by someone ?

Freedom, if duly understood, can never be taken from or given to anyone. The roots of liberty are ever-present within us. If we accept it in its truest form, which is to work patiently and diligently on the path of truth, we are bound to be free and prosperous.

-Acharya Shri Nanalaji M.Sa.

विहंगावलोकन

जीवनी अंश – परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री श्रीलालजी म.सा.

15-16 जुलाई 2022 अंक से आगे...

आचार्य प्रवर 1008 श्री श्रीलालजी म.सा. के देवलोकगमन के पश्चात् उनके गुणानुवाद कर हर कोई अपने आपको पावन कर रहा था। ऐसे अद्भुत योगी के अनेक गुणों का सारगर्भित विवेचन आपने 15-16 जुलाई के अंक में पढ़ा, अब उसके आगे का विवरण प्रस्तुत है—

‘दुनिया क्या कहेगी’ इस पर उन्होंने कभी ध्यान ही नहीं दिया। परन्तु भगवान महावीर क्या कह गए हैं, उनकी क्या आज्ञा है, यही उनका जीवनपर्यन्त शोध रहा। वे वीर प्रणीत निरवद्य मार्ग पर निश्चयता से, निर्भयता से आगे बढ़ते ही चले गए।

संयम सरिता का प्रवाह सहज ही शिथिल हो जाता तो उन्हें बड़ा दुःख होता था। बिलकुल रज जैसे बारीक छिद्र न भरे जाएँ तो हाथी निकल सके ऐसे द्वार हो जाते हैं। इसलिए छोटे कार्य से ही जल्द सार-संभाल कर लेना वे पसंद करते थे। प्रफुल्लित हुए वृक्षों में जब क्षय घुसने लगा, ईर्ष्या और अंगद्वेष रूपी कीड़े फल को ही खा जाने लगे, तब सम्प्रदाय के मुख्य सिद्धान्त और सीमा की रक्षार्थ वे जागृत हुए, घबराए नहीं।

Bear and Forbear

सब सहन कर लेते और आत्मा पर विश्वास रखते, परन्तु सत्ता के मद में चारित्र्य की पांख कट जाए या बाजी बिगड़ जाए इससे बहुत सावधान रहते थे। दुराग्रह से किसी विचार को पकड़ कर नहीं रखते थे। शास्त्र का नियम खंडित हो वहाँ वे झुकते भी नहीं, अपितु सत्याग्रह करते थे। समाज सुरक्षा की सौंपी हुई जोखिम से वे हमेशा जागृत रहते थे।

शिष्यों से व्यवहार में उनका हृदय कुसुम-सा कोमल मालूम होता था। न्याय विरुद्ध व्यवहार के समय वही व्यवहार वज्र से भी कठोर बन जाता था। यह सत्य के ताप का तेज था। मतभेद के कारण सम्बन्ध न होने पर

भी वे दूसरों के सद्गुणों की अपेक्षा न करते थे, परन्तु अवसर मिलने पर उनके गुणों की स्वयं प्रशंसा करते थे। उन्होंने अपना समस्त जीवन शासनदेव की शरण में ही समर्पित कर दिया था। उनके वय के प्रमाण में दूसरा कोई व्यक्ति भाग्य से ही मिले, ऐसा अपूर्व गाम्भीर्य पूज्यश्री में प्रकट हो गया था। उनमें सूत्रज्ञान की प्रवीणता अनोखी थी। वे सूत्र के ज्ञान की पुनीत प्रकाशित किरणें फैलाने के लिए शिष्य समूह से खास आग्रह करते थे।

अपने ही सम्प्रदाय के एक साधु का दृष्टान्त— दोपहर में कुछ औषधि लेने किसी युवा साधु को एक गृहस्थ के यहाँ जाना पड़ा। उस मकान में उस समय एक विधवा स्त्री के सिवाय कोई न था। मुनिराज पीछे फिरे कि वह स्त्री विकारवश हो मुनि के पीछे पड़ गई। मुनि ने असरकारक उपदेश दे स्त्री-धर्म समझाया, परन्तु काम अंधा होता है। समय बड़ा तीव्र था। बूम (जोर से आवाज करने पर) देने से उलटी अपनी इज्जत बिगड़ती है। आत्मा के श्रेय के कारण सिर मुंडाने वाले इस मुनि ने मन में ही आलोचना कर अपनी जीभ काट अपना व्रत निभाने के लिए अपने प्राण बहादुरी से अर्पित कर दिए।

आयरलैण्ड में नगरसेठ लॉर्ड मेयर ने जेल में खुराक न ले उपवास कर आत्मभोग दिया। सेठ अर्जुनलालजी ने जेल में इष्टदेव के दर्शन किए बिना अन्न लेने से इन्कार कर दिया था। रामबक्ष ब्राह्मण ने अंडमान में जनेऊ बिना अन्न नहीं लेकर नौ दिन भूखे रहकर मृत्यु स्वीकार की थी। ऐसे दृष्टान्तों पर खास पुस्तक लिखी जा सकती है। यहाँ संकेत करने का कारण सिर्फ यह है कि धार्मिक

नियम, प्रतिज्ञा बालक के खेल नहीं हैं कि अपनी इच्छानुसार कसौटी के समय प्रतिज्ञा को त्याग दें और समय के वश हो जाएँ।

कर्तव्यपालन की परम्परा निर्भयता का पोषण करती है। पूज्यश्री का जीवन विविध घटनाओं से पूर्ण था। वे कभी दुःख से नहीं दबे, न ही दिग्मूढ़ बने और ना ही उदासीनता से दुबले हुए। आत्मा की भूख मिटाने, प्यास छिपाने में उन्होंने अविश्रान्त श्रम किया है। पाप पुँज के अग्नि समान और अन्याय के शत्रु समान वे हमेशा सिंहध्वनि करते रहे, कभी भी कोमलता नहीं त्यागी। श्रीकृष्ण को एक ब्राह्मण ने लात मारी तो श्रीकृष्ण ने उस लात को अलंकार की तरह धारण कर लिया। गांधारी ने घोर शाप दिया, जिसे श्रीकृष्ण ने अधिक सम्मान दिया। साधु सरिता की ओट हो जाने पर भी आचार्यश्रीजी ऐसे ही अविचलित, गंभीर महासागर बने रहे।

स्मरण-शक्ति- पूज्यश्री के जैसी स्मरण-शक्ति अच्छे-अच्छे अवधानियों में भी नहीं दिखती। उनकी असाधारण स्मरण-शक्ति के एक-दो उदाहरण यहाँ प्रस्तुत है-

पूज्यश्री राजकोट विराज रहे थे। एक दिन मोरवी से कितने ही अग्रगण्य श्रावक मोरवी पधारने के लिए विनती करने आए। उनमें सेठ अम्बाणीदास डोसाणी भी थे। जब सेठ अम्बाणीदासजी ने वन्दना की तब महाराजश्री ने उनका नाम लेकर 'जी' कहा। यह देख अम्बाणीदास भाई को बड़ा आश्चर्य हुआ और उन्होंने कहा कि महाराजश्री! मुझे तो आज ही पहले-पहल आपके दर्शन का लाभ मिला है। आप मुझे कैसे पहचान गए? पूज्यश्री ने कहा कि अजमेर कॉन्फ्रेंस के समय मैंने आपका फोटू देखा था, उसी से आपको पहचान सका।

उदयपुर के श्रावक रतनलालजी मेहता कहते कि उदयपुर में हम रात्रि के समय पूज्यश्री के साथ अधिक रात बीतने तक ज्ञानचर्चा करते रहते थे। पूज्यश्री अंदर मकान में विराजते और हम बाहर बैठते थे। जब कोई श्रावक वहाँ से जाता तो तुरन्त महाराजश्री कह देते कि ये

अमुक श्रावक है। इससे उपस्थित श्रावकों को अत्यन्त आश्चर्य होता। एक समय मैंने प्रश्न किया कि महाराज! हम उसे नहीं पहचान सकते और आप अंधेरे में भी उसे कैसे पहचान सकते हैं? पूज्यश्री ने फरमाया कि उसकी चाल और पगरव (पैरों की आवाज) से मैं अनुमान कर सकता हूँ। इसी तरह बाहर गाँव से आए हुए श्रावक रात को वंदना करने आते और 'मत्थण वंदामि' बोलते ही उसे सुन पूज्यश्री उसे पहचान लेते थे। बहुत वर्ष बीत जाने पर भी अंधेरे में केवल आवाज से ही पूज्यश्री पहचान जाते थे।

अपने समागम में जो मनुष्य केवल एक ही बार आया हो उसका नाम-स्थान पूज्यश्री नहीं भूलते थे। भिणाय वाले पंडित बिहारीलालजी इसके प्रमाण में सत्य कहते हैं कि-

‘इनकी अद्भुत स्मरण-शक्ति देख मुझे अत्यन्त आश्चर्य होता था और कभी-कभी मुझे ऐसा भान होता कि ये मनुष्य हैं या देवता?’

कर्तव्यपालन में सावधानी- आचार्य पद प्राप्त होने के पश्चात् दूसरों की तरह अपना प्रचार बढ़ाने की ओर पूज्यश्री का बिलकुल लक्ष्य न था, परन्तु अपनी आज्ञा में विचरने वाले चतुर्विध संघ में ज्ञान, दर्शन, चारित्र, तप को बढ़ाकर जैन शासन उन्नति करे, यही उनका परम ध्येय था।

पूज्यश्री अपने साधुओं से बार-बार कहते कि 'तुमने दीक्षा ली है और घर, कुटुम्ब, स्त्री सबको छोड़ दिया है, सो अब उनके काम के तो तुम नहीं रहे। यह 'दीक्षा' चिंतामणि रत्नों का हार है। इसको अच्छी तरह से पालने में उत्कृष्ट रस आएगा तो सिर्फ एक भव करके मोक्ष में जा सकते हो। संसार से सुख-वैभव चने की मुट्ठी समान हैं। सो इस चने की मुट्ठी के लिए चिंतामणि रत्नों का हार मत खो बैठना।'

व्याख्यान देने वाले साधुओं को इंगित कर वे कहते कि 'अन्य को उपदेश देना सरल है, परन्तु उस मुताबिक

बर्ताव करना कठिन है। इसलिए मुनियो! तुम उपदेष्टा होने से पहले दृष्टान्त रूप बनो। वचन की अपेक्षा बर्ताव में बल अधिक है।’

पूज्यश्री बाह्य त्याग की अपेक्षा आंतरिक त्याग को प्रधानता देते और कहते कि ‘अशुचिमय शरीर पर मोह-ममत्व रखना बड़ी भारी भूल है। शरीर के अन्दर जो-जो वस्तुएँ हैं वे अगर शरीर के बाह्य भाग पर होती तो उन्हें खाने को गिद्ध, कौए आदि पक्षी शरीर पर गिरते और उन्हें हटाने में ही अधिक समय व्यतीत करना पड़ता।’

‘मुनियो! तुम जो संसार के क्षुद्र बंधनों से वैराग्यपूर्वक मुक्त हो जाओ तो तुम आनन्द की भूमि में विचरने वाले हो। भय और दुःख तो हमेशा तुम्हारे से दूर ही रहेंगे। दुनिया जिसे दुःख-दुःख कह कर रोती है, उसे तुम आनन्द देने वाली मान लोगे।’

‘केवल शास्त्र पढ़ने से ही मुक्ति नहीं मिल सकती, परन्तु शास्त्र की आज्ञानुसार चलने से ही मुक्ति प्राप्त हो सकती है।’ उपरोक्त सद्बोधामृत का अपने शिष्य समुदाय को पान कराकर कर्तव्यपालन के लिए उचित प्रोत्साहन की नाव सही सलामत रीति से आगे बढ़ाते चले जाते थे।

पूज्यश्री चतुर्विध संघ के आधार के समान थे। सत्पुरुष सद्गुणों की जीती-जागती मूर्ति हैं। सब संग परित्याग किए हुए महात्माओं को देखते ही उनके दर्शन मात्र से ही कई संस्कारी जीवों को उनके उत्तम गुणों का अनुकरण करने की स्वतः ही स्फुरण हो जाती है।

श्री वीतराग प्रभु की आज्ञा की विराधना न हो और अपनी आज्ञा में विचरते साधु आचार में शिथिल न हो जाएँ इसीलिए उन्होंने सिर्फ शोभा बढ़ाने वाले साधुओं को अपने सम्प्रदाय से अलग करने में तनिक देर नहीं की। यदि वे थोड़ी-सी भी ढील देते तो भिन्न हुए कितने

ही विद्वान् साधु, वक्ता, शास्त्रों के ज्ञाता, सुप्रसिद्ध मुनि और स्थविर उनकी आज्ञा में चलना अपना गौरव समझते, परन्तु जिनाज्ञा को अपना सर्वस्व मानने वाले पूज्यश्री ने उनकी आज्ञा के बाहर एक पाँव भी रखना न चाहा। पूज्यश्री के लिए यह सचमुच कसौटी का प्रसंग था और जिसमें भी उन्हें ‘प्राणान्ते अपि प्रकृति विकृति जायते नोत्तमानाम्’ अर्थात् उत्तम पुरुषों की प्रकृति में प्राणांत कष्ट तक की विकृति नहीं हो सकती। यह कथन सत्यता सिद्ध कर दिखा सकता है।

दोस्तो! मेरे लिए शोक न करते हुए समाज को सुव्यवस्थित करें। ऐसा उपदेश पूज्यश्री के अवसान समय का था।

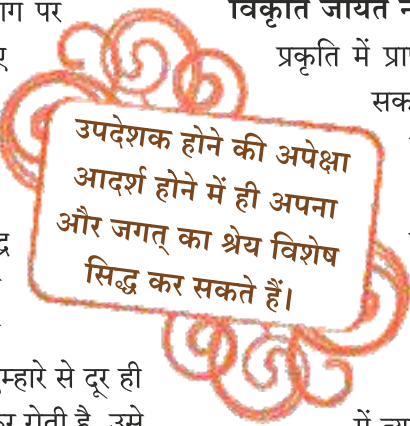
पूज्यश्री के रक्त के एक-एक अणु में त्याग की भावना उछल रही थी। दुनिया धन-दौलत, हाट-हवेली, स्त्री इत्यादि से आनन्द पाती है, परन्तु पूज्यश्री इन सबके त्याग में परमानन्द अनुभव कर रहे थे। बाह्य और आभ्यन्तर, इन दोनों प्रकार के त्याग से उन्होंने आत्मा को समुज्ज्वल किया था।

सचमुच सत्पुरुष सद्गुणों की जीती-जागती मूर्ति है। इस अंधकारमय संसार-समुद्र में पर्यटन करती हुई अपनी जीवन नौका को चट्टान से टकराकर नाश होने से बचाने वाली ये दीप शिखाएँ हैं। उन्नति की दिशा बताने वाले ये ध्रुव तारे हैं।

[Be in the world Not for the world]

निरहंकार वृत्ति - दूसरे जब कीर्ति के पीछे दौड़ते-फिरते हैं और जहाँ-तहाँ अपनी बड़ाई के फव्वारे छोड़ते हैं, वहाँ पूज्यश्री कीर्ति को उन्नति के पथ में अंतराय सम समझ उससे दूर भागते थे।

पाठक पहले देख चुके हैं कि पूज्यश्री पूर्ण शास्त्र विशारद, समर्थ ज्ञानी होने पर भी श्रावकों से चर्चा करते समय कदाचित् किसी गहन प्रश्न का निराकरण करने में



उन्हें कठिनता प्रतीत होती तो उस समय वे बिना संकोच कह देते कि इस समय मेरी बुद्धि काम नहीं दे रही है। एक बड़े आचार्य होने पर सभा में स्पष्ट ऐसा कहने वाले निरभिमानी, स्फटिक रत्न जैसे निर्मल हृदय के महापुरुष विरले ही होंगे।

लींबड़ी सम्प्रदाय के विद्वान् मुनि श्री उत्तमचंदजी महाराज की प्रशंसा करते हुए पूज्यश्री कहते कि अमुक सिद्धान्त वचन का सच्चा रहस्य मुझे उन्होंने समझाया है। इसी तरह गोंडल सिंघाड़े के आचार्य श्री जसाजी महाराज के ज्ञान की भी वे तारीफ करते थे। पंडित श्री रतनचंदजी महाराज के पास से विनयपूर्वक चन्द्रप्रज्ञप्तिसूत्र की वांचना लेते थे। यह कितनी महान लघुता है।

पूज्यश्री किसी ग्राम में पधारते या कहीं से विहार करते तो उसकी खबर श्रावकों को न होने देते थे। एक समय चतरपुरे से ब्यावर पधारते समय रास्ते में खबर मिली कि सैकड़ों श्रावक-श्राविकाएँ आपके स्वागत हेतु सामने आ रहे हैं। महाराजश्री ने यह सुन दूसरी राह ले ली और विकट रास्ते से चलकर एक छोटे-से ग्राम में पधारे। वहाँ ओसवाल का एक भी घर नहीं था। ग्रामवासी बोले कि हमारी पीढ़ियाँ बीत गई, परन्तु कोई साधुजी यहाँ पधारे हों, ऐसा नहीं सुना।

पूज्यश्री को आचार्य पद प्राप्त होते ही उन्होंने संवत् 1971 में अपने बहुत-से अधिकार अपने सम्प्रदाय के सुयोग्य मुनिवरों के सुपुर्द कर स्वतः ही अपने सिर का भार हल्का कर लिया।

अखिल भारतवर्ष के साधुमार्गी जैन सम्प्रदाय में सबसे अधिक साधुओं पर आधिपत्य धराने वाले पूज्यश्री ही थे और उनके सदुपदेश से अनेक भव्यात्माओं ने वैराग्य पथ पर बढ़कर दीक्षा ग्रहण कर ली थी। तो भी आश्चर्य यह था कि उन्होंने अपनी नेत्राय में एक भी शिष्य नहीं बनाया। उन्होंने तो दीक्षा लेने से पहले ही शिष्य न बनाने का निश्चय कर लिया था।

परम सहिष्णुता- एकान्त में या व्याख्यान में परधर्म

की निंदा का एक शब्द भी पूज्यश्री के मुँह से न निकलता था। इतना ही नहीं, अन्यदर्शी पूज्यश्री की वाणी सुन सन्तुष्ट होते थे।

जोधपुर के चातुर्मास में एक समय एक रामस्नेही सम्प्रदाय के अनुयायी गुलाबदासजी अग्रवाल ने (जो अभी पक्के जैनी हैं) पूज्यश्री से प्रश्न किया कि- 'महाराज! मुझे कोई ऐसा सीधा-सरल उपाय बताइए जिससे मेरा मन शान्त और स्थिर रहे।'

महाराजश्री ने कहा कि 'भाई! तुम राम को जपते हो, उसी तरह चित्त को विशेष एकाग्र कर निरन्तर राम-नाम जपते रहो। भक्ति से तुम्हारा मन पवित्र और शान्त हो जाएगा।' यह सुनकर तथा महाराजश्री की सब धर्म पर ऐसी उदार भावना देखकर वे महाशय अत्यन्त आनंदित हुए और पूज्यश्री के सत्संग से जैन धर्म का रहस्य समझ उन्होंने प्रेमपूर्वक जैन धर्म स्वीकार कर लिया।

परनिंदा परिहार- पूज्यश्री कदापि किसी की निन्दा न करते और अपने भक्तों को भी निन्दा से सर्वथा दूर रहने का आग्रहपूर्वक उपदेश देते थे। इसके लिए सिर्फ एक ही दृष्टान्त काफी है।

संवत् 1976 के पौष माह में पूज्यश्री जावद में विराज रहे थे। तब रतलाम के श्रावक बालचंदजी श्रीमाल पौषध कर पूज्यश्री की सेवा में बैठे थे। उस समय जावरा के एक श्रावक ने आकर तेजसिंहजी महाराज की सम्प्रदाय के साधु प्यारचंदजी तथा इंद्रमलजी से साध्वोचित सम्बन्ध स्थापित करने के लिए पूज्यश्री से अर्ज की और विशेषतौर से कहा कि अभी ऐसा ही मौका है, जो आप विचार न करेंगे तो दूसरे पक्ष वाले दुश्मन इन्हें मदद देंगे। यह वाक्य सुनकर आचार्यश्री बोले कि भाई! तुम दुश्मन किसे कहते हो? वे तो हमारे परममित्र हैं। उनकी प्रवृत्ति से हमें अपना चारित्र विशेष विशुद्ध करने का अवसर प्राप्त हुआ है।

साभार- अद्भुत योगी

-क्रमशः



सामायिक का फल

-परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री जवाहरलालजी म.सा.

सामायिक को समझने वाला एक परिवार था। ऐसे परिवार के बालकों में सहज ही धर्म के संस्कार समा जाते हैं। उस परिवार में जन्मी हुई एक कन्या का विवाह हुआ। उस लड़की की रग-रग में धर्म की भावना भरी थी। वह समझती थी कि मुझे विवाह आदि सांसारिक कृत्य तो करने ही पड़ते हैं, लेकिन यह संसार सदा साथ देने वाला नहीं है। साथ देने वाला तो एक मात्र धर्म ही है।

विवाह के बाद लड़की ससुराल गई। उसने देखा कि मेरे ससुराल के सब लोग उदास हैं। उसने सोचा- और घरों में नई बहू आने पर प्रसन्नता का पार नहीं रहता, लेकिन इस घर में मेरे आने पर उदासी छाई है। इस उदासी का क्या कारण होगा? मैं अब इस घर की सदस्या हो गई हूँ। मेरा कर्तव्य है कि घर वालों के सुख-दुःख को जानूँ और दुःख हो तो उसे दूर करने का यथाशक्ति प्रयत्न करूँ। ऐसा विचार कर उसने अपने साथ की दासी से कहा- सासूजी से पूछो कि आज घर में किस बात का दुःख है? दासी गई और कारण पूछा।

सासू समझदार थी। उसने सोचा- हम तो दुःखी हैं ही, नई आई बहू को क्यों दुःखी करें? यह सोचकर उसने दासी से कहा- बहू से कह दो कि तुम्हारी ओर का कोई दुःख नहीं है। दुःख का कारण तो और ही है। तुम अभी यह जानकर चिन्ता में क्यों पड़ती हो? अगर तुम जान भी गई तो कुछ प्रतिकार नहीं होगा। इसलिए हमारा दुःख हम ही को भोगने दो।

वह नई बहू स्वार्थी स्वभाव की नहीं थी। उसने यह नहीं सोचा कि अपनी ओर का दुःख नहीं है, बस चलो छुट्टी पाई। अब हमें चिन्ता करने का क्या प्रयोजन है? बहू ने दासी को भेजकर फिर कहलाया- अगर कहने से

कुछ नहीं होता तो इस तरह रोने से भी कुछ नहीं होता। रोने से दुःख मिटता नहीं अपितु बढ़ता है। आखिर कहिए तो सही दुःख क्या है? कौन जाने, कोई उपाय निकल जाए।

सास ने सोचा कि यह बहू कुछ और तरह की मालूम होती है। आखिरकार धर्मात्मा के घर की बेटा है। वह स्वयं बहू के पास आई और बोली- और कुछ दुःख नहीं है। इस मोहल्ले में एक बुढ़िया रहती है। वह लड़ाईखोर स्वभाव की है। वह चाहे जब, चाहे जिससे लड़ लेती

थी। इसलिए यह तय कर दिया है कि वह नित्य एक घर से लड़ लिया करे। संयोगवश आज अपने घर की बारी है। आज ही तुम आई हो और आज ही वह न जाने क्या-क्या बकेगी? इसी विचार के कारण उदासी छाई हुई है।

सास की बात सुनकर बहू ने कहा- इस जरा-सी बात के लिए इतनी भारी चिन्ता! आप सबने उसकी आदत बिगाड़ दी है, नहीं तो वे मांजी क्यों लड़ती? आप नहीं लड़ने का उपाय करती तो वे लड़ना छोड़ देती। आज लड़ाई का सब काम मुझे सौंप दीजिए। मैं सब ठीक कर दूंगी। मैं इसका मंत्र जानती हूँ।

सास ने कहा- भले ही तुम इसका मंत्र जानती हो मगर होशियार रहना। तुम नई आई हो और वह बड़ी लड़ाकू औरत है। उससे कोई जीत नहीं पाता। बहू बोली- चिन्ता न कीजिए।

बहू घर के दरवाजे के बीच बिछौना डालकर बैठ गई। उधर बुढ़िया ने सोचा- आज लड़ाई का अच्छा मौका है। आज ही नई बहू आई है और आज ही उस घर से लड़ने की बारी आई है। उसने यह भी सुना है कि नई बहू ही उससे लड़ने को तैयार हुई है। यह सुनकर उसे और भी



खुशी हुई। वह खान-पान से निवृत्त होकर, हाथ में लकड़ी ले वहाँ आ पहुँची। आते ही उसने कहा- तू कैसे गये-बीते घराने की है कि इस तरह दरवाजे के बीच बैठकर मुझ बुढ़िया से लड़ने को तैयार हुई है।

बहू को इस बात पर सहज ही क्रोध आ सकता था, मगर बहू सामायिक के महत्व को जानती थी। उसे क्रोध नहीं आया। उसने यह भी नहीं कहा कि लड़ने में आई हूँ या तू आई है? उसने कुछ नहीं कहा, तो बुढ़िया कहने लगी- अब बोलती भी नहीं है! कैसी चुप्पी मारकर बैठी है। लेकिन बहू हंसती-हंसती सुनती ही रही। अब तो बुढ़िया और जोर से चिल्लाई- यह बेशर्म हंस रही है। बड़ी निर्लज्ज है। फिर भी वह कुछ नहीं बोली। जब बुढ़िया धीमी पड़ती, तब वह खांस कर फिर हंस देती। बुढ़िया का पारा फिर गर्म हो उठता। शाम तक यही क्रम चलता रहा। जब शाम हो गई तो दासी ने कहा- शाम होने को है और भोजन का समय हो गया है। अतः चलकर खाना खा लीजिए। बहू ने कहा- यहीं भोजन ले आओ।

दासी भोजन ले आई। बहू ने बुढ़िया को भोजन की ओर इशारा करके कहा-आओ मांजी! भोजन कर लो। बहू का इतना कहना था कि बुढ़िया गर्ज उठी- मैं क्या भूखी मरती हूँ? क्या मुझे जानवर समझा है?

बहू ने धीमे से कहा- मनुहार करना मेरा काम था, सो मैंने मनुहार की। खाना, न खाना आपकी मर्जी की बात है।

बहू भोजन करने लगी। बुढ़िया बोली- कितनी बेशर्म है यह चण्डी कि मेरे सामने ही खा रही है। इस प्रकार वह बड़बड़ाती रही। बड़बड़ाते हुए उसकी आंते अकड़ गई और वह बेहोश होकर गिर पड़ी। बहू ने उसी समय दासी को बुलाया और बुढ़िया को भीतर ले लेने को कहा।

दोनों ने मिलकर उसे उठा लिया और घर के भीतर ले गई। पानी छिड़का तो बुढ़िया होश में आ गई। बहू ने पूछा- सासूजी! अब आपकी तबीयत ठीक है न? आपका यह वृद्ध शरीर इतना ज्यादा कष्ट उठाना पड़ा! अगर मैंने सम्हाला न होता तो न जाने क्या होता? अब आप क्रोध मत किया करो। आज मैंने जो उपाय किया है, वह मोहल्ले के सब लोग जान गए हैं। आप इसी तरह लड़ती रही तो वर्षभर के बदले छह माह में ही मर जाएंगी। मरने के बाद न जाने कौन-सी गति मिलेगी। इसलिए अपनी सेवा का सौभाग्य मुझे दे दो। एक सास के बदले दो सास की सेवा कर मुझे दोगुनी प्रसन्नता होगी।

बुढ़िया की आँखें खुल गईं। उसने सोचा- यह बहू कुछ और ही तरह की है। उसने कहा- बहू! तू ठीक कहती है। भला मैं अकेली कब तक लड़ सकती हूँ? सामने लड़ने वाला हो तो जोश भी आता है और विश्राम भी मिल जाता है। इस तरह जोश बढ़ाकर ही लोगों ने मुझे लड़ना सिखाया है।

बहू की ऐसी मधुर बातें सुनकर बुढ़िया को शांति मिली। वह उसी के घर रहने लगी। बहू ने उसकी तन-मन से सेवा की। बुढ़िया ने बहू को अपने धन-सम्पत्ति की उत्तराधिकारी बना दिया। सब जगह बहू की तारीफ होने लगी। झगड़े के समय लोग उसे मध्यस्थ बनाने लगे। मोहल्ले की अशांति मिटी और शांति का वातावरण हो गया।

उस समय बहू सामायिक करने नहीं बैठी थी, परन्तु फिर भी उसने सामायिक का महत्व समझा ना, तो उसने सामायिक का फल पाया या नहीं? इस प्रकार कहीं भी किसी भी अवस्था में समभाव रखने से सामायिक का फल अवश्य प्राप्त होता है।

साभार- श्री जवाहर किरणावली भाग-18

जीवन का मंगल मंत्र है 'समियाए धम्मे'

परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री नानालालजी म.सा.

जिस प्रकार धागे, चादर को आधार और एकता प्रदान करते हैं, उसी प्रकार चतुर्विध संघ के प्रत्येक घटक को स्वयं का अस्तित्व भूलकर चतुर्विध संघ को आधार और एकता प्रदान करनी चाहिए। धागों का हित चादर के हित में समाहित है। धागों का जीवन चादर के जीवन पर आधारित है। इस अन्योन्याश्रित संबंध को हृदयंगम करें। संघ एकता का यही सूत्र है। यही जीवन का मंगल मंत्र है। इसी जीवन-मंत्र के सहारे जीवन को उज्वल करें।

सर्वत्र समभाव का जागरण

—परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री नानालालजी म.सा.

मानवता की संरचना एवं मानव-मूल्यों की संस्थापना के साथ ही मेरा विचार है कि सामाजिक क्षेत्र में सहयोगात्मक वातावरण का प्रसार होगा तथा संविभाग की भावना भी जन्म लेगी। इससे अर्जन एवं जीवन निर्वाह की पद्धति में भी शुभ परिवर्तन आएगा कि सत्ता या सम्पत्ति के व्यक्तिगत स्वामित्व की लालसा घट जाएगी और निर्वाह के स्तर में समानता का प्रवेश होगा। यह परिवर्तन बाहरी सामाजिक नीतियों के प्रभाव से भी आएगा तो भीतरी वृत्तियों का भी परिणाम होगा, बल्कि बाहर से भीतर और भीतर से बाहर दोनों ओर से परिवर्तन की प्रक्रिया चलती रहेगी।

मेरा अनुमान है कि इस प्रक्रिया के बाद जब परिवर्तित वातावरण स्थिरता ग्रहण कर लेगा तो सामूहिक रूप से सारे समाज में एक नया ही भावनात्मक बदलाव दिखाई देगा और यह बदलाव होगा समभाव के पक्ष में। समान अवसर एवं समान स्तर की परिस्थिति में सबके बीच समभाव का जागरण भी अवश्यंभावी बन जाएगा। यह समभाव जिस वेग से सर्वत्र फैलता जाएगा, उसी वेग से मानवीय मूल्यों की प्रखरता भी प्रदीप्त होती जाएगी।

मैं उस समाज की कल्पना करता हूँ जिसका मूलाधार समता पर टिका हुआ हो। व्यक्ति समभाव से आप्लावित होकर समदृष्टि बने तथा अपने समग्र आचरण को समता के पक्के सांचे में ढाल दे। सामाजिक शक्तियों की भी कार्य-दिशा यह हो कि वे उत्थानोन्मुख व्यक्ति को सुन्दर धरातल प्रदान करें और जब उसके चरण लड़खड़ाने लगें तो उसको सदाशयता से सम्बल से पुनः गतिशील भी बना दें। इसी रूप में सर्वत्र समभाव का जागरण एक साकार रूप ले सकता है।

समभाव के गूढार्थ को हृदयंगम करते हुए मैं पुरुषार्थ करना चाहूंगा कि मैं सब प्राणियों के प्रति अपने समान

विचार रखूँ, अपने समान देखूँ तथा अपने को प्रिय या अप्रिय लगे उसी प्रकार दूसरों को प्रिय लगने वाला व्यवहार उनके साथ करूँ एवं अप्रिय लगने वाला व्यवहार न करूँ। मैं अपने लिए प्रिय अथवा अप्रिय, सम्पत्ति या विपत्ति, सुख या दुःख दोनों प्रकार की स्थितियों में भेद नहीं करूँ तथा समान भाव रखूँ। किसी को भयभीत नहीं करूँ तथा किसी से भय भी नहीं खाऊँ। किसी वस्तु के लाभ पर न तो मैं गर्व करूँ और न ही किसी हानि पर खेदग्रस्त बनूँ। किसी भी संकट के सामने मैं विचलित नहीं होऊँ और अपने समतामय आचरण को नहीं त्यागूँ। समभाव की दृष्टि से मैं अपने अन्तर्हृदय को निरन्तर जांचता-परखता रहूँ और उस सम्बन्ध में किसी भी दोष को प्रविष्ट नहीं होने दूँ। अपने ज्ञान, तप एवं आचरण की अभिवृद्धि के साथ मैं समभाव को परिपुष्ट करता रहूँ। सुख-दुःख के अनुभवों में समभाव रखते हुए मैं राग-द्वेष की कलुषितता से भी दूर रहूँ और अपने मध्यस्थ भाव द्वारा दूसरों को भी समभाव की तरफ आकृष्ट करूँ। अभिलाषाओं के आवेग में अथवा जीवन-मरण की कामना में फंस कर मैं कभी भी अपने मन, वचन तथा कर्म की साम्यता को आघात नहीं पहुँचाऊँ। मैं विश्व के समस्त प्राणियों के साथ समभाव बनाऊँ तथा अपने उदाहरण के आदर्श से उनमें भी समभाव जगाऊँ।

मैं मानता हूँ कि समभाव के इस जागरण के लिए त्याग भाव के विकास की अपेक्षा रहती है। त्याग स्व-कल्याण के लिए या पर-कल्याण के लिए। वास्तविक त्याग किसे कहते हैं? वस्तुतः वही त्यागी कहलाता है जो मनोहर और प्रिय भोगों के उपलब्ध होने पर भी स्वाधीनतापूर्वक उन्हें पीठ दिखा देता है यानी कि छोड़ देता है। जो पराधीनता के कारण विषयों का उपभोग नहीं

कर पाते, उन्हें त्यागी नहीं कहा जा सकता। मूल बात यह है कि यथार्थ रूप में त्याग के साथ त्याग की स्वतन्त्र एवं उच्च भावना भी होनी चाहिए। भावहीन त्याग महत्वपूर्ण नहीं होता। त्याग-भाव के दृढ़ बनने पर सेवा और साधना की वृत्ति पनपेगी, जिसका मानवीय मूल्यों की प्रतिष्ठा के सत्कार्य में सदुपयोग किया जा सकता है। एक साधक को सुख-सुविधा की भावना से निरपेक्ष रहकर उपशान्त एवं दंभरहित होकर कार्य करना चाहिए। उसका अपनी कामनाओं और इच्छाओं पर भी निरोध होना चाहिए क्योंकि स्वयं ही दल-दल में फंसा रहेगा तो स्व-पर कल्याण कैसे साधेगा ?

साधना को लक्ष्य बनाकर मेरा चिन्तन भी चलता है कि मैं समभाव को केन्द्र में रखकर संयमपूर्ण साधना में निमग्न बनूँ और मानवता की संरचना में अपना योगदान

दूँ। मेरी साधना प्रभावशाली बन जाए, तब भी मैं पूजा प्रतिष्ठा के फेर में न पड़ूँ, यश की भूख भी नहीं रखूँ तथा मान-सम्मान के पीछे दौड़ता न फिरूँ। अपनी साधना में जागृत रहकर प्रतिदिन रात्रि के प्रारंभ और अन्त में सम्यक् प्रकार से आत्म-निरीक्षण करता रहूँ कि मैंने क्या सत्कर्म किया है तथा करणीय कर्म क्या नहीं किया है? और वह कौनसा कार्य बाकी है जिसे मैं कर सकने में सक्षम होने पर भी नहीं कर रहा हूँ।

मैं इस प्रकार अपने पुरुषार्थ का प्रतिदिन लेखा-जोखा लेता रहूँ तो मेरा विश्वास है कि मैं विपथगामी नहीं बन सकूँगा। इस लेखे-जोखे से मेरा पुरुषार्थ सक्रिय भी रहेगा और सन्मार्ग नियोजित भी।

साभार- नानेशवाणी-3



मिती मे सव्वभूएसु

संस्कार सौरभ

खामेमि सव्वजीवे, सव्वे जीवा खमंतु मे। मिती मे सव्वभूएसु, वेरं मज्झं न केणई।।

“सब जीवों को मैं क्षमा करता हूँ, सब जीव मुझे क्षमा करें। सभी जीवों के प्रति मेरे हृदय में मैत्री है, मुझे किसी से भी वैर नहीं है।” इस भावना में व्यक्ति ने संपूर्ण जीवों के प्रति अपने मैत्रीभाव को बतलाया है कि यदि किसी ने मेरा अपराध कर दिया हो या ज्ञात-अज्ञात भाव से बुरा विचार किया हो तो भी मैं उनको क्षमा करता हूँ और इसी प्रकार मेरे द्वारा भी मनसा, वाचा, कर्मणा से अपराध हो गया हो तो क्षमा करते हुए अपना ही मानें। मुझे किसी से भी वैर नहीं है, प्रत्युत मित्रता है अर्थात् हम सब एक हैं। इसमें ‘वसुधैव कुटुम्बकम्’ का आदर्श स्पष्टतया झलक रहा है।

इसमें विशेष ध्यान देने योग्य बात यह है कि मात्र मानव से ही नहीं किंतु इस चराचर विश्व के जितने भी ऊर्ध्व, मध्य, अधोलोक में विद्यमान एकेन्द्रिय से लेकर पंचेन्द्रिय तक के प्राणी हैं, उनके प्रति मैत्रीभाव अभिव्यक्त किया गया है। इससे यह फलित होता है कि जैसा व्यवहार हम अपने लिए चाहते हैं वैसा ही दूसरों के

प्रति हो। जैसी आवश्यकताएं हमारी हैं वैसी ही दूसरों की हैं। जैसी जीने की आकांक्षा हमारी है वैसी ही दूसरे भी रखते हैं। अतएव हम किसी से वैर नहीं रखेंगे तो दूसरे भी हमारे प्रति वैर-द्वेष नहीं रख सकते। इस भावना का विस्तार होने पर अहंकार नष्ट हो जाता है।

बंधुत्व की भावना ही जीवन है। उसका आचरण ही जीवन का आनंद है। सफलता की यह कसौटी है। आनंद, निर्भयता आदि जिन गुणों की जीवन में आवश्यकता का अनुभव होता है, वे सब विश्व के जीवमात्र के प्रति बंधुत्व की भावना से ही प्राप्त हो सकते हैं।

‘मिती मे सव्वभूएसु’ की भावना अन्तर्मुखी वृत्ति है। इसमें आत्म-निरीक्षण करना पड़ता है। इसका संबंध बाह्य पदार्थों से नहीं है। मैत्री (क्षमा) भावना आध्यात्मिक जीवन की सबसे बड़ी शक्ति है।

मैत्री के राजमार्ग पर चलकर व्यक्ति दुःख, क्लेश, आपदाओं से बचता है। संतुष्ट मानवता और भयभीत प्राणियों की ओर से विश्व की पुकार और युग की मांग है- मिती मे सव्वभूएसु।



संवत्सरी

—परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलालजी म.सा.

कल में शब्दकोश देख रहा था। उसमें एक शब्द आया है— 'संवत्सरी'। उसका मतलब लिखा था 'मरण दिवस'। मैंने सोचा— अरे! यह क्या बात है? सालभर में बरसी आती है, जिसे मृत्यु का पुण्य दिवस कहते हैं। वह भी साल में एक बार आता है। वैसे ही उन्होंने भी उस शब्दकोश में संवत्सरी को मृत्यु-दिवस के रूप में लिखा। मैंने सोचा बहुत बढ़िया लिखा है। हमारे द्वारा कषायों को छोड़ना ही संवत्सरी दिवस है। हम कषायों से बंधे हुए हैं। मैं भी और आप भी इसमें शामिल हैं। आप देखें यदि हमने कषायों को छोड़ दिया होता तो फिर यह सूरत चौमासा क्यों होता?

सूरत चौमासा कौन करता? हम कषाय में जी रहे हैं इसलिए चौमासा आदि कराते हैं। चौमासा कराने से मोक्ष नहीं होता। आप देखें भगवान महावीर के भी चातुर्मास हुए हैं और उसमें कई-कई लोग वीतरागी बन जाते थे किन्तु वर्तमान में वीतरागता मुश्किल है। वीतरागी तो कोई होना नहीं है। वीतरागता के निकट पहुंचा जा सकता है या नहीं पहुंचा जा सकता? हम वीतरागता के निकट पहुंच सकते हैं। इस चौमासे की सहायता से हम अपने आप को राग-द्वेष की परिस्थितियों से शांत रख सकते हैं। एक बीज को भी भीतर में पैदा मत होने दो। किसी भी प्रकार के कचरे को भीतर में इकट्ठा मत होने दो।

चौमासी निकल गई तो पक्खी का इंतजार करो। अपने भीतर के कोने-कोने को देखो। कहीं पर कोई भी कचरा बचा हुआ तो नहीं है ना! कचरा निकालते समय अकसर कोने में कचरा रह जाता है। उस कचरे को निकालना बहुत जरूरी है। जब घर में कोई विशेष दिन होता है तो कोनों को भी अच्छी तरह से साफ किया

जाता है। ऊपर-नीचे अच्छी तरह से साफ किया जाता है। घरों की साफ-सफाई के पीछे क्या उद्देश्य होता है? उद्देश्य होता है कि साफ-सफाई से कोई जीव या मच्छर आदि पैदा नहीं होंगे और हम स्वस्थ रहेंगे।

हम शरीर को स्वस्थ रखने की सोचते हैं, किन्तु यह नहीं सोचते कि शरीर के साथ हमारे विचार, हमारे भाव, हमारी भावना भी स्वस्थ रहनी चाहिए। उसमें छल-छद्म आदि की कोई भी बीमारी नहीं होनी चाहिए। हमारी भावनाएँ स्वस्थ हैं तो शरीर जल्दी से बीमार नहीं पड़ेगा। शरीर जल्दी से रुग्ण नहीं

होगा। भावनाओं का हमारे मन पर बहुत गहरा असर होता है। इसलिए भगवान ने कहा है कि अपनी पूर्वाग्रह की बातों को हटाओ। वे हटेंगी तो विग्रह, विवाद, क्लेश, संक्लेश अपने आप ही शांत और ठण्डे हो जाएंगे। फिर उनको पीछे से पॉवर नहीं मिलेगा। जिसको ऊपर से पानी और नीचे से खाद मिलती रहती है, वह पनपता रहता है। यदि यह नहीं मिले तो वह पनपेगा नहीं।

जैसे ही भीतर का कचरा दूर होगा वैसे ही पूर्वाग्रह भी शांत हो जाएगा। फिर भीतर में संक्लेश, विवाद, विग्रह जैसी चीजें पैदा नहीं होंगी। कुछ संस्कार भी पूर्वाग्रह में बने रहते हैं। हमको उनकी भी सफाई करनी पड़ेगी। उनको भी हमें साफ करना पड़ेगा। उनको साफ करेंगे तो फिर हम जान पाएंगे कि कितना खुशहाल जीवन जीया जा सकता है, कितने आराम से जीया जा सकता है, कितने आनंद से जीया जा सकता है!

साभार— राम उवाच—13

ऐसी वाणी बोलिए हित वचन

15-16 जुलाई 2022 अंक से आगे...

‘ऐसी वाणी बोलिए’ धारावाहिक प्रतिमाह आपके समक्ष आ रहा है। क्रमशः इस धारावाहिक में आप ‘हित वचन’ के ध्यातव्य बिन्दु पढ़ रहे हैं। इसमें बिन्दु संख्या 3 व 4 आप पढ़ चुके हैं। अब इस अंक में ‘डराने वाली बातें करना, दुराशीष देना या दुर्वचन कहना तथा महाशतक व रेवती का वर्णन’ आदि बिन्दुओं को समाहित किया गया है। इन्हें पढ़कर जीवन में उतारने का प्रयास करें।

5 डराने वाली बातें करना

★ नय वित्तासए परं

किसी भी अन्य जीव को त्रास मत दो (दुःखी मत करो) (श्रीमद् उत्तराध्ययन सूत्र 2/20)

* हर जीव निर्भीक व निश्चित रहना चाहता है अतः किसी के भी सामने ऐसे वचन नहीं कहने चाहिए जिससे वह भयभीत होकर चिंता में पड़ जाए। यह भी असाता वेदनीय कर्म बंध का कारण बनता है। (असाता वेदनीय कर्म बंध के कारण जानने के लिए देखें - कर्मबंध एवं हमारा जीवन)

(A) छोटे बच्चों को डराना ‘खाना खा नहीं तो काला बाबा पकड़ के ले जायेगा’, साधु-संतों के नाम से डराना, ‘बदमाशी करेगा तो म.सा. अपनी झोली में डालकर ले जायेंगे’ अथवा कहना ‘चुपचाप बैठ जा वरना मार-मारकर अंधेरे कमरे में बंद कर दूंगी/दूंगा।’

एक मां ने केवल डराया ही नहीं एक दिन करके भी दिखा दिया ‘डरा धमकाकर अंधेरे बाथरूम में बंद कर दिया’ बच्चा खूब रोया-चिल्लाया, पर मां ने सोचा थोड़ी देर डरेगा तो सबक मिल जाएगा। इसी बीच उस बच्चे ने फिनाइल की शीशी देखी और पीने की चीज समझकर पी गया। कुछ देर में ही काल धर्म को प्राप्त हो गया। बच्चे को तो सबक मिला या नहीं मिला मां को जरूर मिल गया।

Note - जिसे बचपन में डराया जाता है वह भविष्य में भी डरपोक रह जाते हैं। अतः डराकर कोई काम नहीं करवाना चाहिए, वरन् समझाकर कराना चाहिए।

(B) पढ़ाई में कमजोर बच्चे को डराना ‘इस बार अच्छे नम्बर नहीं लाया तो मेरे से बुरा कोई नहीं होगा।’ मां-बाप अपने बच्चों की क्षमता को समझे बिना उन्हें IIT, PMT आदि की पढ़ाई करने बाहर भेज देते हैं फिर बार-बार कहते रहते हैं ‘अच्छे से पढ़ना, IIT में पढ़ना ही है, हम तेरे लिए इतना खर्च कर रहे हैं, हमारे पैसे बर्बाद मत करना आदि’ इस प्रकार कहने से भी बच्चों में एक मानसिक डर पैदा होता है, जिससे कई बच्चे डिप्रेशन में चले जाते हैं और आत्महत्या (Suicide) तक कर लेते हैं।

सही तरीका :- ‘आप मन लगाकर पढ़ाई करो, अनुभव लो, पर परिणाम की चिंता मत करना, हमारी तरफ से कोई प्रेशर नहीं है। लाइफ में हमेशा बहुत सारे विकल्प (Options) होते हैं इसलिए मस्त रहना’।

(C) कर्ज वसूली के लिए धमकियां देना ‘मेरे पैसे दे दे वरना मैं तुझे छोड़ूंगा नहीं’ ‘जान प्यारी है तो पैसा चुका दे वरना सड़क पर गुंडों से मरवाऊंगा, घर से बाहर निकलना दूभर हो जाएगा आदि’

Note - श्रावक धर्मनिष्ठ व्यक्ति है, इसलिए उससे अपेक्षा रखी जाती है कि वो किसी भी परिस्थिति में दया करुणा एवं अपनी मर्यादा न छोड़े।

(D) घर के बड़ों को, वृद्धों को कुछ भी कहने पर एक ही धमकी देना 'चुपचाप रहो, ज्यादा बोलोगे तो हम अलग हो जायेंगे, पड़े रहना अकेले कोई पूछने वाला भी नहीं मिलेगा।'

(E) किसी बीमार के पास साता पूछने जाना और उसके सामने कहना 'बाप रे ये बीमारी तो बहुत खतरनाक है, जल्दी से ठीक ही नहीं होती। अमुक व्यक्ति को हुई थी, वो तो बेचारा चला ही गया। हमें तो आपकी चिंता हो रही है, कैसे क्या होगा?'

सही तरीका :- जिस परिस्थिति में दूसरा है उसमें यदि हम होते तो कैसे शब्द सुनना पसंद करते, वैसे ही शब्दों का प्रयोग दूसरों के लिए करना चाहिए।

प्रेरक प्रसंग

विल्मा रूडोल्फ (Wilma Rudolf), U.S.A. में एक गरीब परिवार में जन्मी। वह 22 भाई-बहनों में 20वें नम्बर पर थी। वह शरीर से कमजोर थी। 4 साल की उम्र में उसे डबल निमोनिया हो गया। इस बीच उसके बाएं पैर ने काम करना बंद कर दिया। पोलियो वायरस के अटैक से उसका पैर पैरालाइज्ड हो गया। डॉक्टरों ने कहा- 'तुम अब कभी-भी नहीं चल पाओगी, पर उसकी मां ने उससे कहा-तुम जरूर चलोगी, निश्चित रहो, मैं तुम्हारे साथ हूँ। उसकी माता ने उसकी बहुत सेवा की। उसके मन में भी विश्वास जग गया।

9 साल की उम्र में उसने अपने पैरों से आइरन ब्रेस (Iron Brace) निकाल दिया और डॉक्टरों के मना करने पर भी जमीन पर अपना पहला कदम रखा। चार सालों में वह बड़े कदम रखने लगी। 13 साल की उम्र में उसने रेस में पार्टीसिपेट किया, जिसमें वो सबसे आखरी स्थान पर रही। अनेक बार आखरी स्थान पाने के बाद एक दिन वो 2nd आई। एक दिन 1st आई। 16 साल की उम्र में उसने Olympic (1956) में हिस्सा लिया, 1960 में पुनः हिस्सा लिया और सबसे तेज दौड़ने वाली जर्मनी कन्या Jotta Heine से भी आगे निकलकर विजेता बनी। उसने Olympic में 3 बार गोल्ड मेडल प्राप्त किया। कहने का सार सिर्फ इतना ही है कि माता के सकारात्मक वचनों ने उसके डर को खत्म कर दिया और उसे पूर्णतया स्वस्थ कर दिया।

Note - श्रावक अपने वचनों द्वारा किसी को भयभीत न करे।

6 दुराशीष देना अथवा चुभने वाले दुर्वचन कहना

★ 'समाहिकारणं तमेव समाहिं पडिलभति'

समाधि (सुख) देने वाला समाधि पाता है। (श्रीमद् भगवती सूत्र 7/1)

* किसी के कुकृत्यों से परेशान होकर कई बार व्यक्ति मुंह से दुराशीष वाले वचन कह देता है। वे वचन सुनने वाले के लिए तो असमाधि का कारण बनते ही हैं, साथ ही बोलने वाले के लिए भी बनते हैं। ऐसे वचनों से व्यक्ति भीतर ही भीतर घुटता है, उनके सच होने के डर से चिंतित होकर रोता है।

(A) किसी के लिए इस प्रकार कहना- 'उसने मुझे इतना दुःखी किया है, भगवान उसे जरूर सबक सिखाएं, उसे अपनी करनी का ऐसा परिणाम मिले की वो भी हमेशा याद रखे।'

(B) क्रोध के आवेश में किसी के मुंह पर कहना- 'तुम कभी सुखी नहीं रहोगे, सड़-सड़ के मरोगे, कोई पानी पिलाने वाला भी नहीं मिलेगा, अनंत काल तक संसार में भटकोगे।'

(C) बच्चों की हरकतों से परेशान होकर कहना- 'हम तो तेरे से दुःखी हो गए, मर जा जाके।'

Note - कई बार मुंह से निकले वाक्य सत्य हो जाते हैं। सच होने पर वे हमेशा के लिए पश्चाताप का कारण बन जाते हैं। देखें एक सत्य घटना -

एक मां ने गुस्से में आकर अपने बच्चे को जोर से धक्का दिया, बोली- 'जा मर जा।' उस दिन उस बच्चे को डांटा भी बहुत और मारा भी बहुत। थोड़ी देर बाद मौसम बदला और मूसलधार बारिश शुरू हो गई। इतना पानी बरसा कि नदी, नाले, कुएं सब पानी से भर गए। वह बच्चा खेलते-खेलते बाहर निकल गया। उनके घर के पास कुआं था, वह पानी के फोर्स से कुएं में गिर गया... वापस मिला ही नहीं।

★ इस विषय में महाशतक और रेवती का दृष्टांत है।

महाशतक ने अवधिज्ञान का उपयोग लगाकर सत्य ही कहा था, किंतु वह पीड़ाकारी था। अतः भगवान ने उसका निषेध किया।

महाशतक और रेवती का वर्णन

महाशतक (श्रावक) पौषध में थे। रेवती (उनकी पत्नी) शराब के नशे में आकर महाशतक को पौषध में विचलित करने लगी और बोली- 'तुम मेरे साथ विषय सुख क्यों नहीं भोगते, तुम्हें धर्म, पुण्य, स्वर्ग, मोक्ष से क्या मिलेगा?' महाशतक पहले तो चुप रहे, पर जब उसने 2-3 बार यही कहा, तो उन्हें क्रोध आ गया। वे अवधिज्ञानी थे, अतः उन्होंने अपने ज्ञान में देखकर कहा - 'मौत को चाहने वाली रेवती, तू 7 रात के अंदर अलसक नामक रोग से पीड़ित होकर दुःखी तथा विवश होती हुई आयु पूरी होने पर अशांतिपूर्वक मरकर पहली नरक में उत्पन्न होगी।'

भगवान ने फरमाया- 'पूर्ण रूप से सत्य कथन भी जो इष्ट न हो, सुनने में अप्रिय हो, जिसे सुनने से मन में अप्रीति हो, जिसे मन न बोलना चाहे, न सोचना चाहे, न स्वीकार करना चाहे ऐसे शब्द मारणांतिक संलेखना की आराधना में लगे हुए अनशन (तप अवस्था) में बोलना अकल्पनीय है। अतः उसे (महाशतक को) आलोचना कर लेना चाहिए। भगवान के इस कथन को गौतम स्वामी ने स्वयं जाकर महाशतक से कहा-तब उन्होंने एक बार में स्वीकार करते हुए कहा- 'आप ठीक फरमाते हैं।'

इससे एक बात यह स्पष्ट होती है कि महापुरुष उसी को समझाते हैं अथवा उसी को गलती बताते हैं जो योग्य होता है, जो स्वीकार करने में तत्पर होते हैं।

(विस्तार के लिए देखें श्री उपासक दशांगसूत्र 8वां अध्याय)

क्रमशः



हम ध्यान रखें कि तीर्थंकर की देशना, आगमवाणी, केवल संकेत मात्र करती है, सिर्फ टच (स्पर्श) करती है और उस संकेत को पकड़कर उस दिशा में मार्ग बनाना होता है।

-परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलालजी म.सा.

श्रीमद् भगवतीसूत्र

15-16 जुलाई 2022 अंक से आगे...

संकलनकर्ता- कंचन काँकरिया, कोलकाता

ज्ञान का वर्णन श. 8 उ. 2

पूर्वापर संबंध - ज्ञान के ही भेदों का वर्णन किया जा रहा है। इस उद्देशक के मूल पाठ में श्रीमद् नंदीसूत्र का अतिदेश (भोलावण) किया गया है, तदनुसार प्रस्तुत वर्णन है।

प्र. 2306 ज्ञान किसे कहते हैं ?

उत्तर जिससे तत्त्व का अवबोध (जानकारी) हो, उसे ज्ञान कहते हैं। निश्चयनय से हेय को जानकर उसका त्याग करना ही ज्ञान है।

(1. तत्त्व- वस्तु का स्वरूप, 2. हेय- मानसिक, वाचिक, कायिक हिंसा हेय है।)

प्र. 2307 ज्ञानार्जन क्यों करना चाहिए ?

उत्तर ज्ञानार्जन करने से अनादिकाल से जीवन में रहे हुए काम, क्रोध, मोहादि जड़-मूल से नष्ट हो जाते हैं और ज्ञान का महाप्रकाश प्रकट होता है, जिससे आत्मा में शांत और सुखद वातावरण तैयार होता है। इसलिए श्रीमद् उत्तराध्ययनसूत्र के 26वें अध्ययन में भगवान महावीर ने मुनि जीवन का आधा भाग ज्ञानार्जन के लिए नियत किया है। (मुनि जीवन का आधा भाग यानी दिन-रात के मिलाकर कुल 12 घंटे)

प्र. 2308 भंते! ज्ञान कितने प्रकार का कहा गया है ?

उत्तर गौतम! ज्ञान पाँच प्रकार का कहा गया है। यथा- आभिनिबोधिकज्ञान (मतिज्ञान), श्रुतज्ञान, अवधिज्ञान, मनःपर्यवज्ञान और केवलज्ञान।

प्र. 2309 पाँच ज्ञान का यह क्रम क्यों है ?

उत्तर 1. सर्वप्रथम मतिज्ञान कहा गया है, क्योंकि मति-ज्ञानपूर्वक ही श्रुतज्ञान होता है।
2. यद्यपि मति-श्रुत के साथ अवधि की कई बातों में समानता है। जैसे- मिथ्यात्व के उदय से मति-श्रुतज्ञान, अज्ञान रूप परिणत हो जाता है, उसी प्रकार मिथ्यात्व के उदय से अवधिज्ञान भी विभंगज्ञान रूप परिणत हो जाता है, किन्तु अवधि विशिष्ट विशुद्धि से प्राप्त होता है इसलिए मति-श्रुत के बाद अवधि कहा गया है।
3. यद्यपि मनःपर्यवज्ञान भी अवधि के समान रूपी द्रव्यों को ही जानता-देखता है, तथापि मनःपर्यवज्ञान विशुद्धतर (अप्रमत्त) परिणामों में प्राप्त होता है इसलिए अवधिज्ञान के बाद मनःपर्यवज्ञान कहा गया है।
4. केवलज्ञान की प्राप्ति विशुद्धतम परिणामों में होती है एवं यह सबसे अन्त में प्राप्त होता है। इसलिए इसका निर्देश सबसे अन्त में किया गया है।

साभार- श्रीमद् भगवतीसूत्र प्रश्नमाला

-क्रमशः



श्रीमद् उत्तराध्ययन सूत्र

नमिपव्वज्जा

15-16 जुलाई 2022 अंक से आगे...

संकलनकर्ता- सरिता बैंगानी, कोलकाता

पूर्व चित्रण- जब नमिराजर्षि ने देवलोक के समान सुखों को त्यागकर अभिनिष्क्रमण (दीक्षा) करने का दृढ़ संकल्प किया तब पहले देवलोक के इन्द्र देवराज शक्रेन्द्र स्वयं राजर्षि की परीक्षा लेने ब्राह्मण वेश में आए कि यह त्याग क्षणिक है या वास्तविक वैराग्य है। इन्द्र ने नमिराजर्षि को स्वजनों के प्रति, अन्तःपुर के प्रति, नगर के प्रति, अपने प्रासादों के प्रति तथा नृपति धर्म के प्रति कुछ भी राग नहीं है इस बात की परीक्षा कर ली। अब इससे आगे...

ब्राह्मण वेशधारी इन्द्र नमिराजर्षि की इस बात की परीक्षा लेना चाहते हैं कि इनमें द्वेष है या नहीं। इन्द्र जो कहते हैं, सो सुधर्मा स्वामी ने इस प्रकार कहा-

6. उदण्ड राजाओं को वश में करने के सम्बन्ध में-

**जे केइ पत्थिवा तुज्झं, नाणमंति नराहिवा।
वसे ते ठावइत्ताणं, तओ गच्छसि खत्तिया!।।32।।**

भावार्थ- हे नराधिपति! जो कोई राजा आपके सामने नहीं झुकते हैं अर्थात् आज्ञा नहीं मानते हैं, हे क्षत्रिय! आप उन्हें वश में करके बाद में दीक्षा ग्रहण करें।

इन्द्र द्वारा कथित हेतु और कारण- एक सामर्थ्यवान क्षत्रिय का कर्तव्य होता है कि नहीं झुकने वाले राजाओं से नमन कराना चाहिए, जैसे नराधिपति भरत आदि ने किया। राजाओं को जीते बिना प्रव्रजित होने से आप में क्षत्रियत्व एवं नराधिपतित्व घटित नहीं होता है। इसलिए हे राजन्! आपका प्रव्रजित होना अनुचित है। फिर नमिराजर्षि ने इन्द्र को इस प्रकार कहा-

**जो सहस्सं सहस्साणं, संगामे दुज्जे जिणे।
एगं जिणेज्ज अप्पाणं, एस से परमो जओ!।।34।।**

भावार्थ- दुर्जय संग्राम में जो दस लाख सुभटों को जीत लेता है उसकी अपेक्षा एक आत्मा को जीत लेना ही परम विजय है।

संगामे दुज्जे- अर्थात् जहाँ युद्ध में विजय की प्राप्ति दुर्लभ है।

नमिराजर्षि के उत्तर का आशय- दुर्लभ बाह्य वस्तुओं को जीत लेने पर भी क्या लाभ होगा? आत्मा को जीतने की इच्छा करना ही सर्वश्रेष्ठ है। अनंतज्ञान, अनंतदर्शन, अव्याबाध सुख आदि इन आत्मगुणों का घात करने वाले स्पर्श, रसना, घ्राण, चक्षु एवं कर्ण ये इन्द्रियाँ और मन, मिथ्यात्व, अविरति, प्रमाद तथा क्रोध, मान, माया, लोभ इन कषायों के युद्ध को जीत लेना ही उत्कृष्ट विजय है। अतः स्वयं को स्वयं के साथ ही संग्राम करने की आवश्यकता है, क्योंकि इस एक आत्मा को जीत लेने पर बाह्य शत्रु को जीत लेने का अलग से प्रयास ही नहीं करना पड़ता है। आत्म-विजयी के बाह्य वैरी होते ही नहीं हैं। इसलिए हे विप्र! इन बाह्य राजा आदि को छोड़कर सर्वप्रथम मैं अपनी आत्मा को निग्रहित करने के लिए प्रवृत्त हुआ हूँ। अतः बाह्य वैरियों को जीतने का आपका कथन दूषित है।

जब राजर्षि ने यह कहा तब इन्द्र ने स्पष्ट रूप से जान लिया कि इनके मन में द्वेष भाव नहीं है। तब 'धर्म के प्रति इनमें

कितनी स्थिरता है?’ इस बात को जानने के लिए इन्द्र फिर कहते हैं-

7. यज्ञ, ब्राह्मण भोजन, दान और भोग करके दीक्षा ग्रहण के सम्बन्ध में-

**जइत्ता विउले जण्णे, भोइत्ता समण-माहणे।
दच्चा भोच्चा य जिट्ठा य, तओ गच्छसि खत्तिया!!38।।**

भावार्थ- हे क्षत्रिय! विपुल यज्ञों को ब्राह्मणों द्वारा करवाकर तथा श्रमणों और ब्राह्मणों को भोजन करवाकर तथा उन ब्राह्मणों को दक्षिणा रूप में (गौ, भूमि एवं स्वर्ण आदि) दान देकर तथा भोगों को भोगकर एवं यज्ञ करके फिर दीक्षा ग्रहण करें।

इन्द्र द्वारा कथित हेतु और उदाहरण- यज्ञ, दान आदि प्राणियों के लिए प्रीतिकारक हैं। इसलिए जो कार्य प्राणियों के लिए प्रीतिकारक हैं, उसे करना धर्मजनक पुरुष का कर्तव्य होता है। अतः हे राजन्! आप जब तक यज्ञ नहीं करते-कराते, गौ आदि का दान स्वयं नहीं देते-दिलाते तथा श्रमणों-ब्राह्मणों को भोजन नहीं कराते और स्वयं शब्दादि विषयों का उपभोग नहीं करते तब तक आपका दीक्षित होना अनुचित है, फिर राजर्षि ने इस प्रकार कहा-

**जो सहस्सं सहस्साणं, मासे मासे गवं दए।
तस्सावि संजमो सेओ, अदिंतस्स वि किंचणं।।40।।**

भावार्थ- जो व्यक्ति प्रतिमास दस लाख गायों का दान करता है, उसकी अपेक्षा जो संयम पालन करता है और कुछ भी नहीं देता है, उसका संयम ही सर्वश्रेष्ठ है।

नोट- 1. प्रतिमास दान करने वाला- अन्तराय कर्म का क्षयोपशम हो तो दान दे पाता है।

2. अभय दान देने वाला (संयम पालन)- चारित्र मोहनीय कर्म का क्षयोपशम हो तो अभयदान दे पाता है।

इस शास्त्र वाक्य (गाथा) में ब्राह्मण वेषधारी इन्द्र ने राजर्षि के समक्ष ब्राह्मण परम्परा में प्रचलित चार विषय प्रस्तुत किये- यज्ञ, ब्राह्मण-भोजन, दान और भोग सेवन। जबकि राजर्षि ने उसमें से केवल एक दान का ही उत्तर दिया है। ऐसा क्यों?

नमिराजर्षि के उत्तर का आशय- यज्ञ, ब्राह्मण-भोजन तथा भोग भोगना सावद्य है अर्थात् इनमें पशुवध तथा स्थावर जीवों की हिंसा होती है। यह प्राणियों के लिए प्रीतिकारक नहीं होता है अतः राजर्षि का अभिप्राय है कि इन्द्र द्वारा धर्म जनकता का यह उदाहरण सर्वथा अनुचित है।

योग्य पात्र को दान देना पुण्यजनक होता है। फिर भी वह दान संयम पालन के लाभ की अपेक्षा अंश मात्र भी नहीं है। क्योंकि दान से तो कुछ प्राणियों का ही उपकार होता है, किन्तु संयम पालन से समस्त प्राणियों (छः कायिक) की रक्षा होती है। इस कथन से दान की अपेक्षा संयम पालन की पुण्यजनकता सिद्ध होती है।

-क्रमशः

जितनी निर्मलता : उतनी तीक्ष्णता

-परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री नानालालजी म.सा.

आन्तरिक तत्त्वों को देखने के लिए ज्ञान की तीक्ष्णता का होना आवश्यक है अर्थात् ज्ञान की जितनी निर्मलता बढ़ेगी, उतनी ही तीक्ष्णता की स्थिति बनती जाएगी। ज्ञान की निर्मलता जीवन की निर्मल अवस्था पर अवलम्बित है। जीवन को निर्मल बनाने के लिए भौतिक वस्तुओं पर से ममत्व हटाना आवश्यक है।

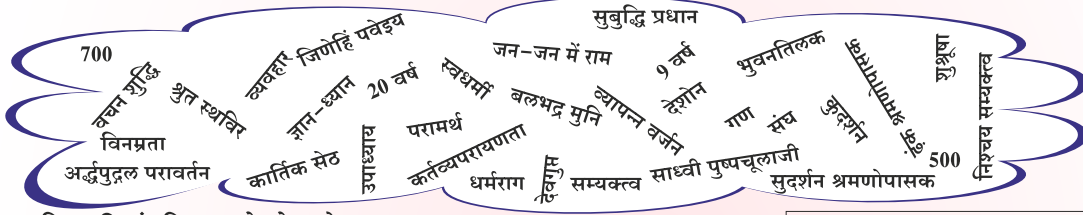


प्रश्नोत्तरी

(समकित के 67 बोल)

जय जिनेन्द्र!

अभी तक आपने समकित के 67 बोलों में से 4 बोलों का अध्ययन-पठन श्रमणोपासक में कर चुके हैं। इन बोलों में से कुछ प्रश्न आप सभी के समक्ष हैं, जिनके उत्तर आपको नीचे दिए गए बॉक्स में से छांटकर देने हैं।



1. किसकी संगति त्यागने योग्य है ?
2. जिसने सम्यक्त्व को छोड़ दिया है उसकी संगति नहीं करें ?
3. प्रियदर्शना साध्वी का भ्रम दूर करने वाला ?
4. तमेव सच्चं णीसंकं जं।
5. स्थानांग, समवायांग के ज्ञाता ?
6. जिनके पास रहकर शास्त्रीय अध्ययन किया जाता है ?
7. विनय की मूर्ति ?
8. महत्तम महोत्सव की एक प्रवृत्ति ?
9. एक आचार्य परम्परा में स्थित साधक वर्ग ?
10. हरि, ब्रह्मा, चण्डी, चामुण्डा आदि की आराधना करने के लिए नहीं जाना ?
11. जिनकी पीठ पर गरम-गरम खीर युक्त थाली रखकर राजा ने भोजन किया ?
12. राग-द्वेष की ग्रंथी का भेदन करना ?
13. मुक्ति पाने का एक अमोघ उपाय ?
14. काल में जीव अवश्य मोक्ष प्राप्त करता है ?
15. नवतत्त्व ?
16. परमार्थ की संगति से कौन सिद्ध-बुद्ध-मुक्त हुई ?
17. मारणांतिक उपसर्गों से भी भयभीत नहीं हुए ?
18. सम्यग्दृष्टि की वैयावृत्य का रूप ?
19. भरतजी और बाहुबलिजी ने पूर्वभव में कितने मुनियों की सेवा की ?
20. श्रेष्ठ धर्म क्रियाओं में प्रीति होना ?
21. प्रब्रज्या स्थविर का कम से कम दीक्षा पर्याय ?

कृपया अपने उत्तर साफ एवं स्पष्ट शब्दों में प्रश्न के सामने लिखकर व्हाट्सएप नं. **9314055390** एवं ईमेल **news@sadhumargi.com** पर **5 सितम्बर 2022** तक भेजने का लक्ष्य रखें। साथ में अपना पूरा नाम, मोबाइल नं. एवं अंचल (क्षेत्र) का नाम जरूर लिखें।

पर्युषण में आत्मरमण

-डॉ. रेणु रघुवीर, उदयपुर

पर्युषण पर्व जैन मतावलम्बियों के जीवन में विशिष्ट स्थान रखता है। प्रतिवर्ष भाद्रपद मास में यह महापर्व सोए हुए मानव मन को झकझोरने, जगाने, मार्गदर्शन करने, संभालने के लिए आता है। यह पर्व आत्मा को जगाकर उसे उत्थान की ओर बढ़ने के लिए प्रेरित करता है। इससे चित्त में दिव्य प्रकाश फैलता है। यह पर्व हमें आत्मा में रमण करने का राजमार्ग प्रदर्शित करता है।

पर्युषण का शाब्दिक अर्थ भी यही है- “चारों ओर से हटकर स्वयं में वास करना, स्वयं में स्थित हो जाना, आत्मा में रमण करना।” बसन्त के मौसम में पुष्प पल्लवित होते हैं, वैसे ही भाद्रपद में पर्युषण पर्व के आते ही श्रावकों का आत्मा रूपी चमन खिल उठता है। मनभावन, सुहावना मौसम, अनुकूल वातावरण चित्त में शांति भर देता है। श्रावक नई ऊर्जा, नई स्फूर्ति व नई ताजगी के साथ उठ खड़ा हो जाता है।

पर्युषण में हमें यदि आत्मा में लीन रहना है तो जाहिर है कि कषायों से मुक्त होने का प्रयत्न करना होगा। इन्द्रियों को विषयों से दूर करने की ओर कदम बढ़ाना होगा। वैरभाव भूल कर मैत्री का गान गाना होगा। अपने अवगुणों, कमजोरियों को पहचान कर उखाड़ फेंकना होगा। मन में दया व करुणा का भाव भरने का संदेश भी पर्युषण पर्व हमें देता है।

पर्युषण में तप भावना का प्रबल प्रवाह मन में हिलोरे खा रहा होता है। अधिक से अधिक तप कर हम कर्मों की निर्जरा का लाभ ले सकते हैं।

यूँ तो वर्षपर्यंत धर्मारोधना का चक्र चलना चाहिए,

किन्तु पर्युषण पर्व में मन के कचरे को साफ करने का सघन अभियान चलाना चाहिए। चित्त के कषायों, राग-द्वेष, मोह-माया, कुविचारों के कचरे को बुहार कर सारा कचरा बाहर फेंक कर मन को शुभ विचारों, भावों से भरना होगा। इस तरह हम आत्मकल्याण की पूर्व तैयारी कर यज्ञ में कूद पड़ें।

इन समस्त धर्मारोधना के लिए पुरुषार्थ की आवश्यकता है। हमारे साहस की पुरजोर आजमाइश का पर्व है पर्युषण। हम भी चट्टान को चीर कर रख देने वाली हिम्मत, आत्मबल व धरती की छाती को फाड़कर अंकुरित होने वाले बीज के अदम्य साहस का परिचय दें और आत्मगुणों को प्रकाशित करें। दृढ़ संकल्प से किया गया कार्य सफलता अवश्य देता है।

पर्युषण पर्व में अनवरत जिनवाणी प्रवाहित होती है, साधु-साध्वियों का सतत सत्संग प्राप्त होता है, विवेकपूर्ण ज्ञान की गंगा लगातार बहती है। आवश्यकता है लक्ष्य की ओर पहुँचने के लिए कदम बढ़ाने की। सब ‘पर’ को छोड़कर केवल आत्मा ‘स्व’ के साथ जी सकें। आत्मा को अनुभव कर सकें तो निश्चित ही हमारा ये पुरुषार्थ कुछ नया घटित कर सकता है।

शारीरिक दुर्बलता, मानसिक परेशानियों को अपने ऊपर हावी न होने दें। आत्मविश्वास को बनाए रखें। याद रखें, आप (आत्मा) इस शरीर के मालिक हैं, शरीर आपका (आत्मा का) मालिक नहीं है। आत्मा में अनन्त शक्ति है, इस तथ्य को भूलें नहीं।

पर्युषण पर्व में हमें वार्षिक आत्मावलोकन भी करना है। वार्षिक ही क्यों अपने जीवन के लेखे-जोखे पर एक पैनी दृष्टि डालें, जांच-पड़ताल करें। कितना जीवन नीतिपूर्वक, धर्ममय, न्यायपूर्वक बीता, कितना भ्रष्टाचार, अनीति, कदाचार में बीता। एक ईमानदार समीक्षा करें। जहां कमी रह गई हो उसे सुधारने की

श्रुमणिपासक

योजना बनाएं व जो कार्य अच्छे किए उन्हें और आगे बढ़ाने का प्रारूप तैयार करें।

पर्युषण पर्व 'क्षमा का पर्व' भी कहलाता है। यह क्षमा करने और क्षमा मांगने का पर्व है। बहुत हल्का महसूस करते हैं हम जब किसी से सच्चे दिल से क्षमा मांगते हैं व उदारता रखते हुए किसी को क्षमा कर देते हैं। प्रयोग करके देखिए। कठिन अवश्य है, लेकिन असंभव नहीं। ये पर्व हमें सीख देता है कि सदा के लिए वैर अनुबंधों को तोड़कर मैत्री का नया अनुबंध तैयार कर उस पर हस्ताक्षर करें।

अपनी भूलों का पश्चात्ताप करने से मन का मैल धुल जाता है। अहम् को त्याग कर विनम्र बनने पर ही हम क्षमा जैसे पवित्र भाव मन में पनपा सकते हैं।

पर्युषण पर्व दान देने के लिए भी प्रेरणा देता है। अपनी

क्षमतानुसार दिल खोलकर दान दें। दान, शील, तप व भावना का चिर संदेश पर्युषण पर्व देते हैं। अपनी क्षमतानुसार व्रत व नियमों के प्रत्याख्यान अवश्य लेने चाहिए।

अवसर भी है और अनुकूल वातावरण भी। चारित्रात्माओं का अमूल्य सान्निध्य है। हम चूकें नहीं, और पर्युषण पर्व का पूरा-पूरा धर्म लाभ उठाएं। आत्मा के निकट आएं, आत्मा का अनुभव करें। आत्मा में ही रमण करें व अरिहंतों की शरण स्वीकार करें।

भक्ति रस

आचार्य श्री रामेश का संयमी जीवन

-कान्ता बैद, गाजियाबाद

परम, पुनीत, पतित, पावन,
संयमी जीवन मनभावन।

ज्ञान, ध्यान आपका आनन्दकारी,
विपद हरो, गुरुवर हमारी।

अतिशय आपका महाभारी,
सम्यक् जीवन पर हम बलिहारी।

ज्ञान का खोला विपुल भण्डार,
चहुं ओर हो रही जय-जयकार।

पढ़ना और पढ़ाना, गुनना और गुनगुनाना,
काव्य रचना का क्या कहना।

हे पर उपकारी, तारणहार,
संयम आपका सुखकारी।

तुझे सूरज कहूं या उजियारा,

तुझे चांद कहूं या तारा।

तूने रोशन किया जग सारा,

'नानेश' नाम का ले सहारा।

दीक्षाओं का ठाठ लगाया,

पल-प्रतिपल नया इतिहास रचाया।

'व्यसनमुक्त हो देश' गूंजा नारा,

जीवन सबका है प्यारा।

चन्द शब्दों से अपने भावों को बतलाया,

इस कविता से आपके 'संयमी जीवन' को दर्शाया।

हर कार्य में रखें समभाव

-पायल वया, बंबोरा

एक बार की बात है। एक सेठ के यहाँ एक कारीगर मकान बनाने का काम कर रहा था। समय के साथ-साथ कारीगर बुढ़ा हो गया तो उसने सेठ ने कहा कि अब मैं



मकान की चाबी कारीगर को दे दी।

अब कारीगर मन ही मन में पछता रहा था कि मैंने खुद के घर को ही सही से नहीं बनाया।

“अब पछताए होत क्या, जब चिड़िया चुग गई खेत।”

मतलब यह कि कारीगर पहले की तरह ही काम में मन लगाता तो उसका घर भी सुंदर और अच्छा बनता, जैसे उसने सेठ के लिए बनाया था। अतः कितना ही कार्य हो, यदि व्यक्ति समान ऊर्जा से हर कार्य को करे तो निश्चित ही अंत सुखदायी होगा। इसके लिए भाव शुद्ध रख कर समभाव साधना होगा।

अपने काम से रिटायर होना चाहता हूँ।

सेठ ने कुछ सोचा और कारीगर से कहा कि चलो तो फिर जाते-जाते एक मकान और बना लो। तो कारीगर ने ऊपरी मन से एक और मकान बनाने के लिए हाँ कर दी। अब कारीगर मकान तो बना रहा था, लेकिन उसका मन काम करने में नहीं लग रहा था। सोच रहा था कि सेठ के यहां इतने साल काम किया तो भी जाते-जाते कुछ देने के बदले मुझ से काम करवा रहा है।

इसी सोच से काम करने के कारण घर भी सही से नहीं बना पा रहा था। आखिरकार उसने घर तो बनाया, पर वो उतना सुन्दर, अच्छा नहीं बना, जितना पहले वाला मकान बना था। काम पूरा करके सेठ के पास गया।

सेठ ने कहा- “तुमने पूरी जिंदगी मेरे लिए बेहतरीन मकान बनाए। मैं तुम्हें कुछ देना चाहता हूँ। मैं तुम्हारे काम से बड़ा प्रसन्न हूँ। आज मैं तुम्हें कुछ दूंगा और वह ये है कि तुमने जो घर आखिर में बनाया है, वो मैंने तुम्हारे लिए ही बनवाया है।” इतना कहकर सेठ ने उस

दया

परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री जवाहरलालजी म.सा.

- जो दूसरे को दुःखी देखकर उसके दुःख को आत्मीय भावना से ग्रहण करता है और दूसरे के सुख में प्रसन्न होता है, वही दयालु है, वही धर्मी है, वही कर्तव्यनिष्ठ है।
- अगर आपके अन्तःकरण में दया का वास होगा तो आप ऐसे वस्त्र कदापि नहीं पहनेंगे जिनकी बदौलत संसार में बेकारी और गरीबी बढ़ती है। आप ऐसा भोजन कदापि नहीं करेंगे जिससे आपके भाई-बंधुओं को भूख के मारे तड़प-तड़प कर मरना पड़ता है। आपके प्रत्येक व्यवहार में गरीबों की भलाई का विचार होगा। आपके अन्तःकरण में निर्धनों के दुःखों के प्रति सदा संवेदना जागृत होगी। आप उनके प्रति सदैव सहानुभूतिपूर्ण होंगे और उनके सुख के लिए प्रयत्नशील होंगे। आप उनकी सहायता करेंगे और उस सहायता के बदले उन पर अहसान का बोझ नहीं लादेंगे, वरन् उनका उपकार करके अपने आपको उपकृत समझेंगे।

सामायिक, जैन धर्म की आधारभूत और मौलिक साधना है। सामायिक एक ऐसी उत्कृष्ट साधना है, जिसे देवता भी करना चाहते हैं, लेकिन चारित्र मोहनीय के उदय की वजह से वे सामायिक नहीं कर पाते हैं। सामायिक का वरदान सिर्फ मनुष्य को प्राप्त है। जीवन में अधिकाधिक समभाव और समता का विकास करना सामायिक का लक्ष्य है। यह लक्ष्य वैयक्तिक और आध्यात्मिक जीवन के साथ ही पारिवारिक और सामाजिक जीवन में भी सुख-शान्ति की सृष्टि करता है। सच्ची सामायिक साधना से परिवार और समाज की अनेक समस्याओं को समूल नष्ट किया जा सकता है। द्रव्य सामायिक के साथ जब भाव सामायिक भी जुड़ जाती है तो साधक के विचार, वचन और व्यवहार में प्रेम और मैत्री के सुरभित सुमन खिल उठते हैं। फलतः उसके जीवन का मार्ग रचनात्मक और सकारात्मक हो जाता है।

आध्यात्मिक साधना-

किसी भी तरह के कर्मकाण्ड या आडम्बर से परे सामायिक एक विशुद्ध आध्यात्मिक साधना है।

इसलिए सहज ही यह असाम्प्रदायिक और

सार्वभौमिक साधना है। धूप, दीप, बत्ती, जल, फल, फूल, धान्य, वस्त्र, डोरा, चित्र, मूर्ति, मुद्रा, घण्टा-ध्वनि आदि किसी भी चीज की इस साधना में आवश्यकता नहीं है। दैनिक जीवन में मनुष्य का व्यवहार कई बार समता की सीमाओं का अतिक्रमण कर जाता है। वह राग, द्वेष, मोह और कषायों से आवेष्टित होकर स्वयं के साथ तथा दूसरे प्राणियों एवं मनुष्यों के साथ सम, सरस और निष्पक्ष व्यवहार नहीं कर पाता है। अपने व्यवहार की इस विषमता को घटाने तथा समाप्त करने के लक्ष्य से सामायिक की आराधना की जाती है। इस प्रकार सामायिक एक आध्यात्मिक साधना होने के साथ

ही जीवन व्यवहार को सन्तुलित एवं प्रभावशाली बनाने का निरापद उपाय भी है।

सद्गुणों का अभ्यास-

सामायिक से आत्मा की सुप्त शक्तियों का जागरण और व्यक्तित्व का रूपान्तरण होता है। सामायिक साधना का शुभारंभ भी है और साधना की निष्पत्ति भी। जैन श्रमणाचार सामायिक की बुनियाद पर ही प्रतिष्ठित होता है। वस्तुतः जैन श्रमण के लिए जीवनपर्यन्त सामायिक की साधना होती है। जैन गृहस्थ के लिए नियमित सामायिक साधना करने का विधान है। श्रावक

के बारह व्रतों में पाँच अणुव्रत, तीन गुणव्रत और चार शिक्षाव्रत हैं। सामायिक प्रथम शिक्षाव्रत है। शिक्षाव्रत का तात्पर्य ऐसे व्रत से है, जिसके माध्यम से साधक अभ्यास करे और जिसका अभ्यास वह करे, उसके शिखर पर पहुँचने तक निरन्तर चलता रहे। इस शिक्षाव्रत में समभाव, समता, क्षमा और सहिष्णुता का अभ्यास किया जाता है। इन्हीं सद्गुणों की आज समाज और संसार को सर्वाधिक आवश्यकता है। यह आवश्यकता ही सामायिक

साधना की महत्ता बहुगुणित कर देती है।

यही वजह है कि छह आवश्यकों में सामायिक को प्रथम क्रम पर रखा गया है। शेष पाँच आवश्यकों की आराधना भी सामायिक के साथ सम्पन्न की जा सकती है।

भावों का संस्पर्श-

अनेक व्यक्ति सामायिक करते हुए दिखाई पड़ते हैं, लेकिन उनके जीवन में सामायिक का यथेष्ट उजाला तथा आत्म-जागरण दिखाई नहीं पड़ता है। छल, अहंकार, कलह तथा तरह-तरह की गैर-वाजिब लालसाएँ उन्हें तथा दूसरों को नुकसान पहुँचाती हैं। सामायिक करते हुए भी वे सामायिक के लाभों से वंचित

दिखाई देते हैं। इसका कारण है, भावपूर्वक और बोधपूर्वक सामायिक नहीं करना। सही विधि और प्रविधि के साथ जब अर्थ और भाव जुड़ जाते हैं तो सामायिक के विविध सुप्रभाव प्रकट होने लगते हैं। सच्ची सामायिक से व्यक्ति स्वयं भी लाभान्वित होता है और किसी न किसी रूप में वह दूसरों के लिए भी लाभकारी बनता है। शब्द से आगे अर्थ और भाव की यात्रा के लिए सामायिक के तीन प्रकारों को समझना आवश्यक है। सामायिक के तीन प्रकार हैं- दर्शन सामायिक (श्रद्धा की सामायिक), श्रुत-सामायिक तथा चारित्र-सामायिक।

दर्शन सामायिक-

श्रद्धा की सामायिक साधना की नींव है, लेकिन उसका सम्यक् और अटूट होना अत्यन्त आवश्यक है। श्रुत-सामायिक तथा चारित्र-सामायिक से पूर्व श्रद्धा की सामायिक को समझपूर्वक करना अत्यन्त आवश्यक है। श्रद्धा किसके प्रति? श्रद्धा स्वयं के प्रति, आत्मा के अनन्तज्ञान, अमित सुख और अखूट शक्तियों के प्रति हो। देव, गुरु और धर्म के अगणित उपकारों के कारण हमने आत्मा और अनात्मा का स्वरूप समझा और साधना का सन्मार्ग पाया, इसलिए श्रद्धा और विनय देव, गुरु और धर्म के प्रति हो। गहराई से विचार करें तो हमारा ज्ञान बहुत थोड़ा है और बल भी। श्रद्धा ही ऐसा परम बल और संबल है, जो हमें अल्पता में भी पूर्णता का साधक बनाता है।

श्रुत सामायिक-

सम्यक् ज्ञान की निरन्तर आराधना से श्रुत सामायिक की आराधना होती है। स्वाध्याय इस आराधना में परम रसायन है। जब दर्शन सम्यक् या विशुद्ध होता है तो ज्ञानाराधना और स्वाध्याय की साधना भी सम्यक् बन जाती है तथा वह जीवन के अनुत्तर उद्देश्यों से जुड़ जाती है। साधक ज्ञानाराधना में इतना तल्लीन हो जाता है कि बाहरी आकर्षण और प्रलोभन उसे प्रभावित नहीं कर पाते हैं। श्रुतज्ञान और स्वाध्याय के प्रति ऐसा अटूट

समर्पण 'सामायिक' की संज्ञा से अभिहित किया जाता है। श्रुत सामायिक के चार सुफल हैं- आत्मज्ञान का जागरण, मतिज्ञान की निर्मलता, श्रुतज्ञान का संरक्षण और श्रुतज्ञान का संवर्द्धन। श्रुत-सामायिक से सदाचार के प्रचार-प्रसार और विस्तार हेतु विचार, गति और ऊर्जा मिलती है। श्रुत सामायिक श्रद्धा और चारित्र, दोनों की रक्षा करती है।

चारित्र सामायिक-

श्रद्धा और श्रुत में लीन साधक को अपने जीवन में चारित्र का उजाला भी प्रकट करना चाहिए। हालांकि श्रद्धा और श्रुत का अपना स्वतंत्र महत्त्व भी है, लेकिन चारित्र के साथ जुड़कर यह महत्त्व बहुगुणित हो जाता है। श्रद्धा और श्रुत के बाद शुष्क क्रिया नहीं, अपितु सच्चा चारित्र प्रकट होता है। चारित्र से जुड़ जाने पर ज्ञान शुष्क नहीं रहता है और श्रद्धा भी। चारित्र सामायिक के द्वारा व्यक्ति प्रयोगधर्मी, अधिक सजग, विवेकशील और सद्गुणी बनने का अभ्यास करता है। वह अपने मन, वचन और व्यवहार को सामायिक की कसौटी पर परखता है तथा उन्हें अधिकाधिक निखारता है। फलतः चारित्र से सम्पन्न का अल्प-श्रुत भी बहु फलदायी बन जाता है।

सामायिक-त्रिभुज-

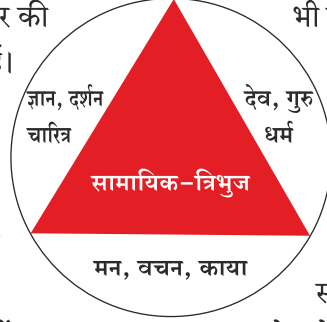
सामायिक जीवन साधना का एक विलक्षण त्रिभुज है। इस त्रिभुज में तीन त्रिपदियाँ हैं। तीन त्रिपदियों का त्रिभुज तीनों प्रकार की सामायिक को गहराई तक ले जाकर सुपरिणामदायी बना देता है। इस त्रिभुज की तीन त्रिपदियाँ इस प्रकार हैं-

1. देव-गुरु-धर्म (तीन तत्त्व)
2. ज्ञान-दर्शन-चारित्र (तीन रत्न)
3. मन-वचन-काया (तीन योग)

सामायिक में तीनों योगों से तीन तत्त्वों के प्रति अखण्ड आस्था के साथ रत्नत्रय की आराधना की जाती है, करनी चाहिए। इस 'सामायिक-त्रिभुज' में तीनों प्रकार की सामायिक की आराधना हो जाती है। किसी

भी एक प्रकार की सामायिक यदि उक्त त्रिपदी के साथ की जाए तो थोड़ी-बहुत तीनों प्रकार की सामायिक की आराधनाएँ सम्पन्न होती हैं। ऐसी समग्र सामायिक जीवन को भीतर और बाहर से हरा-भरा, खिला-खिला, महकता उपवन बना देती है। ऐसा उपवन अपने और दूसरों के जीवन को अपार खुशियों और खुशबू से भर देता है।

तीनों प्रकार की सामायिक के वृत्त में ऊपर



प्रदत्त त्रिपदियों के त्रिभुज को चित्र या रेखाचित्र से भी समझा और समझाया जा सकता है।

इस वृत्त को किसी भी दिशा में घुमाये जाने पर भी सामायिक की साधना और सामायिक के सुफलों में कोई अन्तर नहीं आता है। साधना की पराकाष्ठा पर तीनों त्रिपदियों के साथ तीनों प्रकार की सामायिक एकमेक/अभिन्न हो जाती हैं।

भेद में अभेद की यह अनुभूति सामायिक का परम लक्ष्य है।



भक्ति रस

समभाव : एक उत्कृष्ट साधना

(समभाव का ऐसा प्रभाव, तारे भव सागर की नाव)

मिले गुणगान का खजाना
या लगा हो गहरा घाव,
हर हाल में सम रहना
ही कहलाता 'समभाव' ॥

एक तरफ हो सोने की अशरफी
दूसरी तरफ चाहे कंकड़ का सामान
तराजू ना देखता अच्छा-बुरा
तोले सबको एक समान ॥

ना राग की हो भावना
ना द्वेष ले आकार,

हर स्थिति में रंगत न बदले
मन को एकाकार ॥

सहनशीलता है इससे बढ़ती
होती धर्म की आराधना
समभाव से जीवन जीना ही
है एक 'उत्कृष्ट साधना' ॥

-मोनिका मिन्नी, अहमदाबाद

'राम उवाच' से सीखा हमने
बदलों न स्वयं को, किन्हीं तथ्यों के लिए,
समत्व का बीज बोकर
जीवन में समभाव खिले ॥



क्यों लौट गए संत खाली हाथ ??

-संध्या धाड़ीवाल, रायपुर

अक्सर मेरे नादान से मन में,
एक सवाल उठता है,
अग्नि में कैसे कोई जीव हो सकता है?
अग्नि तो सर्वभक्षी है,
जला देती बीहड़ वन को भी
तो इतना ताप, कैसे कोई सह सकता है?
कैसे अग्नि में भी कोई जीवन रह सकता है?

अकुलाई सी मैं! व्याकुल सी मेरी बुद्धि!
अग्नि में, विद्युत में सचित्त-
अचित्त को कैसे लख सकती है।

कुछ संयोग ऐसा बना,
संतों का घर पधारना हुआ।
तपती दोपहरी नंगे पांव,
पिघलती सड़क ना कोई छांव।।
शायद धोवन की चाहना थी,
पर मुख पर न कोई याचना थी।
मोबाइल था हाथों में मेरे,
देखकर संतों ने पग थे फेरे।।



मत्थण वंदामि!! सब कुछ सुझता है,
ना जाओ वापस, मन दुखता है।

पर नहीं जानती थी कि मोबाइल असुझता है।।
पीछे पीछे भागी मैं, पर लौट आई उल्टे पैर,
क्योंकि तपती सड़क पर,
जलने लगे थे मेरे सिर और पैर।
शायद! शायद उस दिन ना मिली,
उन्हें गोचरी सुझती कहीं,
पर शिकन न थी उनके मुख पर कहीं।।

सोचने लगी ??
आज हर घर की यह बात है,
घड़ी, मोबाइल हर व्यक्ति के हाथ है।
भरे-पूरे घर से भी खाली लौट जाते,
महाव्रतधारी महाराज हैं।।
मन दुःखता है! मन दुःखता है कहते-कहते,
नहीं जानना चाहते सत्य बात है।
क्या सुझता है, क्या असुझता है,
का नहीं आता कभी खयाल है।।

क्यों लौट गए संत खाली हाथ ??
जानने पहुंची स्थानक सपरिवार।

वाचनी चल रही थी आगम की,
सामने ही रखा था आचारांगजी,
तेजस्काय का चल रहा था विवेचन
अग्नि की सजीवता का वर्णन
फरमा रहे थे-

उपाध्याय भगवन् !!

अज्ञानी नहीं मानते अग्नि में जीव,
पर जिनवर फरमाते अग्नि है सजीव।
हम मानवों जैसे ही अग्नि भी प्राणवायु लेती है,
कार्बन उत्सर्जित करती है,
वायु में ही जीवित रहती है।।
अभाव में उसके बुझ जाती है,
आहार उसका तेल, घी व काष्ठ,
ना मिले तो बुझ जाती तत्काल।
प्रकाश व उष्णता लक्षण है चेतन के,
दोनों ही रहते विद्युत के तन में,

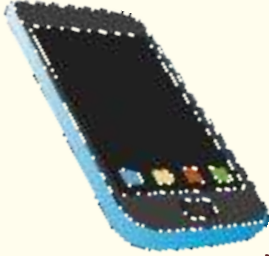


श्रृंगणोपासक

दिखती नहीं अग्नि विद्युत के तारों में,
पर छुओ तो झटका लगता है।
झटके के अनुभव से ही उसका,
अस्तित्व महसूस होता है,
अर्ची, अंगारे, अग्नि, मुर्मुर्
अलाव, ज्वाला, उल्का, विद्युत,
तीन करण तीन योग से
साधु ना करें उनका घर्षण-भेदन।।

दीर्घ लोक शस्त्र कहा अग्नि को और
संयम को और शास्त्र फरमाते भगवन्,
घड़ी, मोबाइल, कंप्यूटर और लाइट,
टीवी, मिक्सी, केलकुलेटर व माइक,
यतना इसकी रखना टाइट।

व्याकुलता मन की मिट गई,
विद्युत की सजीवता मैं पहचान गई।
आलोचना की अपनी भूलों की,
यतना की समझ जो आ गई।।



पढा था मैंने भी कंप्यूटर एवं मोबाइल से,
रेडिएशन खूब होता है,
जेब में रखा मोबाइल तो
हृदय रोग को न्योता देता है।
पर यह भी तो सच है!!
आज के आधुनिक युग में,
इनके बिना काम कहां चलता है।।
उत्तर मिला-
अति हर चीज की बुरी होती है,

15-16 अगस्त 2022

सीमित प्रयोग करो इसका तो
ऊर्जा हमारी ही बचती है।



परंतु हमारा जीवन
इन स्थावर जीवों के बिना कहां संभव है,
सांस लेते हैं तो वायु में जीव हैं,
पानी पीते हैं तो उसमें भी जीव हैं,
भोजन पकाना भी तो जीवन के लिए जरूरी है,
पृथ्वी भी तो होती सजीव है।

तो क्या करें? कैसे करें? कैसे बहराएं सुपात्रदान?

!! जयं चरे, जयं चिट्टे, जयं मासे जयं सए!!

!! जयं भुंजंतो, भासंतो, पावं कम्मं न बंधइ!!

यतना ही बचा सकती है, इन जीवों के प्राण

एक बिजली सी चमकी मन में

और प्रकाश हुआ जीवन में,

सुपात्रदान की महिमा को हमने जाना,

मोक्ष मार्ग का ताला खुलता है हमने माना,

‘अम्मा पिया’ की उपमा मिली है हमको,

तो समझें हम अपने कर्तव्य को।।

तो आओ एक प्रतिज्ञा लें हम,

गोचरी का समय जानकर,

इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों का प्रयोग,

उस समय नहीं करेंगे हम।

सुपात्रदान जैसा कोई दान नहीं,

रत्नत्रय के आराधक जैसा कोई सुपात्र नहीं।

थोड़ा-सा दान और निर्जरा महान,

शुद्ध भावों से बहराओ यही है सुपात्र दान।।



साधु जीवन की मर्यादा अखण्डित रखकर ही एकता का चिंतन
होना चाहिए तभी हम अतिक्रमण व आक्रमण से बच सकते हैं।

परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलालजी म.सा.

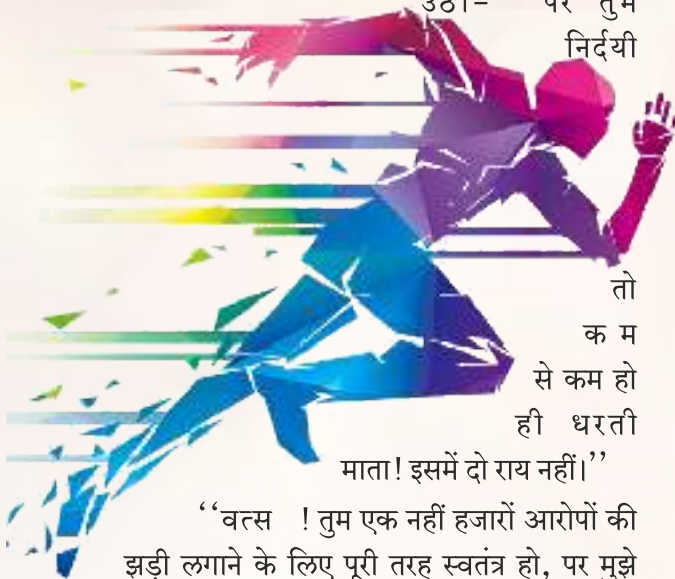
श्रम की पुनर्प्रतिष्ठा

—श्रमणोपासक

उस दिन वह 'मानव' परिवार की एक जीवट इकाई का प्रतीक परेशान हो उठा। झल्लाता भी क्यों नहीं, आखिर कई दिनों से धरती की छाती पर हल की नोंक चला रहा था। शिकायत भरे स्वर में पृथ्वी से बोला— “माँ धरती! तुम बहुत ही निर्मम, क्रूर हो कुमाता बन गई हो।”

धरती अपने बेटे के इस आरोप से जरा भी व्यथित नहीं हुई! मुस्कुरा कर बोली— “बेटा! हमारे शास्त्रकारों ने अपने ही दीर्घकाल के मंथन के बाद यह कहा है कि “कुपुत्रो जायते क्वचिदपि कुमाता न भवति” कुपुत्र तो पैदा हो सकता है, पर माता कभी कुमाता नहीं हो सकती है। इसलिए अपने आरोप पर जरा गंभीरता से विचार तो कर।” थका/हारा परेशान वह युवक कह

उठा— “पर तुम निर्दयी



तो
क म
से कम हो
ही धरती

माता! इसमें दो राय नहीं।”

“वत्स ! तुम एक नहीं हजारों आरोपों की झड़ी लगाने के लिए पूरी तरह स्वतंत्र हो, पर मुझे अपने आप पर लगाया जाने वाला यह आरोप असत्य—सा ही लगता है।” —धरती माँ ने सहजतापूर्वक कहा।

इस पर उसने जरा जोश में आकर कहा— “माँ! मैं

धृष्टता नहीं करना चाहता हूँ, पर इतना जरूर कहूंगा कि तुमने मेरी आस्था की कदर नहीं की है, जरा भी नहीं।”

“अच्छा तो तुम आरोपों—प्रत्यारोपों की अनवरत झड़ी लगाने के बजाय मूल बात पर आओ। जो भी दर्द हो तुम्हारा वह उचित तरीके से समझाओ ताकि मैं तुम्हारी शंका का उन्मूलन कर सकूँ।” —धरती मैया जरा दृढ़ होकर बोली।

वह मानव बोला— “तो सुनो मैया।”

धरती बोली— “हां सुनाओ, मैं सुनने के लिए पूरी तरह तैयार हूँ।”

मानव ने शिकायती स्वर से उत्तेजित मुद्रा में कहा— “माता हमसे इतना कठोर परिश्रम करवाने के बाद ही तुम अन्न, फूल, फल देती हो! कितनी कठोर हो, कितनी निर्दयी हो, कितनी कृपण हो। तुम यदि ऐसे ही अनाज उगा दिया करो तो तुम्हारा क्या घट जाए? क्या बिगड़ जाए?”

पृथ्वी ने गम्भीर मुद्रा में कहा— “बेटा! माँ सदैव माँ ही रहती है। मेरा तो वास्तव में कुछ भी नहीं घटेगा, बल्कि ऐसा करने से मेरा गौरव बढ़ेगा, परन्तु श्रमनिष्ठा के अपमान का पाप करोगे तुम? समझ लो मुफ्त का अन्न खाने से तुम्हारी कोई इज्जत नहीं रह जाएगी। श्रम का महत्त्व घट जाएगा। श्रम के महत्त्व की पुनर्प्रतिष्ठा के लिए ही मैं यह सब कर रही हूँ। तुम्हारे व्यर्थ के आरोपों की शिकार हो रही हूँ।”

यह उत्तर सुनकर वह मनुष्य पानी-पानी हो गया। उसके पसीने की गंध श्रम की सुगंध बनकर वातावरण में बिखरने लगी। जो रह-रहकर तेजी से बढ़ती जा रही थी और शीघ्र ही फसलों की गंध में विलीन हो गई।



बालमन में उपजे ज्ञान

—मोनिका जय ओस्तवाल, ब्यावर

पिछले अंक में आप सभी ने पढ़ा कि बच्चों ने आपस में बातों-बातों में कैसे चातुर्मास की जानकारी सौरभ से ली कि वह चार माह तक रात्रिभोजन नहीं करेगा, प्रतिक्रमण करेगा, प्रवचन सुनेगा व महाराज साहब के दर्शन करेगा। आगे जानेंगे कि सौरभ ने कैसे चातुर्मासिक क्रियाएं करने हेतु अपने दोस्तों को प्रेरित किया। आइए जानें...

बच्चों के स्कूल शुरू हो चुके थे, परन्तु पंकज, नीलिमा और नितिन तीनों के मन में चातुर्मास को लेकर बहुत जिज्ञासाएँ थी। स्कूल की छुट्टी के बाद बातें करते चारों मित्र-

पंकज- सौरभ! तुमने कहा था कि चातुर्मास शुरू होने वाला है और तुम हमें भी वह सब करवाओगे जो तुम करोगे।

सौरभ- बिल्कुल, आज रात को सूर्यास्त से पहले खाना खाकर सब मेरे घर आ जाना।

पंकज, नीलिमा, नितिन बहुत खुश हुए और पहुँच गए गए सौरभ के घर। सौरभ की माताजी ने सभी को सामायिक के आवश्यक उपकरण दिए और उन्हें सौरभ के साथ बैठने को कहा। (सभी साथ में प्रतिक्रमण करते हैं।)

नीलिमा- (सौरभ की माताजी से) आंटी! हमने मुँहपत्ती क्यों पहनी? और हम इस आसन पर क्यों बैठे?

सौरभ की माताजी- मुँहपत्ती हम इसलिए पहनते हैं, क्योंकि हवा में बहुत सूक्ष्म जीव होते हैं, जो हमारे बोलने से मर जाते हैं। उन्हें बचाने के लिए मुँहपत्ती पहनी जाती है।

नितिन- अरे हां! ये तो हमको साइंस में बताया था कि हवा में इतने छोटे-छोटे जीव पाए जाते हैं, जिन्हें सिर्फ माइक्रोस्कोप से देखा जा सकता है।

नीलिमा- समझ गई, तो फिर हमने पूंज के आसन भी इसलिए बिछाया होगा?

सौरभ की माताजी- बिल्कुल सही।

पंकज- आंटी! जीव तो हमारे चारों तरफ हैं, तो फिर क्या हम हिलें-डुलें भी नहीं?

सौरभ- (बीच में बोलते हुए) ऐसा नहीं है, पर दादाजी कहते हैं कि जितना बच सको उतना बचना चाहिए। इसे हम 'यतना' कहते हैं।

सौरभ की माताजी- छह काय मतलब छः प्रकार के पृथ्वी, जल (अपकायिक), अग्नि (तेजस्कायिक), वायु (वायुकायिक), वनस्पति एवं त्रसकायिक (जो दिखते हैं) जीव पाए जाते हैं।

पंकज- सौरभ! तुमको पता है कि ये सब तो हम विज्ञान में भी पढ़ते हैं। (सभी बच्चे आश्चर्य से एक-दूसरे को देखते हुए)

सौरभ की माताजी- देखो, बच्चो! हम मानव हैं तो बिना हिले-डुले, खाए-पीए नहीं रह सकते, पर थोड़ा ध्यान तो रख ही सकते हैं। जैसे- कच्चा पानी नहीं पीना, व्यर्थ पानी नहीं गिराना, इलैक्ट्रिक व चूल्हे की अग्नि को व्यर्थ नहीं जलाना, फल-फूल, पत्ती को नहीं तोड़ना, किसी भी जीव को सताना नहीं, ना ही मारना।

- नितिन-** आंटी! हमें तो इतने दिन पता ही नहीं था। मैं तो मजे से देर तक शॉवर में नहाता हूँ।
- नीलिमा-** मम्मी ने थोड़ी-सी कुकिंग सिखाई है तो मुझे गैस ऑन/ऑफ करने में बहुत मजा आता है।
- पंकज-** मैं तो कई बार स्कूल के पेड़ों से पत्ते तोड़कर उन्हें अपने ऊपर उछालता हूँ। (सभी हताश हो गए)
- सौरभ-** कोई बात नहीं मित्रों, मैं भी ऐसा ही था। मम्मी ने समझाया तो समझ में आया। अब से तुम लोग भी इन सब बातों का ध्यान रखना।
- सौरभ की माताजी-** हां बच्चो! आज हमने प्रतिक्रमण के समय जो सामायिक की थी ना वो इसलिए की जाती है कि 48 मिनट (एक सामायिक का समय) तक हम छः काय के जीवों की रक्षा करें। हमने ना खाया, ना पिया, ना ज्यादा हिले, इससे किसी भी जीव को कष्ट नहीं पहुंचा। इसीलिए एक सामायिक रोज करनी चाहिए। (सभी बच्चों की आंखों में आज अलग ही चमक थी।)
- सौरभ-** तुम सभी लोग रविवार को प्रातः 9 बजे तैयार रहना। हम प्रवचन सुनने व महाराज सा. के दर्शन करने जाएंगे। (सभी ने हां भरी)
- जाते-जाते सौरभ की माताजी ने सभी को प्रत्याख्यान करवाए कि कोई भी बिना कारण, जानबूझकर किसी भी जीव को नहीं मारेगा और ना परेशान करेगा।

आगे के अंक में जानेंगे, बच्चों ने स्थानक में जाकर क्या किया।

-क्रमशः

जैन संस्कार पाठ्यक्रम परीक्षा दिनांक 18 सितम्बर 2022

जैन संस्कार पाठ्यक्रम के सिलेबस में निम्न परिवर्तन किया गया है। परीक्षार्थी ध्यान में लेने का कष्ट करें-

* भाग 2 व 3 तत्व विभाग के पाठ्यक्रम में 25 बोल के स्थान पर जैन सिद्धांत बत्तीसी सम्मिलित किया गया है। * भाग 2 में जैन सिद्धांत बत्तीसी 1 से 16 सिद्धांत तक (प्रश्न उत्तर सहित) अध्ययन करे। * भाग 3 में जैन सिद्धांत 17 से 32 सिद्धांत आएं (प्रश्न उत्तर सहित) अध्ययन करे।

भाग-9

- | | |
|--|----|
| 1. सूत्र विभाग: सूत्र: असंस्कृत नामक चौथा अध्ययन (मूल अर्थ), मोक्ष मार्ग (मूल अर्थ) | 35 |
| 2. तत्व विभाग: लघु दण्डक, 33 बोल का थोकड़ा | 30 |
| 3. कथा विभाग: सत्यवादी राजा हरिश्चन्द्र, महासती सुभद्रा, महावीर के प्रथम गणधर 'इन्द्रभूति गौतम' | 10 |
| 4. काव्य विभाग: वे गुरु मेरे उर बसो (समता सुमन पुस्तक) | 10 |
| 5. सामान्य ज्ञान विभाग: ज्ञान-फुलवारी, कालचक्र : एक अनुशीलन, आशातना, साधु संतों से बात करते समय ध्यान रखने योग्य बातें | 15 |

भाग-10

- | | |
|--|----|
| 1. सूत्र विभाग: सूत्र: श्री दशवैकालिक सूत्र के 9वें अध्ययन का प्रथम व चतुर्थ उद्देशक, उत्तर 16वें अध्ययन ब्रह्मचर्य, (मूल अर्थ)। | 35 |
| 2. तत्व विभाग: गर्भ का थोकड़ा, 8 कर्म की 148 प्रकृतियाँ | 30 |
| 3. कथा विभाग: आत्मबली और दृढधर्मी महासती श्री रंगूजी म.सा., रोहिण्य चोर (सत्संग का महत्व), वीर लोकाशाह | 10 |
| 4. काव्य विभाग: पालो दृढ आचार, अमूल्य तत्व विचार | 10 |
| 5. सामान्य ज्ञान विभाग: साधक एक परिचय, सचित्त-अचित्त विवेक, सम्मूर्च्छिम | 15 |

यह परिवर्तित पाठ्यक्रम 18 सितम्बर 2022 की परीक्षा से लागू किया जाएगा।

-राष्ट्रीय संयोजिका

समभाव एक उच्च साधना

—शांतिलाल नागौरी, उदयपुर

सुखं दुःखं समाचरेत्— अर्थात् सुख और दुःख में जो सम्यक् दृष्टिमान है वही समभावी है। समभाव केवल विचारों में ही नहीं अपितु वाणी, व्यवहार, दृष्टि तथा आचरण में भी होना चाहिए। समभाव एक ऐसी साधना है जिसके माध्यम से व्यक्ति न केवल सर्वांगीण विकास ही कर सकता है अपितु परमात्मा का सान्निध्य भी उसे सहज प्राप्त हो जाता है। समभाव का अर्थ— समतामय विचारों से ओतप्रोत होना, जहां न कोई अपना है न पराया। अपनत्व जहां राग का स्वरूप होता है वहीं द्वेष भाव परायेपन का। ऐसी स्थिति में राग-द्वेष की भावना समभावों में बाधक है।

समता, समानता एवं साम्यभाव मानव जीवन एवं समाज का शाश्वत दर्शन है। आध्यात्मिक क्षेत्र हो या सामाजिक, धार्मिक हो या आर्थिक, सभी का लक्ष्य साम्यभाव है क्योंकि यह मानव मन का मूल है। अर्थात् प्रत्येक व्यक्ति जो इस संसार में जन्म लेता है समभावों से ओतप्रोत होता है।

आज समाज में जितना अधिक विषमभाव है उससे भी अधिक समभावों की मांग है। संसार में प्रत्येक व्यक्ति शांति चाहता है, किन्तु सत्ता एवं सम्पत्ति पर उसकी व्यक्तिगत या सामूहिक अभिलिप्सा समभावों में व्यवधान उत्पन्न करती है जिसका मूल राग एवं द्वेष है। इसका स्थायी समाधान समभाव है। समभाव आचरण के प्रत्येक चरण में हो, यदि वह मन में है तो समाज के जीवन में भी होगा। चूंकि समाज का गठन व्यक्ति अथवा व्यक्तियों के समूह से ही होता है। यही समानता की भावना ही तो समभावों का परिचायक है। यदि ऐसा

होगा तो मनुष्य तो क्या ईश्वर का सामीप्य भी उसे सहज प्राप्त होगा।

प्रभु महावीर ने फरमाया पहले समदृष्टि बनो, जो जीवन विकास का मूल आधार है। मनुष्य का मन जब तक संतुलित नहीं होगा तब तक वैचारिक द्वन्दता से उसका टकराव रहेगा, वृत्तियां चंचल बनी रहेंगी, सत्य असत्य का विवेक नहीं रहेगा, इसका मुख्य कारण राग-द्वेष की भावना है, जो स्व-पर की स्थिति उत्पन्न करने के साथ ही समभावों में बाधक है।

समभाव एक उच्चतम साधना है। माता मरुदेवी ने न तो संयम ग्रहण किया, न कोई धार्मिक क्रिया में थी, फिर प्रभु दर्शन के समय हाथी के हौदे पर न केवल केवलज्ञान की प्राप्ति हुई अपितु मोक्षगामी भी बन गई। यह समभाव की उच्च साधना का परिणाम था।

संसार में सभी आत्माएँ समान हैं और उनमें अपने सर्वांगीण विकास की क्षमता है किन्तु इसके लिए समदृष्टि होना आवश्यक है। प्रभु ऋषभदेव का उदाहरण हमारे सामने है। 4000 व्यक्तियों के साथ संयम ग्रहण किया। लंबे समय तक प्रासुक आहार उपलब्ध नहीं हुआ, अनेक संयमी आत्माएँ अपने पथ से विचलित हो गईं। भूख व तृष्णा ने उनके मन में विषमता उत्पन्न कर दी किन्तु प्रभु समभावों में रहे। कर्मों की गति मान उनका प्रयास जारी रहा। 400वें दिन हस्तिनापुर में श्रेयांसकुमार के हाथों वैशाख शुक्ला तृतीया को प्रासुक इक्षुरस से प्रभु का पारणा हुआ। यह दिन अक्षय तृतीया के रूप में प्रसिद्ध होकर हजारों श्रावक-श्राविकाओं के वर्षीतप के रूप में आराधित हो गया। उन्हीं हमारे प्रथम तीर्थंकर प्रभु



ऋषभदेव को उनके समभावों की स्थिति ने ईश्वर का सामीप्य प्रदान करा दिया।

यह आवश्यक है कि सबसे पहले समदृष्टि आए, क्योंकि समदृष्टि जो बन जाएगा वह स्वयं तो समता पथ पर आरूढ़ होगा ही साथ ही अपने सम्यक् संसर्ग से दूसरों को भी विषमता के चक्रव्यूह से बाहर निकाल सकेगा। इसका प्रभाव जितना व्यापक होगा उतना यह समाज के हित में होगा।

समता विभूति आचार्य श्री नानेश का समतामय जीवन हमारे सामने है। आचार्य पद पर प्रतिष्ठित होने के पश्चात् उदयपुर में विहार विचरण, वर्ष 1964 में इन्दौर में पावस प्रवास काल, 1968 में अमरावती पावस प्रवास के पूर्व शेखेकाल पधारने पर जो परीषह उनके सामने आए उनमें समभावों से विरोधी निरुत्तर हो गए। प्रायश्चित्त के रूप में अमरावती के सुप्रसिद्ध श्रावकजी ने तो 1968 का पावस प्रवास वहां कराकर ही शांति का अनुभव किया। यह है समभावों का प्रभाव।

दृष्टि जब समभावों में होती है तो उसमें विकार या अपेक्षा नहीं होती। उसके सम्मुख जो भी आता है वह न तो राग-द्वेष से कलुषित होता है, न ही उसमें स्वार्थभाव

रहता है। वह निरपेक्ष स्वरूप बन जाती है। प्रभु महावीर की साढ़े बारह वर्ष की घोर तपस्या में जो उपसर्ग आए, प्रभु की दृष्टि समभावों में रही। इन्द्र के सेवा में रहने की बात कहने पर प्रभु ने स्पष्ट मना कर दिया। उनके समभाव की स्थिति से वे केवलज्ञानी व 24वें तीर्थंकर बन गए।

आज सम्पूर्ण मानव जाति अशांत हैं। दो विश्व युद्ध की विभीषिका, भीषण नरसंहार, परमाणु बम का उपयोग व जापान के दो प्रसिद्ध विकासशील शहर हीरोशिमा व नागाशाकी के पूर्णतः नष्ट हो जाने पर भी साम्राज्य विस्तार, सत्ता एवं सम्पत्ति हासिल करने की अभिलाषा शांत नहीं हुई है। वर्तमान में भी यूक्रेन एवं रूस तथा अफगानिस्तान एवं तालिबान की युद्ध की विभीषिका सम्पूर्ण विश्व के सम्मुख है। समस्या जस की तस है।

विश्वशांति का अमोघ अस्त्र समभाव व सहअस्तित्व है और यही मानव जीवन का मूल आधार है। इसका अनुसरण कर विश्वशांति का मार्ग प्रशस्त होने के साथ ही सम्पूर्ण मानव जीवन विकास की ओर अग्रसर हो सकेगा।



तप

परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री जवाहरलालजी म.सा.

- जो तप करता है उसकी वाणी पवित्र और प्रिय होती है और जो प्रिय, पथ्य तथा सत्य बोलता है उसी का तप, तप कहलाने योग्य होता है।
- जिस तप से मन शरद ऋतु के चन्द्रमा के समान निर्मल बन जाता है, वह सच्चा तप है। मन में रजोगुण या तमोगुण हो तो मन निर्मल नहीं रह सकता। जो मन रजोगुण और तमोगुण से दूर हो जाता है वही निर्मल है। तपस्वी को निर्मलता प्राप्त करने के लिए सदा जागृत रहना चाहिए।
- तपस्या करना वीरता का काम है। प्रत्येक आदमी 'तप' नहीं कर सकता। तपस्वी अपनी शक्ति का संचय करके तप करे और अहंकार आ जाए तो सारी तपस्या निरर्थक हो जाती है।

पुण्यकर्म बीमा

-सजग, नीमच

रविवार का दिन था और सुदेश घर पर ही था। सुबह 9 बजे के आस-पास सुदेश के मोबाइल की रिंगटोन बजी। उसने देखा तो एक अज्ञात नंबर से कॉल आ रहा था। उसने कॉल उठाया तो सामने से आवाज आयी- साकेत- जय जिनेन्द्र, मैं साकेत समता बीमा कंपनी से बात कर रहा हूँ, क्या आप सुदेशजी बात कर रहे हैं?

सुदेश- जी हां।

साकेत- आप अभी किसी कार्य में व्यस्त तो नहीं हैं? कुछ विशेष बात करनी है।

सुदेश- जी नहीं। आप बोलिए।

साकेत- क्या आपने अपने 'पुण्यकर्म' बीमा की किस्त भर दी है?

सुदेश- मैंने जीवन बीमा, स्वास्थ्य बीमा, मोबाइल बीमा, अग्नि बीमा के बारे में तो सुना है, लेकिन पुण्यकर्म बीमा का नाम पहली बार सुन रहा हूँ। क्या है यह?

साकेत- पुण्यकर्म बीमा एक ऐसा बीमा है, जो आपकी आत्मा को शुद्ध करता है, आपको पाप कर्मों से बचाता है तथा आपको आध्यात्मिक उन्नति प्रदान करता है।

सुदेश- साकेतजी, मेरी दो जिज्ञासाएं हैं। पहली- हम आत्मा के अस्तित्व को नहीं मानते हैं? यह नजर नहीं आती है और दूसरी- पुण्यकर्म बीमा की आवश्यकता क्यों है?

साकेत- सुदेशजी, आपके पहले प्रश्न का उत्तर है कि हवा भी नजर नहीं आती है, मगर फिर भी उसका अस्तित्व है और आत्मा के अस्तित्व के विषय में आचार्य श्री नानालालजी म.सा. का एक कथन है- "यदि आत्मा का अस्तित्व नहीं होता तो फिर इस शब्द का अस्तित्व भी नहीं होता।" इस कथन से स्पष्ट हो जाता है कि आत्मा का अस्तित्व है, इसीलिए आत्मा शब्द भी विद्यमान है।

दूसरे प्रश्न का उत्तर है कि आपने अपने आस-पास, परिवार के सदस्यों तथा मित्रों में कुछ ऐसे लोगों को देखा

होगा जो लोग गंभीर रोगों से पीड़ित हैं, कुछ लोग दिव्यांग हैं, कुछ लोग मानसिक रोगी हैं। ये सब पूर्वजन्म तथा वर्तमान जन्म के अशुभ कर्मों का परिणाम है और पुण्यकर्म बीमा आपको इन सभी परेशानियों से बचाता है। इसके साथ ही आपकी तरह अधिकांश लोगों ने इस विषय पर कभी विचार नहीं किया है कि यह हमारे पुण्य कर्मों का ही फल है कि हमने जैन कुल में जन्म लिया, हमें अच्छा स्वास्थ्य तथा अच्छा शरीर मिला है। यदि हम गहराई से विचार करेंगे तो हमें यह ज्ञात होगा कि विश्व में अनेक प्रकार की प्रजातियों में से मानव जीवन तथा उसमें जैन कुल मिलना अत्यधिक कठिन है।

सुदेश- आपकी बात तो सही है। आत्मा का अस्तित्व तो होता है और पुण्यकर्म बीमा करवाना भी आवश्यक है। तो पुण्यकर्म बीमा की किस्त कैसे भर सकते हैं?

साकेत- बड़ा सरल है, पुण्यकर्म की किस्त आप विभिन्न तरीकों से भर सकते हैं-

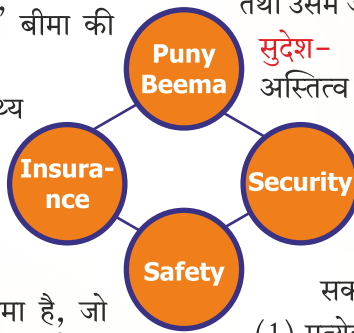
- (1) प्रत्येक जीवराशि के प्रति शुभ भावना रखकर
- (2) अहिंसा के मार्ग पर चलकर
- (3) कुव्यसन नहीं करके
- (4) धर्म ध्यान कर
- (5) त्याग तपस्या कर

सुदेश- अरे वाह! पुण्यकर्म की किस्त जमा करना तो बड़ा सरल है।

साकेत- जी सरल तो है, लेकिन इसका भुगतान नियमित रूप से करना होता है।

सुदेश- जी, अब से मैं नियमित रूप से पुण्यकर्म बीमा की किस्त का भुगतान अवश्य करूंगा तथा अपने परिचित जनों को भी इसके विषय में बताऊंगा।

वर्तमान में चातुर्मास काल चल रहा है। यह समय धर्म-ध्यान तथा त्याग-तपस्या करने के लिए अनुकूल है। अतः आप सभी अपने पुण्यकर्म बीमा की किस्त नियमित रूप से भुगतान करते रहें और आध्यात्मिक उन्नति तथा आत्मशुद्धि के लक्ष्य को प्राप्त करें। ●●●



क्षमापर्व : जैन संस्कृति और विश्वप्रेम का महान दिवस

—श्रमणोपासक



मनुष्य सदैव पर्व-प्रिय रहा है। पर्वों को मनाना उस के सामाजिक, धार्मिक एवं राष्ट्रीय जीवन का अंग बन गया है। पर्वों के माध्यम से हमें उस समाज, धर्म अथवा राष्ट्र की संस्कृति का बोध होता है। यदि हम पर्वों को निकाल दें तो फिर संस्कृति प्राणवान नहीं दिखाई दे सकती। पर्व संस्कृति की रक्तवाहिनियों के समान होते हैं, जिनके आयोजनों के स्पंदन द्वारा उस संस्कृति विशेष की जीवन-शक्ति का हमें बोध होता है।

मनुष्य जिन पर्वों को अपने सांस्कृतिक गगन-मण्डल को आलोकित करने के लिए मनाता है उनके गर्भ में भिन्न-भिन्न विचारधाराएं एवं कारण समाविष्ट रहते हैं। कभी वह पर्वों का आयोजन आमोद-प्रमोद के लिए करता है तो कभी वह महापुरुषों की स्मृतियों को अपने मानसपटल पर चिर अंकित रखने के लिए। कभी किसी ऐतिहासिक, धार्मिक, सामाजिक अथवा राष्ट्रीय घटना को अमर बनाने के लिए तो कभी समाज से द्वेष-भाव, कलह आदि को निर्मूल कर स्नेह, प्रेम व बंधुत्व की सरिता को प्रवाहित करने के लिए पर्वों का आयोजन किया जाता है।

मनुष्य की यह पर्व-प्रियता उसके मस्तिष्क की एक श्रेष्ठ उपज है, क्योंकि इसके द्वारा मनुष्य अपनी सर्वांगीण उन्नति की दिशा में आगे ही आगे बढ़ता जाता है और

जीवन के साथ-साथ अपनी आध्यात्मिक उन्नति की दिशा में भी नवीन मूल्यों और मानदण्डों की स्थापना करता है। इनसे उसे आनंद, उल्लास, प्रेरणा, गति और नवचेतना प्राप्त होती है। सचमुच पर्व दिवस वे आलोक-स्तम्भ होते हैं, जो मनुष्य के जीवन-पथ में ज्योति प्रदान करते हैं।

इन पर्वों के आयोजन के ढंग भी भिन्न-भिन्न होते हैं जो उसकी संस्कृति के मूल्यों का निर्धारण करते हैं। आयोजन के इन ढंगों का वर्गीकरण मोटे रूप में हम दो खण्डों में कर सकते हैं-

- (1) इन्द्रियगत आनन्द को प्राप्त कर आयोजन करना।
- (2) आत्मगत आनन्द को प्राप्त कर आयोजित करना।

प्रथम खण्ड के रूप में पर्वों का आयोजन कर मनुष्य खेल-कूद, आमोद-प्रमोद, अच्छा भोजन कर तथा अच्छे वस्त्र आदि धारण कर इन्द्रिय सुख को प्राप्त करता है। जैन संस्कृति पर्वों के आयोजन के इस स्वरूप को विशेष महत्त्व नहीं देती। जैन संस्कृति में पर्वों के आयोजन के द्वितीय स्वरूप को विशेष महत्त्व दिया जाता है। पर्वों के आयोजन द्वारा जैन संस्कृति मनुष्य की आत्मा के उत्थान और उसकी आध्यात्मिक चेतना के विकास को साध्य मानती है। पर्व उस साध्य के हेतु साधन है। जैन संस्कृति में पर्वों के आयोजन का यही महत्त्व, स्वरूप, ध्येय, लक्ष्य एवं विधान है जो उसकी अपनी एक निजी विशेषता है। जहाँ लोग 'इहलौकिक' सुख को प्राप्त करने के लिए पर्वों का आयोजन करते हैं वहाँ जैन धर्म 'पारलौकिक' सुख प्राप्ति का लक्ष्य रखता

है। जैन धर्म अध्यात्म की अनन्त गहराइयों की ओर मनुष्य जीवन का 'लक्ष्य-पथ' प्रदर्शित करते हुए तत्संबंधी क्रियाओं को मन, वचन और कर्म से संपादित करना ही पर्वानंद को प्राप्त करना मानता है। वह मिष्ठानों को खाने की अपेक्षा तप और उपवास रखना तथा आमोद-प्रमोद के स्थान पर दान, शील, दया, क्षमा, सत्य और अहिंसा के आचरण को पर्व मनाने का सही ढंग बताता है। इस प्रकार से पर्वों को मनाना जैन धर्म की अपनी मौलिक विशिष्टता है। इसी विशिष्टता के कारण पर्व दिवसों पर पंचाणुव्रतों के पालन, पौषध तथा प्रतिक्रमण आदि करने, स्वाध्याय, इन्द्रियनिग्रह और कषायों के त्याग हेतु उत्प्रेरणा प्रदान करता है।

हमारा क्षमापर्व इन्हीं भावों का मूर्त रूप है जो भाद्रपद मास के शुक्ल पक्ष की चतुर्थी/पंचमी को मनाया जाता है। यह पवित्र दिवस केवल जैनियों का ही पर्व दिवस नहीं है अपितु प्राणीमात्र का पर्व दिन है। यदि वे उस दिन धरती माता के आंचल में बैठकर सत्य, अहिंसा, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह, तप, त्याग, इन्द्रियनिग्रह आदि को मन, वचन और कर्म से अंगीकार करते हैं। यह उन सभी का पर्व दिवस है, जो कषायों को त्यागते हैं, राग, द्वेष, ईर्ष्या, मोह, मद, मत्सर आदि को स्नेह, प्रेम व बंधुत्व के द्वारा शमन कर सकते हैं।

इस पर्व दिवस के पूर्व एक सप्ताह तक हम पर्युषण पर्वाराधन करते हैं, जिसमें तपस्या, धर्माचरण, स्वाध्याय एवं संवत्सरी प्रतिक्रमण के द्वारा हम अपनी आत्मा को शुद्ध कर कंचन बना लेते हैं। इस प्रकार की एक शुद्ध, पवित्र एवं सात्विक मनोभावों की पृष्ठभूमि तैयार कर लेने पर प्राणीमात्र से प्रेम करने की भावना, मस्तिष्क में विशालता एवं उदारता हमारे आचरण में स्वभावतः सहज रूप से आ जाती है। विनम्रता हमारे आचार व व्यवहार में मुखरित हो उठती है। इस प्रकार हम पाते हैं कि क्षमापर्व के पूर्व पर्युषण पर्वाराधना सचमुच उस महान पर्व दिवस के लिए एक सुदृढ़ पृष्ठभूमि का मनोवैज्ञानिक रूप से निर्माण कर देता है।

क्षमापर्व का महत्त्व उसके मूल में निहित क्षमा तत्त्व से है। क्षमा आत्मा का धर्म है। परापराध को देखकर भी शक्ति के रहते हुए उसे दण्ड न देना, आत्मा में क्रोध अनुभव न करना ही क्षमा है। जो पुरुष दुःखित किए जाने पर अचल, अनुद्विग्न, स्थिर, शांत, गम्भीर एवं प्रसन्न मन, वचन और कर्म से बना रहे उसे हम क्षमाशील की संज्ञा से विभूषित करते हैं। इस प्रकार अपने मन की वृत्तियों और आवेगों को नियंत्रित कर क्षमाशील बन पाना कठिन अवश्य है, असम्भव नहीं। इस प्रकार क्षमाशील बनने के लिए महान आत्मशक्ति की आवश्यकता होती है। प्रत्येक व्यक्ति तब तक क्षमाशील नहीं बन सकता जब तक उसमें धैर्य, शक्ति, साहस, उदारता (हृदय और मस्तिष्क की), दृढ़ता एवं विनम्रता न हो। शक्ति न होने पर अत्याचारों को सहन करना और उसे अपनी क्षमाशीलता की संज्ञा देना तो आत्मा के साथ धोखा है और है वाणी का व्यभिचार और शब्दों का बलात्कार। क्योंकि अशक्त मनुष्य तो वैसे ही अत्याचारों को सहन करने के लिए बाध्य है किन्तु शक्ति होते हुए उस शक्ति का उपयोग नहीं करना महान आत्मशक्ति का द्योतक है। अतः जो व्यक्ति जितना क्षमाशील है वह उतना ही शक्तिशाली होगा।

'क्षमा' इस एक छोटे-से शब्द में ही दया, करुणा, प्राणी प्रेम, विश्व प्रेम, मानव प्रेम, नम्रता और अहिंसा आदि अनेक तत्त्वों का समावेश हो जाता है। इतने महान क्षमा तत्त्व पर आधारित क्षमापर्व निःसंदेह महान है। यह सब पर्वों में श्रेष्ठ है और सब पर्वों का सिरमौर है।

मनुष्य सदा क्रियाशील है। क्रिया करना मनुष्य का धर्म है। इन क्रियाओं को करते हुए विभिन्न प्राणियों के सम्पर्क में स्वभावतः आना ही पड़ता है। अपनी क्रियाओं का अच्छा अथवा बुरा प्रभाव उन व्यक्तियों पर पड़ता ही है। हमारे अनेक ऐसे कर्मों अथवा वचनों का प्रभाव जानते अथवा अजानते प्रत्यक्ष रूप में पड़ता है, जिससे दूसरों की आत्मा को कष्ट पहुंचता हो। साथ ही कई बार कुछ व्यक्तियों के प्रति चाहते हुए अथवा अनचाहे रूप

श्रमणोपासक

15-16 अगस्त 2022

से हमारे मन में अहित चिंतन हो जाता है। ऐसे सभी कर्मों के लिए मनुष्य मात्र से ही नहीं अपितु प्राणीमात्र से क्षमायाचना करना तथा दूसरों को भी ऐसे दोषों के लिए क्षमा करना हमें क्षमापर्व सिखाता है।

इस प्रकार इस पर्व से द्वेष का नाश, कलह का निवारण, प्रेम का विकास और स्नेह, सहयोग तथा सहअस्तित्व के भावों का प्रादुर्भाव होता है। कहा भी गया है Forgiveness is the universal solvent. क्षमारूपी जल में संसार के सभी तामसिक तत्त्व घुल जाते हैं। आत्मा के ऊर्ध्वगामी विकास के लिए क्षमा अनिवार्य तत्त्व है। इसी से क्षमापर्व का इतना महत्त्व है।

विश्व की सारी समस्याओं का हल और निदान सहज और सुलभ हो सकता है, यदि क्षमापर्व को विश्वव्यापी पर्व दिवस बना दिया जाए। आज विश्व के सारे राष्ट्र जो राजनीति और कूटनीति की संकरी गलियों में फंसकर एक-दूसरे के सुख और ऐश्वर्य को नष्ट करना चाहते हैं, यदि वे धर्म को अपना लें, पंचाणुव्रतों (अहिंसा, सत्य अस्तेय, ब्रह्मचर्य एवं अपरिग्रह) को

स्वीकार कर लें, आध्यात्मिकता को अंगीकार कर लें और क्षमा का मुक्तहस्त से आदान-प्रदान प्रारम्भ कर दें तो धरा पर स्वर्ग उतर सकता है व मनुष्य सुख-चैन की सांस ले सकता है। एटम की शक्ति से भी महान शक्ति इस अध्यात्म दर्शन में है। यदि मनुष्य इसे स्वीकार कर ले तो सचमुच विश्वबंधुत्व का स्वप्न साकार हो सकता है। यह एक आदर्श है और आदर्श सदैव जीवन के उच्च मूल्यों पर आधारित होता है। अतः इस पर्व को अन्तरराष्ट्रीय पर्व बनाकर इस विचारधारा को विश्व प्रांगण में, विश्व के कोने-कोने में पहुंचाना मानवता की रक्षा करना है।

अतः क्षमापर्व के पुनीत अवसर और मंगल दिवस पर हमारा कर्तव्य है कि हम प्राणी मात्र के दोषों को उदारतापूर्वक क्षमा करें और स्वदोषों के लिए केवल शब्दों से नहीं किन्तु हृदय से, आत्मा से विनम्र बन क्षमा मांगें। इस महान क्षमा तत्त्व का इतना व्यापक प्रचार करें कि क्षमापर्व केवल जैन धर्म का ही नहीं अपितु सम्पूर्ण विश्व और मनुष्य मात्र का पर्व दिवस बन जाए। यही है क्षमापर्व की हमारी साधना और आराधना।

रचनाएँ आमंत्रित

भगवान महावीर के अहिंसा सन्देश को जन-जन के हृदय पटल पर जागृत करने एवं समाजोत्थान के साथ-साथ समाज कल्याण को समर्पित आपकी अपनी श्रमणोपासक पत्रिका का अंक आपके करकमलों में है। आप संघ के मुखपत्र के नियमित पाठक है यह हमारे लिए हर्ष का विषय है। हम आतुर हैं आपके सुझावों को जानने के लिए। कृपया श्रमणोपासक के सम्बन्ध में आप अपने सुझाव हमें निःसंकोच भिजवाएँ ताकि इसे और अधिक जनोपयोगी व रुचिकर बनाया जा सके। आपके सुझाव हमारा मार्गदर्शन करेंगे ऐसा हमारा विश्वास है।

श्रमणोपासक के धार्मिक अंक विभिन्न विषयों पर आधारित होते हैं। इसी प्रकार आगामी **15-16 सितम्बर 2022** का धार्मिक अंक **‘हमारा संघ हमारा सम्मान’, ‘संघ समर्पणा’, ‘स्वधर्मी वात्सल्य’, ‘प्रोत्साहन ही संघ का पोषण है’** विषय पर प्रकाशित किया जाएगा। रचनाओं की शब्द सीमा अधिकतम 500 शब्द रहेगी। सम्माननीय पाठकगण अपनी रचनाएँ शीघ्रातिशीघ्र भिजवाने का लक्ष्य रखें। यदि आपके पास श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन संघ द्वारा साधुमार्गी परिवारों को जारी **M.I.D.** (ग्लोबल कार्ड) नं. हो तो उसका उल्लेख अवश्य ही करें। प्राप्त मौलिक एवं सारगर्भित रचनाओं को समाहित करने का लक्ष्य रहेगा। विषय सन्दर्भित आपकी रचनाएँ- लेख, कविता, भजन, कहानी आदि मो. **9314055390** एवं ईमेल : **news@sadhumargi.com** पर हिन्दी व अंग्रेजी में सादर आमंत्रित हैं। उल्लेखित विषयों के अलावा भी आपकी सारगर्भित रचनाओं के लिए श्रमणोपासक टीम सदैव आतुर हैं।

—श्रमणोपासक टीम

Good Box

ज्ञान बहार

जय जिनेन्द्र बच्चों!

आशा करती हूँ आप सभी स्वस्थ होंगे। बच्चों! **Good Box** के पिछले महिने के **Box** में हमने स्थानक जाने के नियमों मतलब 5 अभिगम के बारे में जाना था। अब आप लोगों के दिमाग में **Questions** आ रहे होंगे की महाराज सा. के क्या नियम होते हैं, सबको कौन **lead** करता है, इनके क्या गुण होते हैं? तो आइए जानते हैं साधु-साध्वी व आचार्यों के बारे में....

हृदय- जैन तीर्थ का मुखिया कौन हैं?

पिता- 'आचार्यजी' चरम तीर्थकर भगवान महावीर के उपदेशों को आचार्य (हमारे पथ-प्रदर्शक) हम तक पहुंचाते हैं। आचार्य जैन सिद्धांतों को पहले अपने जीवन में उतारते हैं, फिर उदाहरण के द्वारा लोगों में इसका प्रचार-प्रसार करते हैं, उनको उपदेश देते हैं। वे सम्यक् आचरण तथा चारित्र, व्यवहार के प्रत्यक्ष उदाहरण होते हैं। नवकार मंत्र में तीसरा पद आचार्य का होता है। आचार्य भगवन् चारों तीर्थों को सम्यग्ज्ञान, सम्यग्दर्शन, सम्यक्चारित्र का उपदेश देते हैं। आचार्य जिनेश्वर भगवान द्वारा प्रदत्त नियमों को स्वयं भी पालते हैं और दूसरों से भी पलवाते हैं।

हृदय- आचार्य को कौन नियुक्त करते हैं तथा कैसे नियुक्त करते हैं?

पिता- एक आचार्य श्री दूसरे आचार्य को नियुक्त करते हैं। वर्तमान आचार्य सभी साधुओं में कुछ विशेष गुणों की परख करते हैं। जो उनकी कसौटी पर खरे उतरते हैं, उन्हें आगामी आचार्य नियुक्त करते हैं।

हृदय- वे 'विशेष गुण' कौन-से हैं?

पिता- वे इस प्रकार हैं-

- उनका जातिपक्ष (मातृपक्ष) निर्मल हों।
- उनका कुल (पितृपक्ष) निर्मल हों।
- जैन आगमों के पूर्ण ज्ञाता हों।
- पांच महाव्रतों का यथारूप पालन करने वाले हों।
- तीर्थकरों के उपदेशों के प्रति दृढ़ श्रद्धावान हों।
- किसी भी प्रकार के अनैतिक आचरण में हिस्सेदार न हों।
- किसी भी समस्या का समाधान करने में सामर्थ्यवान हों।
- बलवान हों।



- वे नम्र-कोमल स्वभाव के हों।
- तेजस्वी और यशस्वी हों।
- क्षमा से क्रोध को जीतने वाले हों।
- विनय द्वारा मान को पराजित करने वाले हों।
- सरलता से कुटिल बुद्धि को जीतने वाले हों।
- सन्तोषशीलता से लोभ को जीतने वाले हों।
- इन्द्रियों पर काबू पाने वाले हों।
- सही और गलत, पाप और पुण्य का उपदेश देते हुए भी पापी की निंदा न करने वाले हों।
- मृत्यु के भय से रहित हो।

हृदय- महाव्रत क्या होते हैं? क्या सिर्फ आचार्य को ही महाव्रत का पालन करना होता है?

पिता- दीक्षा ग्रहण करते समय प्रत्येक साधु व साध्वी पांच प्रण रूपी महाव्रत धारण करते हैं। इन महाव्रतों के साथ वे पांच समिति तथा तीन गुप्तियों का भी पालन करते हैं।

पांच महाव्रत इस प्रकार हैं-

- (1) **अहिंसा महाव्रत-** पूर्ण रूप से अहिंसा का पालन करना। किसी भी जीव को, चाहे छोटा हो या बड़ा, किसी भी प्रकार का कष्ट नहीं पहुंचाना।
- (2) **सत्य महाव्रत-** किसी भी प्रकार का झूठ नहीं बोलना।
- (3) **अचौर्य महाव्रत-** किसी भी प्रकार की कोई भी छोटी या बड़ी वस्तु, चाहे वह तिनका ही क्यों न हो, मालिक की आज्ञा बिना नहीं लेना।
- (4) **ब्रह्मचर्य महाव्रत-** पूर्ण रूप से ब्रह्मचर्य का पालन करना। प्रतिपक्षी लिंग को स्पर्श भी नहीं करना।
- (5) **अपरिग्रह महाव्रत-** संयम मर्यादा के अनुसार जीवन निर्वाह तथा संयम निर्वाह हेतु ही बिना आसक्ति के वस्त्र, पात्र, उपकरण आदि रखना। इसके अतिरिक्त सगे-संबंधियों के प्रति, पांच इन्द्रियों के विषयों के प्रति भी आसक्त नहीं होना।

हृदय- संयम निर्वाह हेतु किन उपकरणों को साधु-साध्वी रखते हैं?

पिता- वे तीन चीजों को संयम निर्वाह हेतु हमेशा अपने साथ रखते हैं।

- (1) **ओघा-** यह लम्बी डंडी से बंधा ऊनी धागों की फलियां रूप होता है। इससे बैठने के स्थान पर अथवा चलते वक्त आस-पास रहे कीड़ी आदि जीव को पूंजा जाता है, ताकि उनकी रक्षा हो सके।
- (2) **वस्त्र-** साधु-साध्वी अपने पास मर्यादित सीमा के अनुसार कम से कम वस्त्र रखते हैं।
- (3) **पातरा-** गोचरी-पानी लेने के लिए साधु काष्ठ के बने हुए उपकरण को उपयोग में लेते हैं। ये पातरे विभिन्न नाप के होते हैं।

आप सभी ने जाना कि 'जैन तीर्थ' के मुखिया कौन होते हैं। आचार्य के गुण, उनके उपकरण इत्यादि। तो ये पढ़कर आप सभी बच्चों को एक Promise करना है कि आप सभी बच्चे Week में एक बार तो स्थानक जाकर संत

या सतियां जी म.सा. के दर्शन जरूर करेंगे और इस चातुर्मास में कुछ न कुछ ज्ञान-ध्यान जरूर सीखेंगे।

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए। सभी के उत्तर 'स' (S) से प्रारंभ होते हैं।

1. साधु क्या पालता है?
2. तिर्यच साधु नहीं बन सकता, परन्तु वो एक बन सकता है?
3. एक स्थान पर 48 मिनट तक हम करते हैं?
4. पर्युषण का आठवां दिन
5. साधु को जो देते हैं?
6. सामायिक में मन का एक दोष
7. आठवें अतिचार का नाम
8. सामायिक में काया का एक दोष

Let's do something interesting....

आप अपने उत्तर दिनांक 30 अगस्त से पूर्व 9314055390 या news@sadhumargi.com पर भेज सकते हैं। साथ ही Good Box के बारे में अपने Reviews भेजें।

15 वर्ष तक के बच्चे किसी भी धार्मिक विषय पर अपनी रचनाएं, लेख व कविताएं भी भेज सकते हैं।

भक्ति रस

महत्तम महोत्सव के नौ आयाम पहुंचाए भव-भव पार

-बी. शांतिलाल पोकरणा, विजयनगरम्



महत्तम महोत्सव के आयामों से हर जीवन खिले,

ज्ञानार्जन हो आत्मा में, हो तमस् दूर, प्रकाश फैले।

स्वाध्याय हो नित, कर्म हों हमारे ढीले,

तप-त्याग हो नित, मंजिल मोक्ष की मिले।

व्रत-विवेक हो नित, साधना सबकी फले,

संस्कार से सुसंस्कारित हो जीवन, आत्म आनंद मिले।

जन-जन में राम सबके मन भाए, राम लगते सबको भले,

संघ विस्तार व शक्तिकरण से साधना को नव बल मिले।

सामाजिक क्रांति से हो नव उद्बोधन,

गुदड़ी के लाल हर जगह मिले।

सुवर्ण दीक्षा महामहोत्सव पर करते गुरुचरणों में वंदन,

अभिनंदन, रोम-रोम सबके खिले।।

CANCER OF THE SOUL (ATMA)

-Urja Mehta, Indore

FORGIVENESS

Forgiveness is termed Kshama in Hindi which can be broken into ksha + maa. 'Ksha' stands for kshay which means 'to destroy' and 'maa' stands for maan which means pride. A person can awaken the true nature of the soul with an attribute of forgiveness by destroying the feeling of pride from within.

It is usually not easy to forgive ourselves or others, because we don't understand the concept of forgiveness. Forgiveness, in most simple words, means TO LET GO. Forgiveness is like meditation, it needs to be grown within oneself and practiced regularly. It improves our well-being and keeps us away from emotional damage.

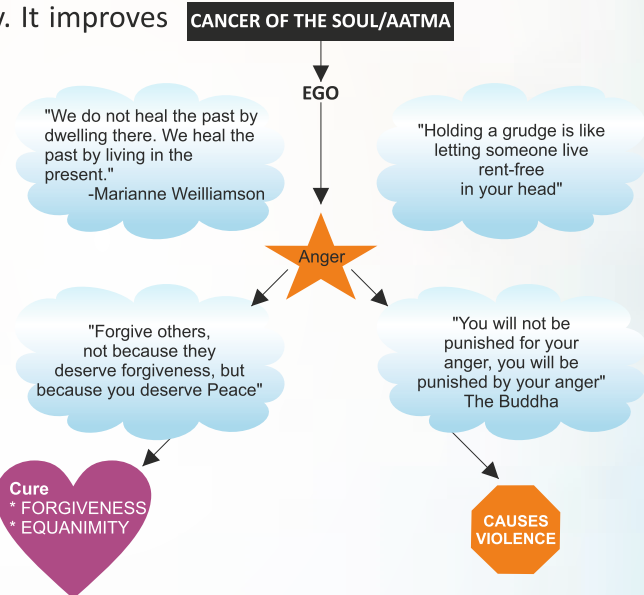
Below are a few negative mindsets we often face with respect to forgiving someone:-

1. "Forgiving someone makes me look weak."
2. "The person has to pay for it. They should be punished."
3. "The person has to say sorry first."
4. "I can't let go of the pain."

What to do instead:

Awareness of how one feels is essential. One needs to be aware and accept that they are hurt not because of others' actions or deeds, but their own expectations and feelings. Develop a form of empathy. Empathy keeps us away from revenge. Finally, channelize your energy in the right direction. Try to keep equanimity (sambhaav) in every situation, be it bad or good. Meditate, pray and stay calm.

Lord Mahavir not only preached the concepts of equanimity, forgiveness, compassion, and tolerance but he lived by those precepts even in life-threatening situations. His life should be a source of inspiration to all of us. We need to realize that we are imperfect, and so are the people around us. We are driven by our past karma, and so are the people around us. We are all going to make mistakes at one time or the other. We need to reflect upon these realities plus the core teachings of the Lord and form a habit of showing compassion, tolerance, and forgiveness every single moment. This is one of the most effective ways to lead a peaceful and serene life.



**आचार्य श्री रामेश के मंगलमय चातुर्मास में
झीलों की नगरी हुई तप-त्याग से सराबोर
श्रद्धेय श्री गगनमुनिजी म.सा., साध्वी श्री अक्षिताश्रीजी म.सा. के
मासखमण की तपस्या हुई पूर्ण
कई चारित्रात्माओं व श्रावक-श्राविकाओं के तपस्या गतिमान
नौ उपवास की लड़ी निरंतर जारी**

तपस्या, यश-कीर्ति एवं कामना के लिए नहीं अपितु एक मात्र कर्मनिर्जरा के लिए होनी चाहिए

-आचार्य श्री रामेश

वर्धमान जैन स्थानक भवन, हिरण मगरी सेक्टर-4, उदयपुर।

रामेशाचार्य तपोनिधि, श्रुत चारित्र महान।

शीश झुका वन्दन करूं, नाना गुण की खान।।

राजेश मुनिवर श्रुतनिधि, उपाध्याय गुणधाम।

नमन वाचनाचार्य को, बहुश्रुत हो अभिराम।।

**‘लोच में क्या सोच’ कार्यक्रम में अब तक 60 से अधिक लोच हुए,
एक महिला व एक जैनेतर भाई ने भी करवाया लोच**

युगनिर्माता, आगमज्ञाता, रत्नत्रय के महान आराधक, उत्क्रांति प्रदाता, गुणशील सम्प्रेरक, आराध्यदेव आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलालजी म.सा., बहुश्रुत, वाचनाचार्य उपाध्याय प्रवर श्रद्धेय श्री राजेशमुनिजी म.सा. आदि ठाणा-16 एवं शासन दीपिका साध्वी श्री शांताकंवरजी म.सा. आदि ठाणा-66 के ‘राम महोत्सव-2022’ चातुर्मास में ज्ञान, दर्शन, चारित्र, तप की अपूर्व आराधना हो रही है। धर्मपिपासु जनता आचार्य भगवन् के आगमसम्मत एवं प्रेरणादायी प्रवचन तथा जिज्ञासा समाधान कार्यक्रम और विभिन्न ज्ञानवर्द्धक शिविरों से नित नयी आध्यात्मिक ऊर्जा प्राप्त कर रही है। उदयपुर सहित मेवाड़ व देश-विदेश की धर्मप्रेमी जनता आध्यात्मिक आलोक में सराबोर हो रही है। सभी कार्यक्रमों में हर कोई बढ़-चढ़कर भाग ले रहा है। तपस्याओं की होड़ मची हुई है। कई गुप्त दीर्घ तपस्याएँ निरंतर चल रही है। ‘लोच में क्या सोच’ कार्यक्रम में अब तक 60 से अधिक लोच हो चुके हैं, जिनमें एक महिला व एक जैनेतर भाई भी शामिल हैं। प्रातःकालीन मंगल बेला में श्री मनीषमुनिजी म.सा. ने प्रार्थना करवाई।

16 जुलाई 2022। धर्मसभा को संबोधित करते हुए विश्ववंदनीय आचार्य भगवन् ने अपनी दिव्यदेशना में फरमाया कि “दुःख का स्मरण दुःख पैदा करता है। मन में बसा हुआ दुःख का भाव हमें दुःखी बनाता है। मेरे साथ किसी ने बुरा वर्ताव किया उसको मैं सह तो लेता हूँ, पर भूल नहीं पाता। तीर्थकर देवों के मार्ग पर चलने के लिए आर्तभाव से हटें, अतीत का प्रतिक्रमण हो गया हो तो उसे भूल जाएं। उसकी स्मृति दिमाग में न करें। यदि दिमाग में उसकी स्मृति रहेगी तो हम कुछ नया उपार्जन नहीं

कर पाएंगे। जितनी भी आकांक्षाएं हमारी बनती हैं वे सभी आर्तभाव के अंतर्गत आती हैं और वे मन को कमजोर बना देती हैं। आर्तभाव से हटेंगे तो सुखी हो जाएंगे और जीवन का आनंद ले पाएंगे।”

‘सत्य सदा जयकार’ चौपाई का सरस एवं सुंदर विवेचन श्रवण कर जनता प्रेरणा ग्रहण कर रही है।

श्री अटलमुनिजी म.सा. ने फरमाया कि आसक्ति संसार की जड़ है। तीर्थकर भगवान की भक्ति करने से भाव शुद्ध होते हैं। देव, गुरु एवं धर्म के प्रति हमारी अटूट श्रद्धा होनी चाहिए।

शासन दीपिका साध्वी श्री शांताकंवरजी म.सा. आदि साध्वी मंडल ने गुरुभक्ति गीत प्रस्तुत किया।

श्री इभ्यमुनिजी म.सा. के 10 उपवास का पारणा सानंद सम्पन्न हुआ। समता युवा संघ के राष्ट्रीय महामंत्री श्री दीपकजी मोगरा एवं उनकी धर्मसहायिका श्रीमती अलकाजी मोगरा ने 33 उपवास, श्रीमती चंदादेवी पारसकुमारजी डागा ने 9 उपवास के प्रत्याख्यान ग्रहण किए। पूरी सभा हर्ष-हर्ष, जय-जय ध्वनि से गूंज उठी। अन्य कई तपस्याओं के प्रत्याख्यान हुए एवं कई गुप्त तपस्याएं जारी हैं।

‘तवसा निज्जरज्जई’ अनूठा तीन दिवसीय शिविर साध्वी श्री प्रत्युषाश्रीजी म.सा. के मार्गदर्शन में प्रारम्भ हुआ। साध्वीश्रीजी ने फरमाया कि तपस्या एक मात्र आत्मशुद्धि व कर्मनिर्जरा के लिए होनी चाहिए। यश-कीर्ति के लिए तप नहीं करना चाहिए। आपश्री ने विभिन्न तपस्याओं के प्रकार विस्तार से समझाए। उभय महापुरुषों के पावन सान्निध्य में आगम वाचनी, ज्ञानचर्चा, प्रश्नोत्तरी आदि कार्यक्रम हुए।

17 जुलाई। धर्मसभा को संबोधित करते हुए आचार्यदेव ने अपनी दिव्यदेशना में फरमाया कि **“आत्मा में इतनी शक्ति है कि कषाय उसका कुछ भी नहीं बिगाड़ सकता। जब आत्मा सोई पड़ी रह जाती है तो उसको अपने अस्तित्व का भान नहीं होता। कर्म अपने खेल रचाता है। कर्मों और कषायों की विशेष ताकत नहीं है अपितु आत्मा की ताकत विशेष है। जब तक आत्मा धैर्य को स्वीकार नहीं कर लेती तब तक कषायों का वार चलता है। सहनशीलता और धैर्य हमें पूजनीय बना देते हैं। भगवान महावीर ने सदैव धैर्य और सहनशीलता का परिचय दिया। घमण्ड एवं गर्व ना कभी टिका है, न टिकेगा। अहंकार मन को अशांत बना देता है। मेरा ही बोलबाला होना चाहिए, मेरे से बड़कर कोई नहीं। अहंकार कभी किसी का नहीं रहा।”**

श्री आदित्यमुनिजी म.सा. ने फरमाया कि यह मन बड़ा ही चंचल है। हमें मन के स्वभाव को नीचे नहीं ऊपर ले जाना है। चंचल मन को शांत करना है। विचारों को सदा शुभ रखना है। शासन दीपिका साध्वी श्री शांताकंवरजी म.सा. आदि साध्वीवृन्द ने ‘गुरुवर तुम हो देशाणे वाले, सुबोध देने वाले’ गुरुभक्ति गीत प्रस्तुत किया।

देश-विदेश से आए दर्शनार्थियों एवं उदयपुर सहित आस-पास के संघों से पधारे धर्मप्रेमियों ने गुरुदर्शन-सेवा एवं प्रवचन श्रवण का लाभ भारी उपस्थिति के साथ लिया। महापुरुषों के पावन सान्निध्य में आगम वाचनी, ज्ञानचर्चा, प्रश्नोत्तरी एवं जिज्ञासा समाधान आदि कार्यक्रम सम्पन्न हुए।

महत्तम महोत्सव के विभिन्न प्रकल्पों व अन्य जानकारियों को विस्तार से समझाने हेतु टीम के सदस्यों द्वारा दो दिवसीय स्टॉल लगाई गई।

18 जुलाई। धर्मसभा को संबोधित करते हुए श्री आदित्यमुनिजी म.सा. ने फरमाया कि **“भक्ति में वह ताकत है जो भक्त को भगवान, जीव को शिव और नौकर को मालिक बना देती है। बस हमारी भाषा और व्यवहार सही होने**

चाहिए। ज्ञान का अजीर्ण अहंकार है। तप का अजीर्ण क्रोध है। क्रिया का अजीर्ण निंदा है। अहंकार जहां आएगा वहां घृणा आएगी। हमारी दृष्टि गुणपरक होनी चाहिए। छिद्रान्वेषण का त्याग करें।”

श्री अटलमुनिजी म.सा. ने फरमाया कि स्वार्थ से परमार्थ की ओर कदम बढ़ाएं। देव-गुरु-धर्म पर हमारी अटूट श्रद्धा होनी चाहिए।

साध्वी श्री चिंतनप्रज्ञाश्रीजी म.सा. ने फरमाया कि हमारे आचार्य शील और गुण दोनों ही गुणों से सम्पन्न हैं। शासन दीपिका साध्वी श्री शांताकँवरजी म.सा. आदि ने गुरुभक्ति गीत प्रस्तुत किया।

समता महिला मंडल-मुम्बई ने विभिन्न त्याग-प्रत्याख्यान ग्रहण किए। दोपहर में ज्ञानचर्चा, प्रश्नोत्तरी आदि कार्यक्रम हुए। तपस्याओं के प्रत्याख्यान निरंतर हो रहे हैं।

19 जुलाई। धर्मसभा को संबोधित करते हुए आचार्य भगवन् ने अपनी दिव्यदेशना में फरमाया कि **“संभवनाथ भगवान की सेवा योग्य तीन भावनाएं हैं- अभय, अद्वेष, अखेद। अभय यानी भयरहित अवस्था, जिससे हमारा मन चंचल होता है, हमारी एकाग्रता खंडित होती है। अरुचि होना द्वेष का लक्षण है। धार्मिक क्रियाएं करते-करते थक जाना, थकावट महसूस करने को खेद कहा गया है। अभय, अद्वेष, अखेद ये तीनों गुण हमारे भीतर होने जरूरी हैं। ये तीन अवस्थाएं हमारे भीतर होगी तो हमें भक्ति करने में आनंद आएगा।”**

श्री अटलमुनिजी म.सा. ने फरमाया कि धर्म वह प्रकाश है जो जीवन के अंधेरे को दूर कर देता है। धर्म की महिमा अपरम्पार है। साध्वी मंडल ने गुरुभक्ति गीत प्रस्तुत किया।

20 जुलाई। आचार्य भगवन् ने अपनी दिव्यदेशना में फरमाया कि **“कई बार व्यक्ति सोच लेता है कि यह कार्य असंभव है। यह मैं नहीं कर पाऊंगा। उनके लिए अमोघ उपाय है कि बुद्धि का ताला बंद मत करो। अपनी सोच पर विराम मत लगाओ। अपनी सोच को गतिशील बनाए रखो। हमारी सोच गतिशील होगी तो सारे कार्य संभव हैं, असंभव कुछ भी नहीं है। जो आपके लिए असंभव है वो तीर्थकर देवों के लिए भी असंभव है। भवी को अभवी बनाना और अभवी को भवी बनाना जैसे हमारे वश की बात नहीं है, वैसे ही तीर्थकर देवों के वश की बात भी नहीं है। ज्ञान के लिए सदा दरवाजा खुला रखना चाहिए।”**

श्री आदित्यमुनिजी म.सा. ने फरमाया कि जितने भी तीर्थकर होते हैं वे तीन शब्द देते हैं- उपइ, विगण्णे वा, धुवे इ। तीन शब्द सुनने से 1452 लोगों को 14 पूर्वों का ज्ञान हो गया। गुरु राम के प्रवचन का नशा हो जाएगा तो छोड़ना मुश्किल है। भगवान की वाणी अमोघ वाणी है। वह असफल नहीं होती। कई लोगों ने सामायिक, सचित्त त्याग व माह में चार पक्की नवकारसी करने का नियम लिया।

21 जुलाई। प्रातःकालीन मंगलमय बेला में श्री मनीषमुनिजी म.सा. ने प्रार्थना करवाई। धर्मसभा को संबोधित करते हुए शास्त्रज्ञ आचार्य भगवन् ने अपनी मधुरवाणी में फरमाया कि **“मनुष्य भव प्राप्त किया है, इसका लाभ क्या होगा? यदि मैंने देव भव को प्राप्त कर लिया, यदि मैंने मोक्ष को प्राप्त कर लिया तो मैंने लाभ क्या किया। मैंने मनुष्य जन्म की प्राप्ति कर ली और आने वाले समय में मैं जहां का तहां रह गया तो मूल पूंजी सुरक्षित कर ली। मैं यदि तिर्यच और नरक में चला गया तो मूल पूंजी को भी**

सुरक्षित नहीं रख सकूंगा। दूसरी बात कीचड़ में जन्म लेने वाला कमल निर्लिप्त हो जाता है। हमने क्रोध, मान, माया, लोभ में आंखें खोली और मेरे जीवन में संतुलन सही रहा या बिगड़ गया, यह सोचने की बात है! यदि मेरे जीवन में स्थिरता आ गई तो लाभ है और यदि मेरे जीवन में ठहराव नहीं आ सका एवं विचारों में ऊहापोह रही तो हम लाभ नहीं कमा पाएंगे।”

श्री आदित्यमुनिजी म.सा. ने सुखविपाक सूत्र का वर्णन करते हुए फरमाया कि हमारी सोच सदा सकारात्मक होनी चाहिए। शासन दीपिका साध्वी श्री शांताकँवरजी म.सा. आदि साध्वी मंडल ने गुरुभक्ति गीत प्रस्तुत किया। तपस्याओं सहित विभिन्न त्याग-प्रत्याख्यान हुए। दोपहर में गुरु-भगवंतों के पावन सान्निध्य में आगम वाचन, ज्ञानचर्चा, प्रश्नोत्तरी आदि कई कार्यक्रम हुए। दर्शनार्थियों का आवागमन निरंतर जारी है।

22 जुलाई। धर्मसभा को भगवान महावीर की अमृतवाणी से संतृप्त करते हुए आचार्य भगवन् ने अपनी पीयूषवर्षिणी वाणी में फरमाया कि “तपस्या एक मात्र कर्मनिर्जरा के लिए होनी चाहिए। तपस्या के पीछे कामना नहीं होनी चाहिए। कपड़ा जब मैला हो जाता है तो साबुन से साफ किया जाता है, वैसे ही तपस्या से आत्मा में लगे हुए कर्मों को दूर किया जाता है। क्रिया शुद्धि के पहले भाव शुद्धि होनी चाहिए। हमारी क्रिया मन को शांति देने वाली हो। मन, वचन, काया को साधने का प्रयास करना चाहिए।” ‘सत्य सदा जयकार’ चौपाई श्रवण कर जनता आत्मतृप्त हो रही है।

श्री आदित्यमुनिजी म.सा. ने सुबाहुकुमार के जीवन चरित्र से प्रेरणा लेने का आह्वान किया।

उपवास, बेला, तेला, अठाई व उससे ऊपर के कई त्याग-प्रत्याख्यान हुए। देश के कोने-कोने से दर्शनार्थियों का आवागमन जारी रहा। त्रिदिवसीय राष्ट्रीय स्वाध्यायी प्रशिक्षण शिविर प्रारम्भ हुआ, जिसमें चारित्रात्माओं ने धर्म तत्त्वबोध की महत्वपूर्ण जानकारी दी। दोपहर में गुरु-भगवंतों के पावन सान्निध्य में आगम वाचनी, ज्ञानचर्चा प्रश्नोत्तरी आदि कार्यक्रम हुए।

श्री गगनमुनिजी म.सा. के 23 उपवास की जैसे ही घोषणा हुई पूरी सभा हर्ष-हर्ष ध्वनि से गूँज उठी। अन्य कई चारित्रात्माओं के गुप्त तपस्याएं निरंतर जारी है।

23 जुलाई। श्री मनीषमुनिजी म.सा. द्वारा मंगलमय प्रार्थना के पश्चात् साध्वी श्री शुभदाश्रीजी म.सा. ने धार्मिक क्रियाओं की शुद्ध विधि शिविर के अंतर्गत सामायिक, प्रतिक्रमण, वंदना, प्रतिलेखन आदि की शुद्ध विधि की महत्वपूर्ण जानकारी देते हुए फरमाया कि समझपूर्वक शुद्ध क्रिया करने से कर्मों की निर्जरा होती है, मन में अपार शांति की अनुभूति होती है। आगम के अनुसार कोई भी तपस्या एक दिन पूर्व चौविहार के साथ होती है। शुद्ध क्रिया का शुद्ध लाभ होता है। इसलिए आगम के अनुसार धार्मिक क्रिया करनी चाहिए। भाई-बहिनों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया।

धर्मसभा को संबोधित करते हुए परमप्रतापी आचार्य भगवन् ने अपनी दिव्यदेशना में फरमाया कि “मन, वचन, काया को साधा जाए वो साधना है। यह साधना पंच महामव्रतधारी साधु विशेष रूप से करते हैं। अल्पकाल के लिए आत्मा परमात्मा के बीच संबंध उपासना है, जो श्रावक-श्राविका वर्ग करते हैं। साधना उपासना के परिणाम को आराधना कहते हैं। ज्ञान, दर्शन, चरित्र की बोधि को सही समझ कहा गया है। द्रष्टाभाव से हमें देखना चाहिए। अच्छे-बुरे की तुरंत प्रतिक्रिया नहीं होनी चाहिए। जिनेश्वर देव ने जो कहा है वह सत्य है, निःशंक है। जीवन में कभी भी हताशा-निराशा के

भाव नहीं लाने चाहिए”

श्री आदित्यमुनिजी म.सा. ने फरमाया कि पाश्चात्य संस्कृति के प्रभाव में हम अपनी संस्कृति व संस्कारों को न भूलें। खान-पान, वेशभूषा, पहनावा सादगी व शालीनता से पूर्ण होना चाहिए। फास्टफूड से बचने का प्रयास होना चाहिए। शासन दीपिका साध्वी श्री शांताकँवरजी म.सा. आदि साध्वीमण्डल ने भाव गीत “सुबोध देने वाले, तेरी महिमा का नहीं पार जी” के माध्यम से भाव रखे।

आत्मबल का परिचय देते हुए कई भाई-बहनों ने एकासन, आयम्बिल, उपवास, बेला, तेल और इससे ऊपर के कई प्रत्याख्यान लिए। सभा में उपस्थित अपार जनसमूह ने कभी भी आत्महत्या न करने का संकल्प आचार्य भगवन् से ग्रहण किया। साध्वी श्री अक्षिताश्रीजी म.सा. के 23 उपवास की घोषणा होते ही हर्ष-हर्ष, जय-जय से सभा गूँज उठी। दोपहर में आगम वाचनी, ज्ञानचर्चा, प्रश्नोत्तरी आदि हुए।

श्री आदित्यमुनिजी म.सा. ने चारित्रात्माओं की तपस्या के उपलक्ष्य में 29, 30, 31 जुलाई को 151 तैले, 500 संवर एवं 5000 सामायिक करने का आह्वान किया। संघ, महिला समिति, समता युवा संघ एवं बहू मण्डल सहित पूर्व पदाधिकारियों ने सहर्ष क्रियान्वित करने की स्वीकृति प्रदान की। धार्मिक क्रियाओं की शुद्ध विधि शिविर में श्री मयंकमुनिजी म.सा. व साध्वी श्री शुभदाश्रीजी म.सा. ने विशेष मार्गदर्शन दिया। भारी संख्या में दर्शनार्थियों ने आराध्यदेव के पावन दर्शन का लाभ लिया।

24 जुलाई। प्रातः समता रविवारीय शाखा का पाठ श्री मनीषमुनिजी म.सा. ने सामूहिक रूप से करवाया। धार्मिक क्रियाओं की शुद्ध विधि शिविर में साध्वी श्री शुभदाश्रीजी म.सा. ने महत्त्वपूर्ण जानकारी दी।

धर्मसभा को संबोधित करते हुए प्रशांतमना आचार्य भगवन् ने अपनी दिव्यदेशना में फरमाया कि **“जहां अपने पर भरोसा होगा वहां हमें धर्म पर भरोसा होगा और परमात्मा पर भरोसा होगा। अपने पर भरोसा, विश्वास नहीं होगा तो धर्म पर विश्वास कैसे होगा? जब अपने पर भरोसा है तो दूसरे से कोई आकांक्षा काम नहीं आएगी और जब अपने पर भरोसा नहीं है तो अपना घर खाली नजर आता है। दूसरों की बढ़ती को देखकर मन में यह हीन भावना नहीं आनी चाहिए कि हमारे पास कुछ भी नहीं है। अपनों के प्रति वाट्सल्य भाव होना चाहिए। जीना है तो धर्म के लिए और मरना है तो धर्म के लिए”**

श्री आदित्यमुनिजी म.सा. ने **“तू सांचो रे थारो सांचो रे दरबार रे”** गीतिका प्रस्तुत करते हुए फरमाया कि ऐसे महान गुरु राम की शरण हमें मिली है। धर्माराधना में पीछे न रहें। जीवन में धर्म को सर्वप्रथम प्राथमिकता दें। शासन दीपिका साध्वी श्री शांताकँवरजी म.सा. आदि साध्वी मण्डल ने **“भव से तिराने वाले जय हो गुरु राम”** गीतिका प्रस्तुत की। श्री गगनमुनिजी म.सा. एवं साध्वी श्री अक्षिताश्रीजी म.सा. क्रमशः 25 व 24 उपवास के साथ मासखमण की ओर अग्रसर हैं। अन्य अनेक तपस्याओं के प्रत्याख्यान श्रावक-श्राविका वर्ग में हुए।

दोपहर में त्यागी-महापुरुषों के पावन सान्निध्य में आगम वाचनी, ज्ञानचर्चा, प्रश्नोत्तरी, कर्मग्रंथ थोकड़े की क्लास आदि सम्पन्न हुए। परम गुरुभक्त विजयजी नवलखा-राउरकेला के निधन पर परिजनों ने गुरुदेव के पावन चरणों में आध्यात्मिक शांति प्राप्त की। 15 मिनट स्वाध्याय करने का संकल्प धर्मसभा में उपस्थित कई भाई-बहनों ने लिया।

स्वाध्यायी प्रशिक्षण शिविर

परम प्रतापी आचार्य भगवन् एवं उपाध्याय प्रवर के पावन सान्निध्य में त्रिदिवसीय राष्ट्रीय स्वाध्यायी प्रशिक्षण शिविर समता प्रचार संघ द्वारा आयोजित किया गया। शिविर में महापुरुषों के प्रेरणा पाथेय के साथ ही

1. साध्वी श्री चिंतनप्रज्ञाश्रीजी म.सा. ने वंदना के 32 दोषों के बारे में विस्तार से बताया।
2. साध्वी श्री अर्चिताश्रीजी म.सा. ने धार्मिक क्रियाओं की शुद्ध विधि की महत्त्वपूर्ण जानकारी प्रदान की।
3. साध्वी श्री सुसौम्यश्रीजी म.सा. ने जघन्य, मध्यम, उत्कृष्ट तीन प्रकार के स्वाध्यायों की व्याख्या करते हुए फरमाया कि हर स्वाध्यायी सिर्फ 8 दिन नहीं अपितु 12 महीने के स्वाध्यायी बनें।
4. अंतकृद्दशांग सूत्र, 8 कर्म का थोकड़ा, स्वाध्यायी जीवन कैसा हो, जैन सिद्धांत बत्तीसी, प्रतिक्रमण, मोटिवेशनल बिन्दुओं आदि की जानकारी अशोकजी मुणोत, जिनेन्द्रजी जैन आदि ने दी।

शिविर का समापन संघ अध्यक्ष, मंत्री, संयोजक एवं अन्य अनेक गणमान्यजनों की गरिमामय उपस्थिति में हुआ। संयोजन महेशजी नाहटा ने किया। शिविर में भाग लेने वाले स्वाध्यायियों ने स्वाध्यायी सेवा देने एवं एक और नया स्वाध्यायी तैयार करने का संकल्प दोहराया। इस अवसर पर श्री साधुमार्गी जैन संघ-उदयपुर द्वारा स्वाध्यायियों का बहुमान किया गया।

25 जुलाई। धार्मिक क्रियाओं की शुद्ध विधि की जानकारी साध्वी श्री शुभदाश्रीजी म.सा. ने दी। धर्मसभा को संबोधित करते हुए श्री आदित्यमुनिजी म.सा. ने फरमाया कि आचार्य भगवन् द्वारा प्रदत्त आध्यात्मिक आरोग्यम् व्यक्ति, घर, परिवार, समाज देश के लिए वरदान है। (1) गुणपरक दृष्टि (2) छिद्रान्वेषण त्याग (3) इन्द्रिय निग्रह। पंखा, बिजली, कूलर, मोबाइल, टी.वी. का बटन दबाने से पहले हमारे मन में क्या यह संवेदना आती है कि कितने जीवों की हिंसा हो रही है। सब्जी में नमक नहीं है तो हमारी इन्द्रियों पर संयम है या नहीं? खाने और बोलने में संयम कितना है? आत्मचिंतन करें। हमें खुद की तारीफ नहीं दूसरों की तारीफ करनी है। छिद्रान्वेषण जहां है वहां जिनशासन नहीं है।

श्री अटलमुनिजी म.सा. ने फरमाया कि भगवान तुम्हारे अंदर हैं। आनंद तुम्हारे अंदर है। उसे खुद के ज्ञान से ही जाना जा सकता है। साध्वी श्री अर्चिताश्रीजी म.सा. ने फरमाया कि गुरुदेव का आभामण्डल अध्यात्म से परिपूर्ण है। हर किसी को अपनी ओर आकर्षित कर लेता है। पुण्यवानी से दुर्लभ चातुर्मास का अवसर मिला है। अपनी आत्मा को जगाएं और अवसर का लाभ उठाएं। तपस्याओं के प्रत्याख्यान प्रचुर संख्या में हुए।

‘राम गुरु का है संदेश, व्यनसमुक्त हो सारा देश’ कार्यक्रम अनेक स्कूलों में सम्पन्न हुआ। दोपहर में आगम वाचनी, ज्ञानचर्चा, प्रश्नोत्तरी कक्षाएँ आदि सम्पन्न हुए। बाहर से दर्शनार्थियों का आवागमन निरंतर जारी है। उदयपुर संघ की सेवाएं अत्यंत सराहनीय हैं।

साध्वी श्री सुअर्चा श्री जी म.सा. के देवलोकगमन पर

आचार्य प्रवर का भावभरा उद्बोधन

26 जुलाई। युगनिर्माता आचार्य श्री रामेश की आज्ञानुवर्तिनी, अनुपम साधिका साध्वी श्री सुअर्चाश्रीजी म.सा. के जावरा में देवलोकगमन पर उन्हें हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित की गई।

इस अवसर पर प्रशांतमना आचार्य भगवन् ने शांत, दांत, गंभीर मुद्रा में फरमाया कि “साध्वी श्री सुअर्चाश्रीजी

म.सा. ने 67 वर्ष की आयु में दीक्षा ली। आपका पीहर पक्ष साधुमार्गी परिवार है और ससुराल पक्ष तेरापंथ संप्रदाय से जुड़ा है। धर्म-ध्यान, ज्ञान-ध्यान में उनकी विशेष रुचि थी। उनका तेरापंथ संप्रदाय में दीक्षा लेने का विचार था किन्तु वहां अनुमति नहीं मिली। साध्वी श्री ताराकँवरजी म.सा. के गंगाशहर-भीनासर चातुर्मास में वे सम्पर्क में आईं। उनकी बेटी बोली की मां की दीक्षा लेने की भावना है। उनकी आयु 67 वर्ष हो चुकी है। हमारे यहां पर नाना गुरु एवं उनसे पहले से ही यह भावना रही है कि कोई भी संयम लेना चाहे तो अन्तराय नहीं देना, उनको सहयोग देना। मैंने कहा- महासतीजी के पास रहें, अनुभव करें। विशेष आज्ञा से उनकी दीक्षा गंगाशहर-भीनासर में सम्पन्न हुई। दस वर्षों तक संयम की आराधना की। 24 जुलाई की रात को सभी महासतियों से उन्होंने क्षमायाचना की। मन में यह दृढ़ता थी कि मुझे संयम में दोष नहीं लगाना है। कई बार दवाई ग्रहण करने की स्थिति बन जाती किन्तु सजगता से आलोचना करके शुद्धिकरण कर लेते थे। कल सुबह धोवन पानी आया तो महासतियों ने पानी पीने का निवेदन किया। लेकिन कहा कि अभी नवकारसी नहीं आई है। नवकारसी आने के बाद पानी लिया और दूध की एक-दो घूंट ली ही थी कि साइलेंट अटैक आ गया और निढाल हो गए। डॉक्टर आया, लेकिन वो क्या करे, क्योंकि हंसा उड़ जाए तो पिंजरा किस काम का ? जिंदगी का कोई भरोसा नहीं है किन्तु आशा अमर धन है। तीन मनोरथ भावपूर्वक हमारे विचारों में चलता रहता है तो उसकी सफलता कभी न कभी होती है। 'भावना भव नाशिनी' आदमी जैसा भाव भाता है वैसा ही बन जाता है।'

आचार्य भगवन् ने पूरी सभा में तीन मनोरथ उच्चारित करते हुए फरमाया कि "प्रथम मनोरथ में वह दिन धन्य होगा, वह दिन परम कल्याणकारी होगा, जिस दिन आरंभ-परिग्रह का त्याग करूंगा। दूसरे मनोरथ में वह दिन धन्य होगा जब आगार धर्म छोड़कर अणगार धर्म स्वीकार करूंगा। तीसरे मनोरथ में वह दिन धन्य होगा जब आलोचना-प्रतिक्रमण कर शुद्ध मन से संलेखना स्वीकार करूंगा।"

आचार्य भगवन् ने आगे फरमाया कि "न किसी से अपेक्षा रखना और न किसी की अपेक्षा करना। अपेक्षा-उपेक्षा संसार में भटकाने वाली है।"

श्री आदित्यमुनिजी म.सा. ने गीतिका 'क्या भरोसा इस जिंदगी का, साथ देता नहीं कोई किसी का' के माध्यम से फरमाया कि महासती श्री सुअर्चाश्रीजी म.सा. ने संयम लेकर शासन की प्रभावना की। एक मुहूर्त का संयम भी जीवन को तिराने वाला है। अंत में 'इतनी कृपा भगवन् बनाए रखना, मरते दम तक सेवा में लगाए रखना' भाव गीतिका प्रस्तुत की।

श्री अटलमुनिजी म.सा. ने फरमाया कि साधु जीवन धारण करें, सर्वश्रेष्ठ नहीं तो सच्चे श्रावक बनें। संघ मंत्री एवं महेश नाहटा ने साध्वीजी का जीवन परिचय प्रस्तुत करते हुए उनके निधन को शासन की अपूरणीय क्षति बताया। सम्पूर्ण सभा ने चार-चार लोगस का ध्यान कर हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित की। एक वर्ष के लिए कई लोगों ने एक मिठाई का त्याग ग्रहण किया। विभिन्न तपस्याओं के प्रत्याख्यान हुए।

दोपहर में आगम वाचनी, ज्ञानचर्चा, प्रश्नोत्तरी आदि हुए।

27 जुलाई। धर्मसभा को संबोधित करते हुए प्रशान्तमना आचार्यदेव ने फरमाया कि “संघ धर्म में चतुर्विध संघ की सेवा करने को सुलभ बोधि की प्राप्ति होती है। आने वाले समय में उसको बोधि, ज्ञान, दर्शन, चारित्र की सुलभता से प्राप्त होंगे। मेहनत करते हैं किन्तु सामायिक-प्रतिक्रमण याद नहीं होता। कोई हमारी निंदा, बुराई करे तो मन में खिन्नता नहीं आने दें और कोई प्रशंसा करे तो खुश नहीं होना। धर्मारोपण के लिए मनोबल दृढ़ होना चाहिए। पुरुषार्थ करने से, अभ्यास करने से सफलता निश्चित मिलेगी।” ‘सत्य सदा जयकार’ की चौपाई श्रवण कर जनता आत्ममुग्ध हो गई।

श्री अटलमुनिजी म.सा. ने फरमाया कि पुण्य-पाप हमारे जीवन में बढ़े या घटे, आत्मचिंतन करें। श्री शोभनमुनिजी म.सा. ने जैन सिद्धांत बत्तीसी की कक्षा ली। तपस्याओं के कई प्रत्याख्यान हुए। श्री गगनमुनिजी म.सा. के 28 उपवास, साध्वी श्री अक्षिताश्रीजी म.सा. के 27 उपवास के साथ कई चारित्रात्माओं के तपस्याएं गतिमान हैं।

कई स्कूलों में व्यसनमुक्ति कार्यक्रम हुए। दोपहर में ज्ञानचर्चा, आगम वाचनी, प्रश्नोत्तरी आदि हुए। दर्शनार्थियों का आवागमन निरंतर जारी है।

28 जुलाई। धर्मसभा को संबोधित करते हुए जन-जन की आस्था के केन्द्र आचार्य भगवन् ने अपनी दिव्यदेशना में फरमाया कि “एक कषाय के पीछे चारों कषायों के संबंध जुड़े हुए हैं। क्रोध, अहंकार के वश में होकर परमात्मा के दर्शन नहीं हो सकेंगे। क्रोध के वशीभूत होकर आदमी कितना झूठ बोलता है, क्या-क्या बोल जाता है? क्रोध में आदमी को पता नहीं चलता कि मैं क्या बोल रहा हूँ। बहुत कम व्यक्ति होते हैं जो क्रोध के क्षणों में अपने नियंत्रण को बनाए रखने में समर्थ होते हैं और भीतर में क्रोध आ रहा है, फिर भी नियंत्रण बनाए रखते हैं।”

श्री अटलमुनिजी म.सा. ने फरमाया कि आचार्य श्री नानेश की अनुपम देन समीक्षण ध्यान है। तनाव से मुक्ति के लिए मन की शांति के लिए प्रतिदिन श्रावक-श्राविका वर्ग को भी समीक्षण ध्यान करना चाहिए। शासन दीपिका साध्वी श्री शांताकँवरजी म.सा. आदि साध्वी मण्डल ने ‘धरती अंबर गूँज रहे, जय-जय गुरुदेव’ भाव गीत प्रस्तुत किया। तपस्याओं के विभिन्न प्रत्याख्यान हुए। चारित्रात्माओं की तपस्याएं निरंतर चल रही हैं।

समता युवा संघ उदयपुर के पदाधिकारियों व सदस्यों ने 2 माह, 4 माह के लिए रात्रिभोजन त्याग, जमीकंद त्याग, शीलव्रत, 30 संवर, 1 घंटा मौन, प्रतिदिन 1 घंटा मोबाइल का त्याग आदि कई नियम ग्रहण किए। श्रद्धालुओं ने गुरुदर्शन-सेवा का लाभ लिया। दोपहर में महापुरुषों के सान्निध्य में आगम वाचनी, ज्ञानचर्चा, प्रश्नोत्तरी, जिज्ञासा समाधान आदि कार्यक्रम हुए।

29 जुलाई। प्रातःकालीन बेला में मंगलयम प्रार्थना श्री मनीषमुनिजी म.सा. ने सुमधुर स्वरो में करवाई। जैन सिद्धांत बत्तीसी की समझाइश श्री शोभनमुनिजी म.सा. ने दी।

संत श्री गगनमुनिजी म.सा. के मासखमण तप (30 उपवास) पूर्ण होने के पावन प्रसंग पर महान तपोधनी आचार्य भगवन् ने अपनी दिव्यदेशना में फरमाया कि “जो व्यक्ति कठिन समय में धैर्य की रस्सी थामे रखता है वो ही अंत में अपने लक्ष्य को प्राप्त कर सकता है। तपस्या केवल कर्मनिर्जरा के लिए होनी चाहिए। निर्जरा कब होगी जब समभाव रहता है। समभाव भीतर होना चाहिए, सिर्फ बाहर नहीं। तपस्या करने से मन शांत हो जाता है। तपस्या में दिखावा, आडम्बर, प्रदर्शन, यश-कीर्ति की चाहना नहीं होनी चाहिए।

समभाव में जीने का प्रयास करना चाहिए। जीवन में कई बातें आएंगी, पर मन में उतार-चढ़ाव न आए, ऐसा प्रयास होना चाहिए। श्री गगनमुनिजी म.सा. ने आत्मबल का परिचय देते हुए मासखमण तप का पुरुषार्थ किया है। पूर्व में कई तपस्याएं आपने की हैं। तप के पावन प्रसंग पर हम भी समभाव की साधना में आगे बढ़ें और कुछ न कुछ तपाराधना करें।”

आज ही सुश्राविका श्रीमती विमलादेवी धर्मसहायिका रमेशचंद्रजी सियाल-उदयपुर के मासखमण तप पूर्ण हुआ।

श्री आदित्यमुनिजी म.सा. ने भजन ‘देखो रे शासन की शान, तपस्या के व्रत का उत्थान’ प्रस्तुत करते हुए फरमाया कि तपस्या से मन में निर्मलता आती है। श्री हेमगिरीजी म.सा. ने ‘तपस्या की छाई है बहार, खुशियां मनाओ’ भाव गीतिका के साथ फरमाया कि तपस्या से आत्मशक्ति बढ़ती है। श्री मयंकमुनिजी म.सा. आदि संतवृन्द ने अपने भाव यूं रखे-

**प्रभु के पुलकित उपवन में, महक फैली है आज चंदन,
राम गुरु के श्रीचरणों में, यह अनुपम त्याग है अर्पण।**

साध्वी श्री कमलश्रीजी म.सा. ने फरमाया कि तप करने से करोड़ों भवों के संचित कर्म नष्ट हो जाते हैं। गुरु सान्निध्य में श्री गगनमुनिजी म.सा. ने मासखमण तप करके आदर्श उपस्थित किया है। साध्वी मण्डल ने ‘रिमझिम सावन बरसे, चतुर्विध घणा ही हरसे, राम गुरु दरबार में’ गीतिका प्रस्तुत की।

मासखमण तपस्वी श्री गगनमुनिजी म.सा. ने अपने सुंदर भाव व्यक्त करते हुए फरमाया कि अपने जीवन के जौहरी हम स्वयं बनें। क्या पता ये मौका मिले न मिले। जो व्यक्ति उपवास नहीं कर सकता, वो अगर कषायों को रोकता है तो ज्यादा बड़ी तपस्या है। आचार्य भगवन् की कृपा से मेरा यह छोटा-सा तप पूर्ण हो गया है।

पूर्व में श्री गगनमुनिजी म.सा. तीन मासखमण, नौ उपवास तीन बार, अठाई तीन बार, सात उपवास चार बार, सौ तेले व 1 से 20 तक की लड़ी गुरुकृपा से कर चुके हैं। तपस्या करते हुए अपनी दिनचर्या के साथ ही गोचरी लेने भी आप पधारते थे।

संघ मंत्रीजी व महेश नाहटा ने तपस्वी आत्माओं से प्रेरणा लेने का निवेदन किया। आपने तपस्वी श्री गगनमुनिजी म.सा., तपस्विनी श्रीमती विमलादेवी सियाल धर्मसहायिका रमेशचंद्रजी सियाल-उदयपुर का संक्षिप्त जीवन परिचय प्रस्तुत कर उनके उत्कृष्ट त्याग की सराहना की।

सभा में उपस्थित जनता ने अनुमोदना-अनुमोदना बारम्बार के सामूहिक स्वरो ने सम्पूर्ण माहौल को गुंजा दिया। 30 दिन तक भोजन में कोई भी प्रतिक्रिया नहीं करने का संकल्प पूरी सभा ने लिया। अनेक तपस्याओं के पच्चक्खाण एवं विभिन्न त्याग-प्रत्याख्यान हुए। दोपहर में महापुरुषों के सान्निध्य में ज्ञानचर्चा, प्रश्नोत्तरी, वाचनी आदि कार्यक्रम हुए।

30 जुलाई। धर्मसभा को संबोधित करते हुए आचार्य भगवन् ने अपनी दिव्यवाणी में फरमाया कि **“इस लोक की और परलोक की कामना के लिए तप नहीं करना। यश-कीर्ति और प्रशंसा के लिए तप नहीं करना। एक मात्र कर्मनिर्जरा के लिए तप करना। कर्मनिर्जरा, आत्म-समाधि लक्ष्य होना चाहिए। उस लक्ष्य की दिशा में मुझे आगे बढ़ना है यह भाव रखना चाहिए। साध्वी श्री अक्षिताश्रीजी म.सा. के मासखमण तप पूर्ण हो रहा है। पूर्व में भी उन्होंने मासखमण तप किए हैं। मनोबल उनका मजबूत रहा है। तपस्या मनोबल दृढ़ होने से होती है। नौ तत्त्वों का ज्ञान नहीं है तो निर्जरा कैसे**

होगी? धार्मिक क्रिया करें उससे पूर्व नौ तत्व का ज्ञान अवश्य करें। नौ तत्व का ज्ञान होगा तो हमारी आत्मिक दिशा सही चलेगी।”

श्री आदित्यमुनिजी म.सा. ने फरमाया कि तपस्या गुरुकृपा से ही संभव है। साध्वी श्री अक्षिताश्रीजी म.सा. ने मासखमण तप पूर्ण कर अपूर्व आत्मबल का परिचय दिया है। यह सब गुरुकृपा से ही हो रहा है। ज्ञानी हो, चाहे तपस्वी हो, चाहे धनवान हो, इसका अभिमान नहीं होना चाहिए।

साध्वी श्री तरुलताजी म.सा. ने फरमाया कि तप से आत्मा निर्मल-पवित्र हो जाती है। गुरुकृपा से साध्वीश्रीजी के आज दीर्घ तप पूर्ण हो रहा है। साध्वी श्री अक्षिताश्रीजी म.सा. ने मासखमण से पहले पारणे में पानी से दो ठंडी रोटी खाई। धन्य हैं ये महासतीजी, जो अप्रमत्त भाव से अन्य साध्वियों की सेवा में लीन रही।

साध्वी श्री जलजश्रीजी म.सा. ने अपने भावोद्गार में फरमाया कि तप हो या पारणा, दोनों में सुख-साता रहे और यह सब गुरुकृपा से सानंद पूर्ण होते हैं। साध्वी श्री मर्यादाश्रीजी म.सा. आदि साध्वीवृंद ने गीत ‘अहो जिनशासन लगे मनभावन, ये त्याग-तपस्या लगे मनभावन’ प्रस्तुत किया।

साध्वी श्री अमिताश्रीजी म.सा. ने फरमाया कि आचार्य भगवन् के चातुर्मास का अच्छा अवसर मिला है, इसका लाभ उठाना चाहिए। आचार्य भगवन् द्वारा दिए गए आध्यात्मिक आरोग्यम् के प्रथम सूत्र ‘गुणपरक दृष्टि’ को सभी को आत्मसात् करना है। तीस दिन के लिए प्रत्येक दिन एक व्यक्ति के अच्छे गुणों को देखना और उसे प्रकट करना। साध्वीवृंद ने गीत ‘तपस्या की ट्रेन उदयपुर नगरी में आई, तपस्या बहुत मुश्किल है ज्ञानीजन फरमाते’ प्रस्तुत किया।

उपस्थित सभी ने तपस्विनी साध्वीजी की उत्कृष्ट तपस्या की सराहना की। अनेक तपस्याओं के पच्चक्खाण हुए। श्री गगनमुनिजी म.सा. के आज मासखमण तप का पारणा हुआ। साध्वी श्री अक्षिताश्रीजी म.सा. ने पूर्व में दो मासखमण, 5 अठाई एकांतर तप आदि किए हैं।

नाहटा परिवार-नगरी से गुरुदर्शन यात्रा में आए भाई-बहिनो ने विभिन्न त्याग-प्रत्याख्यान ग्रहण किए। नोखा से सुंदरलालजी लुणावत परिवार सुपुत्री के निधन पर आध्यात्मिक शांति के लिए गुरुचरणों में उपस्थित हुआ। दोपहर में आगम वाचनी, ज्ञानचर्चा, प्रश्नोत्तरी आदि कार्यक्रम हुए।

लाइफ बुस्टिंग वर्कशॉप में 12 व्रत पर विस्तृत मार्गदर्शन श्री अटलमुनिजी म.सा. ने प्रातः एवं दोपहर में दिया। मनेंद्रगढ़ निवासी सरदार सुखमिंदर सिंह एवं सरदार सिमरथ सिंह ने आजीवन मद्य-मांस का त्याग किया। सामूहिक तेला, सामायिक, संवर अनुमोदना में लोगों ने बद्ध-चढ़कर भाग लिया।

31 जुलाई। ‘लाइफ बुस्टर शिविर 12 व्रतधारी बनें’ शिविर में श्री अटलमुनिजी म.सा. ने फरमाया कि साधु बनें तो सर्वश्रेष्ठ नहीं तो एक व्रत से 12 व्रत धारी श्रावक बनकर मनुष्य जीवन को उन्नति के शिखर पर ले जाएं। व्रत-नियम से समुद्र जितना पाप एक बूंद की तरह हो जाता है। पुराने भव के पाप आत्मा से दूर हो जाते हैं। व्रत, मर्यादा से जीवन में तनाव खत्म होकर मन को शांति मिलती है। व्रत-पच्चक्खाण बूस्टर से जीवन में तुरन्त धर्म प्रविष्ट होता है। व्रत धर्म से घर-परिवार-समाज में व्याप्त वैमनस्यता दूर हो जाती है। संतोष से मन तृप्त हो जाता है।

धर्मसभा को संबोधित करते हुए विश्ववन्दनीय आचार्य भगवन् ने अपनी दिव्यदेशना में फरमाया कि **“आजकल लोग अच्छी बात सुनें या ना सुनें, पर किसी की निंदा-बुराई सुनने के लिए लालायित रहते हैं। धर्म स्थानक आबाद होना चाहिए। साधु-संत नहीं रहते तब भी धर्म क्रिया में उसी उत्साह से भाग लेते रहना चाहिए। प्रतिदिन धर्म स्थानक में आकर सामायिक करें तो सबसे श्रेष्ठ, नहीं तो सप्ताह में एक**

दिन सामायिक होनी चाहिए। सुना जाता है कि धर्म स्थानक में निन्दा बहुत होती है। निन्दा करने वाले से ज्यादा निन्दा सुनने वाला ज्यादा अपराधी है। धर्म स्थानक निन्दा, क्रोध, बुराई, अहंकार, ईर्ष्या करने का स्थान नहीं है। आचार्य भगवन् ने जैसे ही महासती श्री अक्षिताश्रीजी म.सा. के 31 उपवास, महासती श्री प्रगतिश्रीजी म.सा. के 26 उपवास, महासती श्री संपन्नताश्रीजी म.सा. के 23 उपवास की घोषणा की, सम्पूर्ण सभा केसरिया-केसरिया गीतों से गुंजायमान हो उठी।

श्री आदित्यमुनिजी म.सा. ने फरमाया कि तपस्या से बढ़कर मन की समता है। आपश्री ने भाव गीतिका 'कर्म खपाना है, मुक्ति में जाना है' प्रस्तुत कर सभी को भावविभोर कर दिया। साध्वी श्री सुमित्राश्रीजी म.सा. ने फरमाया कि आचार्य भगवन् के आशीर्वाद से मन की मुरादे पूरी हो जाती हैं। तपाराधना में लोग तत्पर हो जाते हैं। साध्वी श्री अनुरागश्रीजी म.सा. ने फरमाया कि आचार्य भगवन् की कृपा से उदयपुर में तपस्या की बहार है। तपस्विनी साध्वी श्री अक्षिताश्रीजी म.सा. के समान तप एवं उत्कृष्ट सेवा भावना हमारे जीवन में आ जाए, ऐसी मंगलभावना आचार्य भगवन् से करते हैं। साध्वी मण्डल ने तपस्या गीत प्रस्तुत किया। उपवास, बेला, तेला, अठाई, 9, 15, 21, 26, 31 सहित अनेक तपस्याओं के प्रत्याख्यान हुए। काफी संख्या में सामायिक के प्रत्याख्यान हुए।

समता युवा संघ-नोखा के सदस्यों ने विभिन्न त्याग-प्रत्याख्यान ग्रहण किए। धर्मपरायणा कमलेशकुमारी धर्मसहायिका सुभाषचंदजी ओस्तवाल-ब्यावर के निधन पर परिजनों ने गुरुचरणों में आध्यात्मिक संदेश व शांति प्राप्त की। दोपहर में महापुरुषों के पावन सान्निध्य में आगम वाचनी, ज्ञानचर्चा, प्रश्नोत्तरी आदि कार्यक्रम हुए। आचार्य भगवन् ने त्वरित सुंदर समाधान प्रदान कर असीम अनुकम्पा की। देश के कोने-कोने से श्रद्धालुओं का आवागमन जारी है। राम महोत्सव चातुर्मास उदयपुर में अपूर्व धर्मोत्साह का वातावरण देखने को मिल रहा है।

नंदुरबार, शहादा, नगरी, ब्यावर, राजिम, भिलाई, रायपुर, चैन्नई, कोयम्बटूर, मदुरांतकम्, बैंगलोर, इंदौर, दुर्ग, कपासन, फतेहनगर, अजमेर, विजयनगर, नोखा, बीकानेर, देशनोक, बड़ीसादड़ी, छोटीसादड़ी, जोधपुर, चित्तौड़गढ़, मुम्बई, पुणे, दिल्ली, सूरत, अहमदाबाद, बेगूं, मावली, गुडली, रतलाम, दिल्ली, बाड़मेर, ईरोड़, राजनांदगांव, सम्बलपुर, कोण्डागांव, जगदलपुर, जयपुर, सवाईमाधोपुर आदि अनेक स्थानों के श्रद्धालुओं ने गुरुदर्शन-सेवा का लाभ लिया।

युगनिर्माता आचार्य श्री रामेश एवं बहुश्रुत, वाचनाचार्य उपाध्याय प्रवर श्री राजेशमुनिजी म.सा. के सान्निध्य में राम महोत्सव के अन्तर्गत उदयपुर में तपस्याओं की बहार : 31 जुलाई तक निम्न तपस्याएं सम्पन्न

श्री गगनमुनिजी म.सा. एवं साध्वी श्री अक्षिताश्रीजी म.सा. के मासखमण तप पूर्ण तथा साध्वी श्री प्रगतिश्रीजी म.सा., साध्वी श्री सम्पन्नताश्रीजी म.सा., साध्वी श्री जलजश्रीजी म.सा., साध्वी श्री करुणाश्रीजी म.सा., साध्वी श्री गरिमाश्रीजी म.सा., साध्वी श्री पूजिताश्रीजी म.सा. एवं साध्वी श्री श्रुतिश्रीजी म.सा. मासखमण की ओर अग्रसर

मीरादेवी मेहता	34 जारी	विमलादेवी सियाल	30	कुसुमजी कोठारी	25 जारी
दीपकजी मोगरा	33	प्रेमबाई बोहरा	28 जारी	सुनीलजी मेहता	24 जारी
अलकाजी मोगरा	33	अभिषेकजी पितलिया	26 जारी	ज्ञानजी डांगी	23 जारी

लक्ष्मीजी मेहता	22 जारी	सीमाजी पोखरना	15	राजेशजी करणपुरिया	9
हंसा भाणावत	21 जारी	अजयजी दक	15	अशोकजी कोठारी	9
मोहिनीदेवी कोठारी-कुराबड़	21 जारी	चंदाजी पटवा	15	अंजूजी मोगरा	9
नलिनजी लोढ़ा	21 जारी	सुनीताजी मेहता	15	बादामबाई ठाकुरगोता	9
अंजना पोरवाल	21 जारी	कुसुमजी डांगी	15	आशाजी लोढ़ा	9
शांताबाई बडाला	21 जारी	चंदाजी पटवा	15	रेखाजी चण्डालिया	9
लाडबाई जिनेन्द्र बापना	21 जारी	पूजाजी बोहरा	13	कुसुमजी ओस्तवाल	9
सिम्पल जैन	21 जारी	सीमाजी पोखरना	11 जारी	ऋचाजी गेलड़ा-पुणे	9
कुंदनजी डूंगरपुरिया	21 जारी	अचिताजी खेमलीवाला	11 जारी	सहेल्याबाई पोखरणा	9
भंवरलालजी भाणावत	21 जारी	एकताजी खिंवसरा	11	मधुबालाजी जारोली	9
मुन्नीबाई छाजेड़	21	आयुषजी बोहरा	11	हेमलताजी मेहता	9
शशिजी कुलदीप ओस्तवाल	20 जारी	कल्पनाजी पोखरना	11	जतनजी पितलिया	9
अंजनाजी पोखरना	20 जारी	अंजनाजी अजय वया	11	शांतिदेवी सरूपरिया	9
लक्ष्मीजी नन्दावत	20 जारी	जीवनसिंहजी डूंगरपुरिया	11	करुणाजी सरूपरिया	9
आशाजी बाबेल	20 जारी	दिनेशजी डूंगरपुरिया	10	पतासीबाई लसोड़	9
चांदनीजी धींग	19 जारी	चंद्राजी डागा	9	प्रकाशजी मारू	9
प्रेमलताजी नाहर	18 जारी	शांतिलालजी मांडावत	9	दिनेशजी कंठालिया	9
दिलखुशजी बोकड़िया	15	भावनाजी वया	9	सीमाजी पोखरना	8
चंद्रकलाजी धींग	15	आकांक्षाजी पोखरना	9	हेमंतजी ओसवाल	8
पुष्पाजी मांडावत	15	सरोजजी चपलोत	9	हितेशजी जारोली	8

-महेश नाहटा

उपवास

परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री जवाहरलालजी म.सा.

- उपवास इन्द्रियों की रक्षा करने वाला है, धर्म-साधना का सबल साधन है। इन्द्रियों की चंचलता का निग्रह उपवास से ही होता है।
- इन्द्रियों को काबू में रखना बहुत कठिन है। महाशत्रु पर अधिकार करना सरल है, पर इन्द्रियों पर अधिकार करना कठिन है। उपवास ही इन्द्रियों पर अधिकार करने का सरल उपाय है।
- भोजन में भूल हुई नहीं कि कोई न कोई रोग आ धमकता है। उस रोग के प्रतिकार का सरल और सफल उपाय उपवास ही है। आपने उपवास किया और रोग छूमन्तर हुआ। अगर आपको कोई रोग नहीं है तो भी उपवास करने का अभ्यास लाभदायक है।
- उपवास करने से शरीर सूख जाता है, फिर भी शारीरिक शक्ति नष्ट नहीं होती। इसके विपरीत यदि उपवास विधिपूर्वक किया जाए और उपवास की समाप्ति के पश्चात् शीघ्र आहार की वृद्धि न की जाए तो केवल शरीर की कृशता ही दूर नहीं होगी अपितु शरीर के रोग भी समूल नष्ट हो जाएंगे।

क्र. स.	प्रत्याख्यान के नाम	आचार्य प्रवर के मुखारविन्द से प्रत्याख्यान ग्रहण करने वाले श्रावक-श्राविकाओं के नाम	
1.	आजीवन शीलव्रत	दिनेशजी आशाजी जैन-बजरिया, जीवनलालजी चंद्रकांताजी रांका, सरेशजी भानावत, मोहनलालजी जैन, नरेन्द्रजी संगीताजी जैन-वसई, सरलादेवी नौलखा-राउरकेला, राजेन्द्रजी राजकुमारीजी जैन, पन्नालालजी चौरडिया-बिलासपुर, मोहनलालजी सुंदरदेवी दफ्तरी-भीनासर, दशरथमलजी सुशीलाबाई बंबोरा-रतलाम, जेठमलजी मिन्नी-गंगाशहर, राजेशजी सुनीताजी कोठारी-बैंगलोर, लतादेवी पारख-भखारा, कुंतीदेवी गांधी-मंडी केशकाल, रमेशजी मीनाजी बाफना-अहमदाबाद	
2.	पोरसी	आजीवन पोरसी	भीखीबाई दुगड़
		151 पक्की पोरसी	मैनादेवी वया
		100 पक्की पोरसी	अंजनाजी पोखरणा, संगीतजी श्रीश्रीमाल-दुर्ग, सुचिताजी बैद-दिनहट्टा, विमलाजी खारीवाल
3.	बड़े स्नान का त्याग	आजीवन बड़े स्नान का त्याग	गंभीरजी सांखला-राजीम
		वर्ष में 321 दिन	पारसमलजी पितलिया-मोग्द
		वर्ष में 300 दिन	सुनीताजी रांका-बड़ीसादड़ी, संगीतजी श्रीश्रीमाल-दुर्ग, शकुंतलाजी बैद
		वर्ष में 250 दिन	चंपाजी डूंगरपुरिया
		वर्ष में 200 दिन	अंजनाजी पोखरणा, सोहनलालजी वया
		वर्ष में 150 दिन	राजेन्द्रजी मुरडिया-कानोड़, कमलेशजी पोरवाल-मंदसौर
4.	वर्ष में 100 दिन बड़े स्नान का त्याग	नीताजी सेठिया-जावरा, अमोलकजी सकलेचा, निर्मलाजी सेठिया-लुधियाना, जतनजी भूरा-दिल्ली, रश्मिजी सुराणा-अहमदाबाद, धनसुखजी जैन-पाली, सागरमलजी जैन-भदेसर, सुरेशजी बाफणा-खिरकिया, धर्मेशजी जगडावट-डबोक, सागरमलजी मांडावत, आशाजी देरासरिया, भीखीबाई दुगड़, पुष्पाजी सोनी, आजादजी पोखरणा, मधुजी नाहटा-नगरी, ज्योतिजी सुराणा-नंदुरबार, अंजूजी भूरा-चंडीगढ़, पद्माजी सांखला, ज्योतिजी मूथा, पुष्पाजी बुच्चा, संगीताजी कोठारी, सरलाजी चौरडिया, प्रमिलाजी कोठारी, आशाजी जावरिया	
5.	पक्की नवकारसी	आजीवन पक्की नवकारसी	कमलाबाई मारू
		300 पक्की नवकारसी	पुष्पाजी सोनी-निम्बाहेड़ा
		200 पक्की नवकारसी	सुनीताजी रांका-बड़ीसादड़ी, सुशीलाजी लोढ़ा-जयपुर, चंदनबालाजी सिसोदिया
6.	100 पक्की नवकारसी	वीणाजी ढाबरिया-रतलाम, उर्मिलाजी गोलछा, सुनीताजी डागा- गंगाशहर, दाखाबाई बोहरा, राजकुमारजी जैन-सीतामऊ, अमोलकजी सखलेचा, चुकीबाई पोखरणा, मैनाजी सेठिया-जावरा, साधनाजी चव्हाण, ऊषाजी चव्हाण, संगीताजी संचेती, मंजूजी विनायकिया, विजयजी चौरडिया-पुणे, चुकीबाई पोखरणा, सुरेशजी ओस्तवाल, स्नेहलताजी गांग, शशिकलाजी कोटडिया-शहादा, ममताजी आंचलिया-बेगूं, सीमाजी गढोलिया -चित्तौड़गढ़, मंजूजी सिंघवी-नोखा	
7.	आजीवन नवकारसी	सुशीला जी लोढ़ा	
8.	एकासन	एकासन का मासखमण	महेश नाहटा, मंजूलताजी गांग, शिल्पाजी मोगरा
		4 माह एकासन	जयाजी पोखरणा, पूजाजी मांडावत
		100 एकासन	कंचनजी बोहरा, निर्मलाजी सेठिया-लुधियाना, सागरमलजी कच्छारा- भदेसर, उन्नासबाई कावडिया-फत्तेहनगर, मिठालालजी बाघमार
		51 एकासन	ममताजी आंचलिया

		3 एकासन	विजयलक्ष्मीजी जैन
9.	संवर	151 संवर	मैनादेवी वया
		100 संवर	मन्नुबाई बरड़िया
10.	सामायिक	1000 सामायिक	चंदाजी खिवसरा, किरणजी सेठिया
		600 सामायिक	मीनाजी बोहरा
11.	चौविहार	आजीवन चौविहार	शंकुतलाजी बैद-हावड़ा
		चौविहार	सुशीलाजी कावड़िया
		100 दिन चौविहार	वीणाजी ढाबरिया-रतलाम
12.	पौषध	वर्ष में 100 पौषध	मन्नुबाई बरड़िया
		वर्ष में 50 पौषध	अंजनाजी पोखरणा-बेगूं
		25 पौषध	चंदनबालाजी सिसोदिया
13.	जीवन में 1 करोड़ गाथा का स्वाध्याय	अनिताजी सुराणा-चौपड़ा	
14	2 लाख गाथा का स्वाध्याय	चंचलजी पटवा-जावरा, अचिताजी खेमलीवाला	
15.	वर्ष में 1 लाख गाथा का स्वाध्याय	शौकिनजी मुणोत-नीमच, कंचनजी छल्लाणी-गंगाशहर, प्रभाजी भंसाली-कोलकाता, चंद्रजी खिवसर, स्नेहलताजी बूलिया-मुम्बई, प्रमिलाजी कर्नावट, तेजाबाई कांठेड़-नीमच, उज्ज्वलाजी बाफणा-खिरकिया, रेशमाबाई धींग, अनिताजी संकलेचा-खरियार रोड़, प्रेमलताजी पिरोदिया-रतलाम, वर्षाजी बरड़िया, ममताजी सांखला, ज्योतिजी बरड़िया, संतोषजी बरड़िया, सरोजजी बरड़िया	
16.	दो माह एकांतर	मंजुलाजी पोरवाल-मंदसौर, पुष्पाजी सोनी-निम्बाहेड़ा, शांतिबाई नलवाया	
17.	वर्ष में 50 उपवास	आशाजी बोथरा-दिल्ली,	
18.	100 आयंबिल	साधनाजी खेमलीवाला	
19.	रात्रिभोजन का त्याग	कांताजी इटोदिया, सुशीलाजी लोढ़ा-जयपुर, कन्हैयालालजी सिरोहिया-कपासन, सुनीलजी मेहता, आशीषजी गहलोत, यशवंतजी पगारिया	
20.	जमीकंद का त्याग	संजयजी, चित्राजी पारख-गोहाटी, लाडदेवी चंडालिया, कांताजी इटोदिया, सुशीलाजी लोढ़ा-जयपुर, कन्हैयालालजी सिरोहिया-कपासन, सुनीलजी मेहता, आशीषजी गहलोत, शांतिलालजी नलवाया-बड़ीसादड़ी, गुलाबजी मेहता, किरणजी नाहटा-नगरी	
21.	बियासन	10 वर्ष बियासन	अशोकजी सोगाणी-नंदुरबार
		100 बियासन	लक्ष्मीजी पितलिया-गंगाशहर, नगीनाजी पितलिया-गंगापुर,
		1 माह बियासन	लताजी श्रीश्रीमाल-दुर्ग
22	धोवन पानी	सागरमलजी कच्छारा	
23	सचित्त का त्याग	सुन्दरजी श्रीश्रीमाल-चित्तौड़गढ़	
24	क्रोध का त्याग (1 माह)	वीणाजी नाहर-ब्यावर	
25	11 द्रव्य की मर्यादा	रूपाजी चावत-चित्तौड़गढ़	

यदि आत्मा स्वस्थ है तो शरीर व मन भी स्वस्थ रहेंगे और इन पर नियंत्रण रहेगा। आत्मा की बात चलेगी तो प्रत्येक क्षेत्र में विजय प्राप्त होगी और जीवन मंगलमयता की ओर गतिमान होगा। स्वस्थ रहने का यही एक उपाय है, यह भली प्रकार से समझ लेने की आवश्यकता है। -परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलालजी म.सा.

मुमुक्षु बहिन सुश्री दिव्या पारख, बीकानेर (गंगाशहर)

नाम	:	मुमुक्षु बहिन सुश्री दिव्या पारख
जन्मस्थान	:	देशनोक (राज.)
जन्मतिथि	:	22 मई 1998
वर्तमान निवास	:	गंगाशहर, बीकानेर (राज.)
व्यावहारिक शिक्षा	:	बी.सी.ए.
धार्मिक ज्ञान	:	आगम- श्रीमद् उत्तराध्ययन सूत्र, श्रीमद् दशवैकालिक सूत्र, श्रीमद् नन्दीसूत्र (11वें अंग विवागसुयं तक), पुच्छिसु णं, उववाई सूत्र की 22 गाथाएं, स्तोत्र- भक्तामर, श्री कल्याण मंदिर; थोकड़ा- श्रीमद् प्रज्ञापनाजी भाग-1, तत्त्व का ताला भाग-1; कर्मग्रन्थ न्यू भाग 1 से 6 तक का अध्ययन, जैन सिद्धांत बत्तीसी, 33 आशातना, व्याकरण- लघु सिद्धांत कौमुदी का संधि-प्रकरणम्, पुल्लिंग प्रकरणम्, समास प्रकरणम्, रचनानुवाद कौमुदी, हेमचन्द्राचार्य प्राकृत व्याकरण प्रथम पाद; अन्य- तत्त्वार्थ सूत्र
विशेष	:	आरुग्गबोहिलाभं में अध्ययन
धार्मिक परीक्षा	:	जैन सिद्धांत भूषण, कोविद, विभाकर, मनीषी (भाग-1, 2, 4), पंचवर्षीय श्रुत आराधक, कर्मग्रन्थ न्यू भाग-1 से 6 तक, जैन आगम कंठस्थ- भूषण, कोविद, विभाकर, जैन सिद्धांत संस्कृत-प्राकृत- भूषण, कोविद, विभाकर
वैराग्यकाल	:	लगभग 5 वर्ष
तपाराधना	:	15 एवं 5 की तपस्या, 1 साल बियासना



पारिवारिक परिचय

परदादीजी-परदादाजी	:	स्व. श्रीमती सुवटीदेवी-स्व. श्री चाँदमलजी पारख
दादीजी-दादाजी	:	स्व. श्रीमती मुन्नीदेवी-स्व. श्री भँवरलालजी पारख
बड़ी मम्मी-पापा	:	श्रीमती प्रेमलतादेवी-शुभकरणजी, श्रीमती संतोषदेवी-सुशीलकुमारजी
माताजी-पिताजी	:	श्रीमती जयश्रीदेवी-हनुमानमलजी पारख
भुआजी-फूफाजी	:	श्रीमती जतनदेवी-मिश्रीलालजी कोचर
भाभीजी-भैया	:	श्रीमती ममतादेवी-महावीर प्रसादजी पारख, मुदित, पंकज, उत्तम पारख
बहिन-बहनोई	:	श्रीमती कुसुमदेवी-नितेशजी मरोटी, सुमन पारख
भतीजा	:	विक्रम भांजा : यश
परनानीजी-नानाजी	:	स्व. श्रीमती सोनीदेवी-स्व. रावतमलजी बुच्चा
बड़ी नानीजी-नानाजी	:	स्व. श्रीमती पानादेवी-स्व. पुनमचंदजी बुच्चा
नानीजी-नानाजी	:	स्व. श्रीमती पानादेवी-स्व. श्री पुनमचंदजी बुच्चा, स्व. श्रीमती भवरीदेवी-स्व. श्री आईदानजी बुच्चा
छोटी नानीजी-नानाजी	:	श्रीमती भंवरीदेवी-स्व. धूड़चंदजी बुच्चा
मामीजी-मामाजी	:	श्रीमती जयश्रीदेवी-माणकचंदजी, श्रीमती चंद्रादेवी-मोतीलालजी, श्रीमती मनीषादेवी-स्व. घेवरचंदजी, श्रीमती सरितादेवी-शांतिलालजी, उत्तमचंदजी, श्रीमती पिकीदेवी-महेंदकुमारजी बुच्चा

मुमुक्षु बहिन सुश्री कविता बुच्चा, देशनोक

नाम	: मुमुक्षु बहिन सुश्री कविता बुच्चा
जन्मस्थान	: देशनोक (राज.)
जन्मतिथि	: 27 अक्टूबर 1993
व्यावहारिक शिक्षा	: एम.कॉम. (ए.बी.एसटी.)
धार्मिक ज्ञान	: आगम- श्रीमद् दशवैकालिक सूत्र कंठस्थ, श्रीमद् सुखविपाक सूत्र कंठस्थ, श्रीमद् उत्तराध्ययन सूत्र 1-11) अध्ययन, पुच्छिसु णं, उववाई सूत्र की 22 गाथा; थोकडा- लघुदण्डक, गतागत, जीवधड़ा, कर्मग्रंथ भाग-1 से 3 एवं कुछ अन्य
विशेष	: आरुग्गबोहिलाभं में अध्ययन
धार्मिक परीक्षा	: जैन सिद्धांत भूषण, कोविद, विभाकर, मनीषी (भाग-2, 3, 4), श्रुत आराधक
वैराग्यकाल	: लगभग 5 वर्ष
तपाराधना	: एकान्तर तप लगभग 1 वर्ष, अठाई-2
दीक्षा प्रदाता	: आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलालजी म.सा.



पारिवारिक परिचय

परदादीजी-परदादाजी	: स्व. श्रीमती सोनीदेवी-स्व. रावतमलजी बुच्चा
बड़ी दादीजी-दादाजी	: स्व. श्रीमती पानादेवी-स्व. पुनमचंदजी बुच्चा
दादीजी-दादाजी	: स्व. श्रीमती झंवरीदेवी-स्व. आईदानजी बुच्चा
छोटी दादीजी-दादाजी	: श्रीमती भंवरीदेवी-स्व. श्री धूडचंदजी बुच्चा
बड़ी मम्मी-पापा	: श्रीमती जयश्रीदेवी-माणकचंदजी बुच्चा
माताजी-पिताजी	: श्रीमती चंद्रादेवी-मोतीलालजी बुच्चा
चाचाजी-चाचीजी	: श्रीमती मनीषादेवी-स्व. घेवरचंदजी, श्रीमती सरितादेवी-शांतिलालजी, उत्तमचंदजी, श्रीमती पिकीदेवी-महेंद्रकुमारजी बुच्चा
भुआजी-फूफाजी	: श्रीमती जतनदेवी-स्व. राजेन्द्रजी सुराणा, श्रीमती रतनदेवी-विजयकुमारजी सांड, श्रीमती दुगादेवी-लुणकरणजी सांड, श्रीमती चंद्रमुखी-दिलीपकुमारजी बोथरा, श्रीमती जयश्रीदेवी-हनुमानमलजी पारख
भाभीजी-भैया	: श्रीमती प्रियंकादेवी-लाभचंदजी बुच्चा, प्रदीपजी, हेमराजजी, मुकेशजी, आशीषजी, अरुणजी, लक्ष्यजी, अभिषेकजी,
बहिन-बहनोई	: श्रीमती सुमित्रादेवी-मोहनलालजी बोथरा, श्रीमती तारादेवी-कमलचंदजी भूरा, श्रीमती चंचलदेवी-पारसकुमारजी डागा, पूजा, बेला, गायत्री
भतीजे	: युवराज, आयुष
भांजा, भांजी	: दृष्टि, दीप्ति, सौम्या, भव्या, जीव्या, मनन, प्रियांशु, साक्षी
परनानीजी-नानाजी	: स्व. श्रीमती चम्पादेवी-स्व. केशरीचंदजी सांड
बड़ी नानीजी-नानाजी	: श्रीमती चंद्रादेवी-स्व. डालचंदजी सांड
नानीजी-नानाजी	: स्व. श्रीमती मनोहरीदेवी-स्व. सुमेरमलजी सांड
छोटी नानीजी-नानाजी	: स्व. श्रीमती आनंदीदेवी-स्व. कन्हैयालालजी सांड
मामीजी-मामाजी	: श्रीमती शशिकला-रूपकिशोरजी, भाई-अमित, श्रीमती पूर्णिमादेवी-नवरतनजी, श्रीमती संजूदेवी-लीलमकुमारजी, श्रीमती पुष्पादेवी-शिवकुमारजी सांड
मौसीजी-मौसाजी	: श्रीमती झंवरीदेवी-करणीदानजी लुणावत
परिवार से दीक्षित	: श्री मनीषमुनिजी म.सा. (संसारपक्षीय मौसेरे भाई) साध्वी श्री शाश्वतश्रीजी म.सा. (संसारपक्षीय मौसीजी)

मुमुक्षु बहिन श्रीमती विमलाजी भंडारी, भंडारा

नाम	: मुमुक्षु बहिन श्रीमती विमलाजी भंडारी
जन्मस्थान	: अमरावती (महा.)
जन्मतिथि	: 25 मई 1957
व्यावहारिक शिक्षा	: 10वीं
धार्मिक ज्ञान	: पुच्छिसु णं, उवववाई सूत्र 22 गाथा, दशवैकालिक सूत्र, श्रीमद् उत्तराध्ययन के 1-19 व 29वां अध्ययन, सुखविपाक सूत्र, थोकड़े- जैन सिद्धांत बत्तीसी, 33 बोल का थोकड़ा, लघुदण्डक, गति-आगति।
धार्मिक परीक्षा	: जैन संस्कार पाठ्यक्रम 1-7 तक, भूषण के 2 पेपर, श्रुत आराधक 1-5, 50 थोकड़े की परीक्षा
वैराग्यकाल	: लगभग 12 वर्ष
तपाराधना	: बेला 2, तेला 5, पचोला 2, अठाई 1, वर्षीतप 2 साल, एकासणा का एकान्तर 15 साल से, रात्रि चौविहार, जमीकंद का त्याग, सचित्त का लगभग 20 साल से त्याग



पारिवारिक परिचय

पति	: स्व. श्री स्वरूपचंदजी भंडारी
माता-पिता	: स्व. भंवरीबाई-स्व. इंदरचंदजी गाँधी-अमरावती
बड़ी माँ-बड़े पिताजी	: स्व. कमलाबाई-स्व. माँगीलालजी गाँधी-नागपुर
भाई-भाभी	: महेन्द्रकुमारजी-सौ. ऊषाबाई, प्रसन्नकुमारजी-स्व. पद्माबाई, स्व. शांतिलालजी-श्रीमती कमलेशजी, दिलीपजी-सौ. कल्पनाजी गाँधी-नागपुर
बहन-बहनोई	: श्रीमती शोभाजी-स्व. प्रकाशचंदजी भंडारी-डोंगरगढ़, सौ. सरलाजी-सुरेशजी मुथा-वणी
सास-ससुरजी	: स्व. पारसाबाई-स्व. धूलचंदजी भंडारी
नणद-नणदोई	: श्रीमती सुरजबाई-स्व. तिलोकचंदजी मुणोत-हिंणघाट, सौ. बसंतीबाई-अशोकजी कासवा-हिंणघाट
पुत्र-पुत्रवधू	: देवेन्द्रजी-प्रीतिजी, हेमंतजी-सरिताजी भंडारी
पौत्र-पौत्री	: ऋषभ, विनीत, खुशी, लब्धि भंडारी
पुत्री-दामाद	: सौ. हर्षा-विजयजी जालोरी-आकोला
दोहिता-दोहिती	: विवेक, काजल जालोरी

स्मृतिशेष साध्वी श्री सुअर्चाश्रीजी म.सा. : संक्षिप्त परिचय

सांसारिक नाम : श्रीमती अमरादेवी तातेड़ **जन्म तिथि** : आषाढ़ सुदी 1 वि.सं. 2002 दिनांक 10/07/1945

जन्मस्थल : देशनोक, बीकानेर (राज.) **दीक्षास्थल** : गंगाशहर-भीनासर, बीकानेर (राज.)

दीक्षा तिथि : आषाढ़ सुदी 2 वि.सं. 2069 दिनांक 21/06/2012

परिवार से दीक्षित : साध्वी श्री संस्कारश्रीजी म.सा. (संसारपक्षीय भाणजी), साध्वी श्री सुपरश्रीजी म.सा.

परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलालजी म.सा. की विशेष आज्ञा से

शासन दीपक श्री रमेशमुनिजी म.सा. के मुखारविन्द से दीक्षित

सांसारिक पारिवारिक परिचय

माता-पिता : श्रीमती भीखीदेवी-कल्याणमलजी भूरा

पति : स्व. श्री जेठमलजी तातेड़

पुत्री : श्रीमती जतनबाई सेठिया, श्रीमती विद्याबाई सुराणा

भाई : जयचन्दलालजी, निर्मलकुमारजी, अजयकुमारजी भूरा **बहिन** : श्रीमती सूरजबाई धाडेवा, श्रीमती इन्द्राबाई पारख

सांसारिकपता : श्री माणकचन्दजी प्रदीपजी सुराणा, डागा स्कूल के पास, नोखा रोड, पो. गंगाशहर, जि. बीकानेर (राज.)

साध्वी श्री सुअर्चाश्रीजी म.सा. का महाप्रयाण : श्रद्धाभिसिक्त भावांजलि अर्पित

25 जुलाई 2022, जावरा। परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलालजी म.सा. की आज्ञानुवर्तिनी महासती श्री सुअर्चाश्रीजी म.सा. का 25 जुलाई 2022 सोमवार को शुद्धभावों के साथ महाप्रयाण हो गया। आपका जन्म देशनोक के भूरा परिवार में 10 जुलाई 1945 को हुआ।

आपने आचार्य प्रवर श्री रामलालजी म.सा. की विशेष आज्ञा से शासन दीपक श्री रमेशमुनिजी म.सा. के मुखारविन्द से 21 जून 2012 को गंगाशहर-भीनासर में जैन भागवती दीक्षा अंगीकार की। आपने अपने 10 वर्ष के दीक्षा पर्याय में कई तपस्याएं की। आपने अपनी अस्वस्थता में भी धर्म एवं क्रिया के प्रति सजग रहकर साधुत्व की पालना की। अंतिम समय तक पूर्ण चेतना के साथ सभी कार्य किए। प्रातः 8:20 पर बात करते-करते अचानक ही महाप्रयाण हो गया।

साध्वीश्रीजी की अन्तिम यात्रा सायं 4 बजे नगर के प्रमुख मार्गों से होती हुई आनंदी हनुमान शांतिवन पहुंची, जहां सांसारिक परिजनों ने मुखाग्नि दी। शांतिवन में ही श्रद्धांजलि सभा का आयोजन किया गया, जिसमें समता युवा संघ के राष्ट्रीय अध्यक्षजी, श्री साधुमार्गी जैन संघ-रतलाम, निम्बाहेड़ा, जावरा के अध्यक्षजी, श्री दिवाकर संघ के मंत्रीजी, वरिष्ठ संघ अध्यक्षजी सहित अनेक वक्ताओं ने विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित की।

महेशजी नाहटा ने महासतीजी के जीवन चरित्र पर प्रकाश डालते हुए उनके द्वारा किए गए अनुकरणीय कार्यों को अपने जीवन में आत्मसात करने की प्रेरणा दी। आभार पूर्व अध्यक्षजी ने व्यक्त किया।

26 जुलाई। महासती श्री सुअर्चाश्रीजी म.सा. के महाप्रयाण पर समता भवन, जवाहर पथ में आयोजित गुणानुवाद सभा में शासन दीपिका महासती श्री मनोरमाश्रीजी म.सा. ने फरमाया कि स्मृतिशेष महासतीजी सौम्य, शांत तथा सरलता की प्रतिमूर्ति थे। मैंने उनको कभी भी क्रोध करते हुए नहीं देखा। साध्वी श्री सरोजबालाश्रीजी म.सा., साध्वी श्री सुविरागश्रीजी म.सा., साध्वी श्री सुविराजश्रीजी म.सा. साध्वी श्री सुमुक्तिश्रीजी म.सा. ने भी अपने श्रद्धासुमन दिवंगत साध्वीवर्या को अर्पित करते हुए उनके गुणों को अपने जीवन में उतारने की प्रेरणा दी।

सभा को समता युवा संघ के राष्ट्रीय अध्यक्षजी, संघ अध्यक्षजी, संघ के पूर्व अध्यक्षजी सहित अनेक वक्ताओं ने अपनी विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित की। पूर्व अध्यक्षजी ने महासतीजी की अस्वस्थता के दौरान सेवा करने वाले सभी डॉक्टरों, नर्स तथा संघ के सदस्यों की सेवा भावना के लिए साधुवाद देते हुए आभार व्यक्त किया।

-पुखराज पटवा



CONTRIBUTING TOWARDS THE CANCER TREATMENT



PATIENT ROOM

RK Sipani and Daga Family donated a 390 bed charitable hospital for the poor and needy at KIDWAI Memorial Institute of Oncology.



RECEPTION HALL WITH PARENTS' PHOTO

The block was inaugurated by Shri Kumaraswamy, the honourable Chief Minister of Karnataka on 22nd Dec 2018.

We look forward to contributing to a better world with our upcoming charitable ventures.

RK Sipani Foundation

#439, 18th Main, 6th Block, Koramangala, Bangalore - 560 095
Contact: Prakash: 9448733298, Sipani Office: 08041158525 | Email: sipanigrand@gmail.com

संघ से संबंधित विभिन्न जानकारियां

प्रकाशक	
श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ	
प्रधान कार्यालय	
समता भवन, आचार्य श्री नानेश मार्ग, नोखा रोड, गंगाशहर, बीकानेर-334401 (राज.) फोन : 0151-2270261 helpdesk@sadhumargi.com अध्यक्ष एवं प्रधान संपादक	
गौतम चन्द्र जैन, मुम्बई	
सह संपादिका	
श्रीमती मोनिका जय ओस्तवाल, ब्यावर	
श्रमणोपासक सदस्यता	
आजीवन (अर्द्ध मूल्य) (केवल भारत में)	500/-
(विदेश हेतु)	10,000/-
वार्षिक (केवल भारत में)	60/-
(विदेश हेतु)	1,000/-
वाचनालय वार्षिक (केवल भारत में)	50/-
प्रस्तुत अंक मूल्य	10/-
संघ सदस्यता	
साधारण सदस्यता	500/-
आजीवन सदस्यता	5,000/-
साहित्य सदस्यता	
15 वर्ष (केवल भारत में)	3,000/-
संघ केन्द्रीय कार्यालय के विभिन्न विभागों से कार्य सम्पादन हेतु सम्पर्क करें :- E-mail : ho@sadhumargi.com	

बैंक खाता विवरण

Shree Akhil Bharatvarshiya Sadhumargi Jain Sangh, Bikaner

State Bank of India

Account No. : 31264126681

IFSC Code : SBIN0003401

Branch : G.S. ROAD, Bikaner

Mob. : 7073311108

E-mail : accounts@sadhumargi.com

SCAN & PAY



व्हाट्सएप्प और ई-मेल आईडी

श्रमणोपासक समाचार : 8955682153	} news@sadhumargi.com
श्रमणोपासक : 9799061990	
साहित्य : 8209090748	: publications@sadhumargi.com
महिला समिति : 7231033008	: ms@sadhumargi.com
समता युवा संघ : 7073238777	: yuva@sadhumargi.com
धार्मिक परीक्षा : 7231933008	} examboard@sadhumargi.com
कर्म सिद्धान्त : 7976519363	
परिवारांजलि : 7231933008	: anjali@sadhumargi.com
विहार : 8505053113	: vihar@sadhumargi.com
पाठशाला : 9982990507	: Pathshala@sadhumargi.com
शिविर : 7231833008	: udaipur@sadhumargi.com
ग्लोबल कार्ड अपडेशन : 6265311663	: globalcard@sadhumargi.com

:- सूचना :-

निवेदन है कि किसी भी कार्य के लिए सम्बंधित विभाग से ही सम्पर्क करें।

इससे आपका कार्य सुगम और त्वरित गति से हो सकेगा।

कार्यालय समय- प्रातः 10.00 से सायं 6.30 बजे तक

लंच- दोपहर 1.00 से 1.45 बजे तक

आवश्यक सूचना

सभी संघ सदस्यों से निवेदन है कि कृपया कोई भी नकद भुगतान (Cash Payment) श्री संघ के किसी भी सदस्य, कार्यालय अधिकारी को किसी भी प्रवृत्ति में करें तो केन्द्रीय कार्यालय के लेखा विभाग (Accounts Department) को सूचना जरूर दें।

इससे आपको पक्की रसीद शीघ्र ही भिजवाई जा सकेगी।

मो.न. 7073311108 पर व्हाट्सएप्प करें।

जय गुरु नाना

जय महावीर

जय गुरु राम

YOUR TRUST

RAKSHA ^R PIPES

OUR GUARANTEE

INDIA'S MOST TRUSTED BRAND



Sri Shantilal, Sanjay, Ajay & Tushar Shand
SHAND GROUP OF INDUSTRIES

No. 52, 7th Cross, Wilson Garden, Bengaluru - 560027.INDIA

Phone: +91-80-22235726, 22271902, 22225734.

Fax: +91-80-22234779. E-mail: mkt@shandgroup.com



Diamond
Dureflex



Diamond
DUROLON

Now with new
M.R.O.
Technology
Resists High Impact



IS 15778 : 2007



CM/L NO : 2526149



LUCALOR
FRANCE



FIRST TIME IN INDIA

ISI FITTINGS WITH ADVANCED
CO-MOULDED DURO RING SEAL

www.shandgroup.com

रक्षा जीवन भर की सुरक्षा

www.rakshapipes.com

रचनाकारों अथवा लेखकके विचारों से संपादक की सहमति होना अनिवार्य नहीं है। किसी भी विवाद की स्थिति में न्याय क्षेत्र बीकानेर ही रहेगा।
प्रधान सम्पादक, प्रकाशक, मुद्रक गौतम चन्द जैन के लिए जैन आर्ट प्रेस, बीकानेर के लिए भण्डारी ऑफसेट, जोधपुर (राज.) में मुद्रित प्रतियाँ 24900

प्रेषक : श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ

समता भवन, आचार्य श्री नानेश मार्ग, नोखा रोड, गंगाशहर, बीकानेर - 334401 (राज.), फोन नं. 0151-2270261